GOVERNMENT OF INDIA
NATIONAL LIBRARY, CALCUTTA

Class No. H
Book No. 891·433 V268
N. L. 38
MGIPC—S1—19 LNL/62—27-3-63—100,000

ओंकार पुस्तकमाला की चतुर्थ पुस्तक

शान्ता

लेखक

पं० ओंकारनाथ वाजपेयी

All Rights Reserved.

प्रकाशक

ओंकारप्रेस प्रयाग

—:o:—

द्वितीय बार २०००] सन् १९१३ [मूल्य ॥)

H
891·433
V268

DELISTED

पंडित काशीनाथ वाजपेयी के प्रबन्ध से ओंकार प्रेस,
प्रयाग में मुद्रित।

NATIONAL LIBRARY
2252
15.12.61
CALCUTTA

दशा तो बड़ी शोचनीय हो रही है उनका दुःख तो सिवाय उनके और ईश्वर के और कौन जान सकता है।

हमारे शिवदत्त जी भी अपनी प्रजा की रक्षा में जीजान से लगे थे। बागियों के दल के दल इनके ग्राम को लूटने के लिये आरहे थे परन्तु इनकी बुद्धि और चतुराई से वे इनका तथा इनकी प्रजा का बालतक बांका न कर सके। एक बार एक करोरासिंह नामक बागी (लुटेरा) ३०० बागियों को लेकर टिड्डी दल के समान इनके गांव पर आ टूटा, जब वह इनसे मिला इन्होंने उसका आदर सत्कार किया क्योंकि इनके पास इतने आदमी नहीं थे जो ये करोरासिंह का सामना कर सकते। वह इनके गांव में एक नामी बनिये को जिसका नाम रामदास था लूटने के लिये आया था क्योंकि रामदास बड़ा धनी था, उस का नाम बहुत दूर दूर तक प्रसिद्ध था। करोरासिंह ने इनसे कहा कि मैं गांव में सिवाय रामदास के और किसी को नहीं लूटूंगा। आप न घबराइये आपके यहां मेरे पिता कुछ दिन नौकरी कर गये हैं इससे मेरे पिता और मैंने आपका नमक खाया है। इसपर इन्होंने उत्तर दिया अच्छा यदि ऐसा है तो आप हमारे मिहमान हैं। पहले तो आप स्नान और भोजन करलें तब संध्या समय उसे लूट लीजियेगा। क्योंकि अभी वह घर पर भी नहीं है आज ग्वालियर से आने वाला है।

यह कहकर नौकरों को बुलाकर आज्ञा दी कि अभी जाकर मन भर घी, चार मन आटा और तरकारी आदि लाओ और ठाकुर साहब तथा इनके आदमियों के लिये पूरी कचौड़ी तैय्यार करदो; क्योंकि ये बिचारे भूखे होंगे। इतना कहकर आप घ गये और २० आदमियों को बुलाकर आज्ञा दी कि तुम जा आधमील पर झूठी बन्दूकों की बाढ़ दागते हुये गांवकी ओर आओऔर एक दूसरे आदमी से कहा कि तुम जब बाढ़ सुनो तब जल्दी भागते हुये आकर हमसे जब हम करोरासिंह के संगबैठे हों तब यह कहना कि पंडित जी अंगरेज़ी पल्टन बागियों के पकड़ने के लिये आ रही है।

इस प्रकार उनको आज्ञा देकर आप फिर करोरासिंह के पास आकर उससे बातचीत करने लगे। भोजन भी उसका तैय्यार हो रहा था। ये बातचीत करही रहे थे कि इतने में एक ओर से बंदूकों की बाढ़ सुनाई दी जिसे सुन करोरासिंह चौकन्ना हुआ। उसी अवसर में एक आदमी भागता हुआ आ और बोला महाराज अंगरेज़ी पल्टन आरही है। यह सुनतेह करोरासिंह और उसके सब साथी घोड़ों पर सवार होक पश्चिम की ओर भागे। जब ये लोग भाग गये तब पं० शिवद जीने एक गाड़ी में पूड़ी और तरकारी आदि रखकर उस स्थ में भिजवादी जहां करोरासिंह के ठहरने का पता लगा था। करोरासिंह और उसके आदमी बहुत भूखे थे, पूड़ियां पा

हे प्रसन्न हुये और बोले पं० शिवदत्त जी से कह देना कि अब हम कभी उनके गांव में लूटने के इरादे से न आवेंगे। इस प्रकार पंडित जी ने अपनी चतुराई से रामदास बनिये और ... लोगों को भी लुटेरों से बचा दिया।

जब राष्ट्रविप्लव (ग़दर) शान्त हो गया और ब्रिटिश रूपी प्रचंड सूर्य फिर शत्रुओं के मेघ मंडल को विदीर्ण कर अपने पूर्ण प्रताप से चमकने लगा उस समय पं० शिवदत्त जी के शत्रुओं ने मौक़ा पाकर सरकार में अर्ज़ीदी कि ग़दर के समय पंडितजी भी शत्रुदल में सम्मिलित थे। करोरा सिंह की जो इन्होंने सहायता की थी वह भी प्रगट करदी। यद्यपि जैसी सहायता इन्होंने की थी वह पाठकों पर प्रगट है। उन्होंने तो राज नीति के अनुसार अपनी प्रजा की रक्षा के हेतु केवल शत्रु को हटाने में साम और दाम का व्यवहार किया था परन्तु इनके शत्रुओं ने उसे सरकार में दूसरी तरह से प्रगट किया। पंडित जीने कई अङ्गरेज़ अफ़सरों को भी बचाया था। उन्होंने इनको ख़ैरख़्वाही की चिट्ठियां भी दी थीं परन्तु इन्होंने उन चिट्ठियों को साधारण समझ कर रद्दी में फेंक दिया था। पं शिवदत्त जी सीधे बड़े थे छल, छिद्र और कपट तो इनके लवलेश मात्र भी न था। वे इन बातों को न समझते थे कि कभी उन चिट्ठियों को अपनी ख़ैरख़्वाही प्रमाण में कचहरी में पेश करना पड़ैगा। जब इनसे पूछा

गया कि तुम शत्रुओं को सहायता देने के विरुद्ध क्या प्रमाण रखते हो तो ये बोले कि हमने कई अंगरेज अफ़सरों की ग़दर के समय रक्षा की है परन्तु पंडित जी अभाग्यवश कोई प्रमाण पत्र पेश न कर सके और जब ये किसी प्रकार का सबूत न दे सके, तब इनका सारा इलाक़ा सरकार में जप्त होगया।

दूसरा अध्याय

पण्डित शिवदत्त के अब सुदिन बीत गये और दुर्दिन आये, जो इनके मित्र थे वे शत्रु बन गये। सत्य है विपत्ति में कोई किसी का नहीं होता अपने भी बिराने हो जाते हैं। ऐसे समय पर सारा संसार मतलब का ही दिखाने लगता है, इसके प्रमाण में कविवर गिरिधरदास जी की स्त्री ने क्या ही अच्छा कहा है:—

"साईं या संसार में मतलब को ब्योहार।
जब लग पैसा गांठि है तब लग यार हज़ार।
तब लग यार हज़ार यार संगहि मिलि डोलें।
जब पैसा नहिं गांठ यार मुखहू नहि बोलें।
कह गिरधर कविराय जगत का याही लेखा।
बिन मतलब बिन गरज़ यार कोई बिरला देखा"।

जब तक लोगों का काम इन से निकलता था तब तक इनके द्वार पर बड़ी भीड़ रहती थी। हर समय इनका बैठका मनुष्यों से भरा ही रहता था। आज कोई इनके पास फटकता तक नही ऐसे अवसर पर एक संस्कृत कवि ने भी क्या ही अच्छा कहा है;:—

वृक्षं क्षीणफलं त्यजन्ति विहगाः
शुष्कं सरः सारसाः ।
निर्द्रव्यं पुरुषं त्यजन्ति गणिकाः
भ्रष्टं नृपं मंत्रिणः ॥
पुष्पं पर्युषितं त्यजन्ति मधुपाः
दग्धं बनान्तं मृगाः ।
सर्वं कार्यवशाज्जनोभिरमते
तत्कस्य कोवल्लभः ॥

अर्थः—जो वृक्ष सूख जाते हैं अथवा जिनमें फल नहीं लगते उनको पक्षी छोड़ देते हैं और जो तालाब सूख जाता है उसे सारस छोड़ देते हैं। जिस पुरुष के धन नहीं रहता ऐसे मनुष्य को वेश्यायें छोड़ देती हैं और जो राजा श्री भ्रष्ट हो जाता है उसे मंत्री लोग त्याग देते हैं। जो फूल कुम्हलाय जाता है उसे भौंरे छोड़ देते हैं और जो जंगल जल जाता है उसे मृग छोड़ देते हैं। अतः जब मतलब ही से एक दूसरे का सम्बन्ध है तो कहो कौन किसका प्रेमी है?

गुसाईं तुलसीदास ने भी कहा है :—

सुर नर मुनि की यही रीती, स्वारथ लागि करैं सब प्रीती।

हा ! काल की भी क्या करालगति है जिनके द्वार पर कभी काठियावारी घोड़े हिन हिनाते थे उनके द्वार पर आज कुत्ता तक नहीं बैठता । जिनके यहां सन्ध्या को सकड़ों मनुष्यों की अथाई लगती थी आज उनका द्वार स्मशानवत होरहा है। जिनसे मिलने के लिये दूर दूर से आये हुये मनुष्य पीली पगड़ी बांधे हुये द्वारपालोंसे पंडितजीके मिलने का समय पूछतेथेआज वेही पंडितजी सामान्य मनुष्यों की संगति के लिये तरस रहे हैं। बने हुये समय में जो इनके मित्र थे वे इन्हें आज देख मुंह फेर कर चले जाते हैं। ज़मीदारों की तो बात ही क्या है। साधारण किसान तक अब इनसे नहीं मिलते। जो कमीन पण्डित जी को दूर से देख प्रणाम करते थे और कदाचित ये जिस मार्ग से होकर निकलते थे वहां कोई नीच बैठा होता तो, इन्हें देख कर खड़ा हो जाता था परन्तु आज वे ही लोग इन्हें आते देख न ता प्रणाम करते और न चारपाई से उठते हैं। थोड़े ही दिनों में समय के फेर ने क्या २ खेल दिखला दिया।

बाहर तो इनकी यह दशा थी और घर में यह हाल था कि धीरे २ जो कुछ थ वह बेच कर खा गये। यहां तक कि स्त्री के गहने में लग्गा लगने लगा, तब कुछ थोड़े दिन तो यों व्यतीत किये। पश्चात दूसरे ज़मीदार के खेत जोतने लगे जिससे इनका निर्वाह होने लगा। जब कभी ये अपनी दीन दशा को देख दुःखी हो जाते तब इनकी स्त्री जिसका नाम कल्याणी था

इनको समझाती और कहती कि आप क्यों इतने दुखी होते हैं जो कुछ ईश्वर ने किया वह अच्छा ही किया है क्योंकि शास्त्रों में लिखा है कि जीवों के हाथ में तो केवल कर्म है फल तो परमेश्वर के हाथ में है। हम लोग अपनी इच्छानुसार फलों को नहीं भोग सकते। जब हमारे हाथ में अपनी इच्छानुसार फल का भोगना है ही नहीं, केवल कर्म ही करना है तो हम लोग कर्म में क्यों न लग जावें; क्यों कि जैसा हम कर्म करेंगे वैसा ही फल मिलेगा। इसलिये जो अपने हाथ में है उसी को करना चाहिये। यदि परमेश्वर ने हमारे कर्मों के अनुसार हम को विपत्ति में छोड़ा है तो हम आनन्द पूर्वक दुख को सहते हुए अपने कर्म करते जावें। आप अब उसी अवस्था में प्रसन्न रहें जिसमें परमेश्वर ने रख छोड़ा है। कर्तव्यों का पालन करना मनुष्य को अत्यावश्यक है दुःख सुख तो वास्तविक कुंआर की छाईं के समान है कभी आता और कभी जाता रहता है और यह प्रकृति का नियम भी है कि दुःख के बाद सुख और सुख के बाद दुःख होता है। क्या महाराज युधिष्ठिर का हाल भूलगये जो महाराज पांडु के पुत्र होते हुए भी जंगलों में मारे २ घूमते थे उन विचारों को कहीं २ तो जल तक न मिलता, कंद मूल फल से ही अपनी भूख मिटाते थे। पहले राज्य का सुख भोग चुके थे उसके बाद उनको बनवास का कठिन दुःख भी सहना पड़ा। फिर उनको। इस

असह्य दुःखके बाद चक्रवर्ती राज्य मिला। इस प्रकार महाभारत में सैकड़ों मिसालें ऐसी हैं जिनको दुःख सुख बराबर सहनेपड़े हैं यदि दुःख न होता तो सुख का मज़ा ही जाता रहता क्योंकि दुख के बादही तो सुखका स्वाद मिलता है। जो बराबर मीठा ही मीठा खाया करता है उसे भला मीठे का क्या स्वाद मिलेगा परन्तु जिसने कड़आ भी चीखा है वह निसन्देह मीठे का स्वाद जानता है। जिसे भूख लगीही नहीं उसके सामने यदि मोहन भोग आदि का भोजन रख दो तो वह कदापि ऐसे २ उत्तम पदार्थों के पाने पर भी अपनी इच्छा न प्रगट करेगा। परन्तु जब खूब कड़ाके की भूख लगी हो उस समय यदि मोहन भोग आजाय तो फिर उस चीखने वाले से पूछो कि उसका स्वाद कैसा है?

इसी प्रकार दुःख सुख का हाल है। जिसने दुःख अनुभव किया ही नहीं वह भला सुख का हाल क्या जाने। यह प्रकृति का नियम है कि विरुद्ध गुण वाली वस्तुओं के मिलान के बिना किसी वस्तु का ठीक २ अनुभव (तजरुबा) नहीं होता। इसी प्रकार हम लोगों की दशा है। परमात्मा ने कुछ तो समझ कर हम लोगों को इस अवस्था में छोड़ा है। हम लोगों ने अभी तक दुःख नहीं देखा था अब दुःख का अनुभव करके इस दशा का भी स्वाद लेलेंगे। यदि ये मानी धनी लोग थोड़े दिनों के लिये कंगाल बना दिये जांय तो अवश्य दूसरों

का दुःख समझने लगें और फिर संसार में सुख ही सुख फैल जाय सो हे प्राण वल्लभ ! आप इस दशा के लिये कुछ भी सोच न कीजिये किन्तु इस दुःख को आनन्द पूर्वक काटिये।

इस प्रकार स्त्री के उपदेश भरे बचनों को सुन कर उनके चित्त में धैर्य बंधा और कहने लगे। प्यारी ! ये तेरे कोमल शिक्षा पूर्ण वचन इस समय मेरे घायल चित्त में मलहम का काम कर गये, जो हो मैं अब तेरी ही सलाह को मान कर कार्य में लगता हूं।

इस समय कल्याणी के ५ महीने का गर्भ था ईश्वर की कृपा से ९ महीने पूरे होने पर एक कन्या उत्पन्न हुई जिसका नाम शान्ता रक्खा गया। इस कन्या पर शिवदत्त और और उनकी धर्म पत्नी दोहों ही बड़ा स्नेह रखते थे। चन्द्रमा की कला के समान धीरे २ कन्या बढ़ने लगी।

जिस समय उसकी अवस्था ७ वर्ष की हुई उस समय इनके पड़ोस में एक पण्डित चन्द्रचूड़ वाजपेयी आ बसे यद्यपि ये महाशय इसी ग्राम के निवासी थे परन्तु १२ वर्ष की अवस्था से ये परदेश में ही रहे क्योंकि पहिले तो ये काशी में कुछ दिनों संस्कृत का पठन करते रहे उसके बाद बम्बई आदि देशों में भ्रमण किया जिसमें उनको गुजराती, मरहठी और बंगला आदि कई भाषाओंका बोध होगया। वे विद्या पढ़ना सर्वोत्तम समझते थे, उनको अंगरेजी भाषा का भी भली प्रकार ज्ञान

होगया था। परन्तु वे सब भाषाओं से हिन्दी भाषा को उत्तम समझते थे क्योंकि उनका यह विचार था कि जितनी भाषायें भारत में बोली जाती हैं उन सबमें हिन्दी ही के जानने वाले अधिक हैं इसलिये सारे भारत में हिन्दी भाषा ही का प्रचार होना अच्छा है क्यौंकि दूसरी भाषाओं में जो पुस्तकें बनाई जाती हैं सारे भारत के लिये उपयोगी नहीं हैं यदि केवल हिन्दी ही में किताबें बनाई जांय तो दूसरी भाषाओं से हिन्दी में अनुवाद करने का परिश्रम मिट जाय; क्योंकि भारतके विद्वान् कई भाषाओं में बंटे हैं और अपनी २ भाषा के साहित्य की उन्नति करते जा रहे हैं जो सारे भारतवर्ष के लिये लाभकारी नहीं है। यदि वे सब मिलकर हिन्दी ही की उन्नति करते तो क्या ही अच्छा होता।

अंगरेज़ी भाषा का साहित्य संसार में क्यों चढ़ा बढ़ा है। इसका कारण यह है कि इन्गलैंड और अमरीका आदि देश केवल एक अंगरेज़ी भाषा ही की पूर्ति में लगे हैं। जिस मातृभाषा के करोड़ों सपूत उसकी सेवा करने में लगे हों उसके भाग्य का कहना ही क्या है।

इसलिये हमारे पं० चन्द्रचूड़ जी भी हिन्दी में अच्छा परिश्रम करते थे वे अपनी कन्या को जिसका नाम विद्यावती था ख़ूब पढ़ाया करते थे। उन्होंने उसे गणित, भूगोल और इतिहास आदि भी भलीप्रकार पढ़ाये थे, संस्कृत में भी हितोपदेश आदि छोटे २ सब ग्रन्थ पढ़ा डाले थे।

कन्या संस्कृत में बात चीत भी करलेती थी। पड़ोस में रहने के कारण शान्ता और विद्यावती में बड़ा प्रेम होगया। शान्ता पहले तो विद्यावती से पढ़ लेती थी फिर थोड़े दिन पश्चात् विद्यावती के पढ़ते समय पं० चन्द्रचूड़ जी के पास बैठ जाती थी। इस प्रकार उसकी विद्या में अधिक रुचि देख पंडित जी बड़े प्रसन्न हुये और उसकी तीक्ष्ण बुद्धि देख उसको पढ़ाने में भी अधिक परिश्रम करने लगे। वह थोड़े दिनों में ही विद्यावती से भी पठन में बढ़ गई क्योंकि वह घर जाकर अपने पाठ पढ़ने में बड़ा परिश्रम करती थी। पंडित जी उसे अपनी पुत्री से भी अधिक चाहने लगे क्योंकि गुरू का स्नेह उसी शिष्य पर अधिक होता है जो पढ़ने में अधिक परिश्रम करता है, चाहे गुरू का पुत्र ही क्यों नहो यदि वह पढ़ने में कम मन लगाता है तो गुरू उससे स्नेह नहीं करता और कोई नीच वंश में भी उत्पन्न हुआ शिष्य क्यों नहो यदि पढ़ने में अधिक मन लगाता है तो उसे गुरू अधिक प्यार करता है।

इस प्रकार शान्ता को पंडित जी ख़ूब मन लगा कर पढ़ाने लगे। थोड़े ही दिनों में उसे संस्कृत में भी अधिक अभ्यास होगया। शान्ता बहुधा पंडित जी से संस्कृत ही में ही बात चीत करती थी।

उसने रामायण महाभारत आदि ग्रन्थ संस्कृत में देखडाले और हिन्दी भाषा में तो ऐसी पंडिता होगई थी कि कदाचित

हिन्दी कवियों में कोई विरला ही कवि बचा होगा जिसके ग्रन्थ उसने न पढ़ डाले हों। पंडित जी वैद्यक भी अच्छी जानते थे इसलिये उन्होंने इन कन्याओं को वैद्यक की भी भली प्रकार शिक्षा दी थी। धातृ-शिक्षा और मातृ-शिक्षा आदि पुस्तकों को भी वह अच्छी तरह पढ़ गई।

इस समय विद्यावती की तो अवस्था १४ वर्ष की थी और शान्ता की १३ की परन्तु शान्ता, विद्या और बुद्धि में विद्यावती से अधिक बढ़ गई थी। बहुधा पंडित जी जब आराम करते तो शान्ता उनको पुस्तकें पढ़ कर सुनाया करती थी। बाजपेयीजी की धर्म्म-पत्नी का नाम कमला था वह उन दोनों को कपड़े आदि काटना और सीना पिरोना सिखाया करती थी। वह नाना प्रकार के बेल बूटे और क़सीदा आदि काढ़ना जानती थी क्योंकि उसने बड़े २ नगरों में रहते हुए सुईकारी के सब काम भली प्रकार सीख लिए थे। रसोई बनाने में कमला बड़ी ही चतुर थी यहां तक कि हज़ार स्त्रियों में एक ही थी। स्वभाव भी उसका बड़ा ही उत्तम था, वह शान्ता को अपनी पुत्री से कम नहीं चाहती थी। जो कुछ वह जानती थी उसे उन कन्याओं के बताने में कभी सङ्कोच नहीं करती थी बरन वह उत्तेजित शब्दों में उनको उत्साह दिया करती थी। कमला पढ़ने में भी बड़ी विदुषी थी, गूढ़ से गूढ़ विषयों को तुरन्त समझ लेती थी।

इन कन्याओं ने ऐसे गुरुओं से शिक्षा पाई थी जो सर्व गुण सम्पन्न और विद्यादान में सदा तत्पर रहते थे।

तीसरा अध्याय ।

सुमेर के कुटी काटने का कटकट शब्द कान में पड़ रहा है, तुलसा काछिन की चक्की घुरघुर शब्द से मानों उसके गीत के संग स्वर दे रही है। कभी २ मुरगे की भी कुकरूंकूं की बांग तुलसा की चक्की की ध्वनि से ऊपर सुनाई दे जाती है। कुएं पर गगरा रखने का शब्द खट से कान में पड़ा कि तुलसिया काछिन की चक्की और उसका गीत गाना बन्द होगया। अहा ! पूर्व की ओर से धर्मपाल चौधरी अपने सरल ग्रामीण भाव में कवि कुल-तिलक सूरदास जी के भक्तिमय पद को "मैय्या मैं तो चन्द्र खिलौना लैहों" भैरवी के राग में कैसी अच्छी तरह गा रहे हैं। कहीं हार को जाने वाले बैलों के गले में बंधी हुई घंघरू सुनाई देती है। कहीं कोयल की कुहूकुहू मनमोहे लेती है, वृक्षों पर बैठे हुये पक्षिगण भगवान भुवनभास्कर की अवाई का सन्देसा दे रहे हैं। अहा ! चारों ओर कैसा कलरव मच रहा है मानों प्रकृति के ये दूत संसारी जनों को जगा कर कर्तव्य के लिये चितावनी दे रहे हैं परन्तु मूढ़ जन घोर निद्रा में पड़े फुसकियां छोड़ रहे हैं। कर्तव्य परायण पुरुष सजग हो अपने अपने कामों में लगते जाते हैं। पं० चन्द्रचूड़ जी भी उठे किन्तु कमला उनसे कुछ पहले ही उठ बैठी थी वह

जलदी से एक लोटे में जल लाई ये प्रातःकाल की आवश्यकीय नित्य क्रियाओं से निपट कर छत पर जा बिछे हुए आसन पर स्वस्थ चित्त हो बैठ गये। अहा! पूर्व्वकी ओर आकाश में पिलाई दृष्ट पड़ने लगी धीरे २ वह लालिमा में परणित हो गई। इस प्रकृति की शोभा को देखकर पं० चन्द्र चूड़का हृदय उछलने लगा और प्रेम से आंखें मूंद लीं फिर संध्या में मग्न होगये। मंत्रों और अर्थों का विचार कर परमात्मा के गुणों का स्मरण करते हुए स्तुति करने लगे—हृदय में एक विचित्र लहर उठती है और शान्त होजाती है, मारे प्रेम के आंखों से प्रेमाश्रु बह चले अब इस समय निर्भय और निशंक हो अबोध बालक के समान परमात्मा की गोद में बैठे हुये आनन्द में मस्त हो रहे हैं। इस आनन्द के सामने त्रैलोक्य की सुख सामिग्री भी तुच्छ है। धन्य हैं वे प्राणी जो इस सच्चे सुख को अनुभव करते हैं इन्हीं लोगों के हृदय समुद्रवत होते हैं जिसमें नाना प्रकार के रत्न भरे रहते हैं जो गोता लगाते ही हाथ आजाते हैं। इन्हीं लोगों के चित्त बड़े उदार होते हैं जो सारे संसार के प्राणियों में भ्रातृ भाव रखते हैं किसी से स्वप्न में भी बैर नहीं करते दीन से दीन मनुष्य के भी दुःख में शामिल होजाते हैं। ध्यानसे आखें खोलकर सामने रक्खे हुए ताम्रके हवन कुंडमें वे शान्ता कमला और विद्यावती के साथ हवन करने लगे क्योंकि ये दोनों संध्या पहलेही कर चुकी थीं।

तत्पश्चात् उपनिषद लेकर पण्डित जी स्वाध्याय करने लगे। अब शान्ता भी अपनी नित्य क्रिया से छुट्टी पा विद्यावती के साथ पंडितजी के पास पाठ पढ़ने आई। जब पंडित जी दोनों को पाठ पढ़ा चुके तब वे कमला, शान्ता और विद्यावती से बोले; तुम लोग प्राचीन काल की कथाओं को भली भांति जान गई हो यदि दुपहर को टोला की स्त्रियों को बुला कर कुछ कथायें कहती हुई उपदेश दिया करो तो बहुत अच्छा होगा। क्योंकि उत्तम २ उपदेशों से दूसरी स्त्रियों पर बड़ा प्रभाव पड़ेगा। इस पर तीनों राज़ी हो गईं, किन्तु विद्यावती इतनी शरमीली थी कि वह किसी के सामने बोलने तक में शरमाती थी और पंडित चन्द्रचूड़ जी की स्त्री कमला को प्रायः घर के कामों से फुरसत कम मिलती थी। इसलिये कथा कहने का भार शान्ताही को सौंपा गया क्योंकि वह बड़ी चतुर और बोलने में तेज़ थी उसकी बोली भी बड़ी माधुरी और रसीली थी और इसकी वर्णन करने की शक्ति भी विचित्र थी। परन्तु ऐसा स्थान जहां बहुत सी स्त्रियां इकट्ठी हो सकें सिवाय पंडित शिवदत्त जी की हवेली के और कहीं नहीं था और हवेली भी चन्द्रचूड़ जी के पड़ोस में ही थी। यह सलाह जो हो चुकी थी पंडित शिवदत्त जी से कही गई। वे सुनकर बड़े प्रसन्नहुये और बोले अब सिवाय घर देने के और हम कुछ सहायता करने ही के लायक नहीं रहे नहीं तो यहां पाठशाला स्थापन करा देते। यदि ईश्वर हमारे दिन कभी फिर

फेरे तो हम अवश्य एक कन्या पाठशाला खोल देंगे। परन्तु हमारे अब दिन फिरना असम्भव हैं। इतना सुन कर पंडित चन्द्रचूड़ जी बोले। पंडित जी! यदि आपकी इच्छा है तो अवश्य पूरी होगी क्योंकि शास्त्र में लिखा है।

यन्मनसा ध्यायति तद्वाचा वदति तद्वाचा वदति तत्कर्मणा करोति यत्कर्मणा करोति तदभिसंपद्यते।

अर्थात् जैसा मनुष्य विचार करता है वैसा ही कहता है जैसा कहता है वैसा ही कर्म करता है और जैसा कर्म करता है उसी के अनुसार उसे फल प्राप्त होता है

सो यदि आपका विचार प्रबल है तो अवश्य ईश्वर सहायता करेंगे इस पर पंडित शिवदत्त जी ठंडी सांस ले कर बोले ऐसे सुदिन अब हमारे आना कठिन हैं। तब बाजपेईजी फिर बोले परमेश्वर की बड़ी शक्ति है क्षण में तो राई को पर्वत और क्षण में ही पर्वत को राई कर देता है क्या महाराजा सत्य हरिश्चन्द्र को नहीं जानते कि उनको क्षण में ही चक्रवर्ती राज से उतार कर डोम की नौकरी करवाई और फिर ऐसी हीन दशा से स्वर्ग तक प्राप्त करा दिया। इसलिये ईश्वर की शक्ति पर भरोसा कीजिये।

इतना कहकर सारे टोला में ख़बर भेजदी कि कल से पंडित शिवदत्तजी के घरपर स्त्रियों के लिये कथा हुआ करेगी

संध्या के समय पं० चन्द्रचूण जी के घर पर अथाई लगती थी उस समय वहां गांव के अच्छे २ लोग आकर पंडित जी के पास बैठते थे क्योंकि गाँव में सिवाय पण्डित जी के और कोई ऐसा विद्वान नहीं था जिसके पास बैठकर लोग ज्ञान प्राप्त कर सकें। ये नाना देशों के इतिहास और रोचक वृत्तान्त बता २ कर लोगों को प्रसन्न कर दिया करते थे इससे लोग और भी इनके पास आकर बैठते थे।

जब संध्या को सब लोग अपने २ खेतों से फुरसत पाकर आये तब पंडित जी ने उनलोगों से कहा कि तुम लोग हमारे पास बैठकर नाना प्रकार की कथा सुनकर अपने ज्ञान को बढ़ाते हो परन्तु अपनी स्त्रियों को क्या बिलकुल मूर्ख ही रक्खोगे। मैंने भली प्रकार विचार कर देखा है कि जब तक स्त्रियां ज्ञानवती न होंगी तब तक किसी प्रकार भी हम लोग उन्नति नहीं कर सकते क्योंकि शास्त्र में स्त्रियोंके पढ़ाने पर बड़ा ज़ोर दिया है। जब तक स्त्रियां विदुषी (पढी लिखी) न होंगी तब तक इस देशका किसी प्रकार सुधार नहीं होसकता क्योंकि लिखा है हर मनुष्य के तीन गुरू होते हैं पहिली गुरू तो माता ही होती है और यदि माता जब भली प्रकार पढ़ी लिखी न होगी तो लड़कों का शुद्ध शुद्ध बोलना और अच्छे गुणों का सीखना कदापि नहीं हो सकता क्योंकि हमने देखा है बालकों को तोतले २ शब्द बोल कर मूर्ख मातायें उन्हें

HIN000002252HIN

तोतला बना देती हैं जो पढ़ने के समय कठिनता से सुधरता है बालकों से जीभ तोड़ कर बोलना बड़ा हानिकारक है उनको शुद्ध शुद्ध उच्चारण करना सिखाना चाहियें। बहुधा हम देखते हैं कि माता जब लड़कों को ज़बरदस्ती सुलाना चाहती है तब कहती है "हउआ आया बच्चा सोजा नहीं तो वह तुझे पकड़ ले जायगा" इस प्रकार छोटे बच्चे बचपन ही से डरपोंक हो जाते हैं और वे फिर जन्म भर कायर ही बने रहते हैं क्योंकि संस्कार जो छोटे में कच्चे हृदय पर डाल दिये गये वे जन्म भर फिर मिटाये नही मिटते जैसे किसी छोटे वृक्ष की छाल पर एक छोटा निशान चाकू का कर दो तो वह निशान जब पेड़ बड़ा हो जाता है तब तक मिटता नहीं किन्तु और भी बड़ा हो जाता है।

इसलिये छोटी अवस्था में बच्चों के पालने आदि में बड़ी सावधानी रखनी चाहिये क्योंकि बच्चों का पालन करना कुछ सहल काम नहीं है। यह शिशुपालन शिक्षा बिना पढ़े लिखे नहीं जानी जा सकी। इसलिये तुम सब लोग अपनी २ पुत्रियों, बहिनों स्त्री तथा माता आदि को कलसे पं० शिवदत्त जो के यहां कथा सुनने को भेज दिया करो, वहां शान्ता उनको प्राचीन कालकी स्त्रियों के जीवन चरित्र और उत्तम २ कथायें सुनाया करेगी मैंने सब ठीक २ प्रबन्ध कर दिया है। समय भी दुपहर का रक्खा है जिसमें घर का सब काम करके

सुभीते में स्त्रियां उपदेश सुनने जाया करें। इतना कहकर वह इतिहास कहने लगे जो दूसरे दिनका अधूड़ा पड़ा था।

सब किसानों ने अपने २ घर में जाकर कह दिया कि तुम लोग पं० शिवदत्तजी के यहां जाकर दुपहर को कथा सुन आया करो। वे लोग सुनकर बड़ी प्रसन्न हुईं दूसरे दिन दुपहर में टोले की बहुत सी स्त्रियां पं० शिवदत्तजी की हवेली में आकर बैठ गईं। उत्तर की ओर एक ऊंची जगह पर शान्ता पुस्तकें लेकर बैठी। सब स्त्रियां कौतुक से उसकी ओर देखने लगीं कि वह किस प्रकार इतनी स्त्रियों के सामने बोलेगी! यह कैसे इतनी पढ़गई! और क्या स्त्रियां भी पढ़ सक्ती हैं! क्या यह इन सबके सामने बोलने में शर्मायगी नहीं! इस प्रकार उनके मनमें नाना प्रकार के भाव उत्पन्न हो रहे थे। बूढ़ी स्त्रियां पं० शिवदत्त जी के अच्छे दिनों का विचार कररही थीं, कि आज ईश्वर ने इनको कैसा बनाकर बिगाड़ दिया है। बहुत सी स्त्रियां उनके घर की बनावट की ओर ध्यान दे रही थीं, कि कैसा विशाल भवन बना है। पं० शिवदत्त जी की स्त्री कल्याणी जी सब स्त्रियों का स्वागत कर कर बैठाल रही थीं।

अब शान्ता बोली माताओ तथा बहिनो! अब मैं ईश्वर की विनय करके आपकी सेवा में प्राचीन काल की कुछ कथायें सुनाऊंगी जिनको आशा है कि आप ध्यान से सुन कर अपने भी जीवन सुधारने की चेष्टा करेंगीं। पहले तो आप मेरी

विनय को जो मैं ईश्वर की करती हूं नेत्र मूद कर सुनिये।

विनय

ओ३म् विश्वानि देव सवितर्दुरितानि परासुव यद्भद्रं तन्न आसुव ॥ १ ॥

ओ३म् य आत्मदा बलदा यस्य विश्व उपासते प्रशिषं यस्य देवाः यस्यच्छाया मृतं यस्य मृत्युः कस्मै देवाय हविषा विधेम ॥ २ ॥

ओ३म् अग्ने नय सुपथा राये अस्मान् विश्वानि देव वयुनानि विद्वान्। युयोध्यस्मज्जुहराणमेनो भूइष्ठान्ते नम उक्तिं विधेम् ॥ ३ ॥

हे दयामय पिता! आज हम सब आपकी पुत्रियां आपकी शरण आकर आपसे प्रार्थना करती हैं कि हमको सुमति दीजिये। हमलोग विदुषी (पढ़ी लिखी) बनकर उत्तम आचार विचार सीखें। नम्रता, सुशीलता और मधुर वचन हमारा भूषण होवे। हम सब अपने माता पिता और बड़ों की आज्ञा मानती हुई सुमार्ग पर चलें। हम लोग अपनी सन्तानों को सुशिक्षित बनावें

जिससे संसार का कल्याण हो। हम लोग गृहस्थी रूपी गाड़ी के पहिये बनकर संसार यात्राको आनन्द पूर्व्वक समाप्तकरें। हे पिता! हम लोगों में जो दोष आपड़े हैं उन सबको निर्मूल कर दीजिये। हम लोग भी अपनी प्राचीन पूज्य माताओं के समान अपने को सुधारती हुई अपने पुत्र और पुत्रियों को उत्तम विद्या से आभूषित कर आदर्श योग्य देव और देवियां बनावें। हे नाथ! हम लोगों की दशा अब बहुत कुछ गिरगई है हम लोग अत्यन्त हीनअवस्था को पहुंच गई हैं, हमारी अन्य देश निवासनी बहिनें भी हमको हंस रही है अब तो फिर अपनी महान् कृपासे जिसके आप भंडार हैं हम दुखियों को उठाइये। पिता जी! क्या हम अपनी पूज्यनीया, गार्गी, मैत्रेयि और अरुन्धती सी माताओं की वंशजा कहलाने के योग्य रह गईं! जब हम अपनी इन प्रशंसनीया माताओं की विमल कीर्ति और उत्तम चरित्रों को सुनतीं हैं तब हम लोगों के अश्रुपात होने लगते हैं कि हाय! क्या हम इन्हीं देवियों के वंशमें उत्पन्न हुई हैं, क्या हममें अब भी इनका रक्तविन्दु शेष है! तब कभी२ तो यह शंका उत्पन्न होती है कि नहीं हमलोग इन परम प्रशंसनीया माताओं के गोत्र में कदापि उत्पन्न नहीं हुईं यदि हम इन परमधार्मिका और सर्व गुण सम्पन्ना माताओं की सन्तानें होतीं तो कभी भी ऐसे दुश्चरित्र हमारे न होते और न हम उनकी विमल कीर्ति पर कालिमा लगातीं। आज हमारा

घर कलह और झगड़ों का धाम बन गया है जिससे हम नित्यप्रति नाना प्रकार के संकटों की ग्रास बनती हैं पिता जी। हमारे अज्ञान का नाश करके ज्ञान का प्रकाश दीजिये। आपके सिवाय संसार में कोई हमको सहारा देने वाला नहीं सूझता हे करुणानिधान! आप हमारी विनय पर ध्यान देकर हमारी प्रार्थना को स्वीकार कीजिये।

इस प्रकार विनय करके जब उसने अपनी आंख खोली तो देखती क्या है कि सारा दालान स्त्रियों से भर गया है। बोली माताओ तथा बहिनों! आज मैं आपको चक्रवर्ती राजा सत्य हरिश्चन्द्र जी तथा उनकी धर्मपत्नी महारानी शैव्या की कथा सुनाती हूं जिसे सुनकर आप लोग यह जानेंगी कि सत्य के पालन करने में यद्यपि राजा हरिश्चन्द्र को कठिन से कठिन दुःख सहने पड़े किन्तु उन्होंने सत्य को न छोड़ा।

सत्य हरिश्चन्द्र की कथा

सतयुग में हरिश्चन्द्र नामक एक चक्रवर्ती राजा होगये हैं। वे बड़े सत्यवादी और दानी थे। एक बार विश्वामित्र ने उनकी परीक्षा लेने के लिये उनको आकर जांचा। राजा ने उनको सारा राज्य दान दे दिया परन्तु विश्वामित्र ने अन्त में दान की दक्षिणा सहस्र सुवर्ण मुद्रा (सोने

की असर्फ़ी) मांगी परन्तु अब विचारे के पास कुछ नहीं रह गया केवल महाराणी और पुत्र रोहिताश्व पर उनका अधिकार बाक़ी था सब धन तो दान ही में दे दिया था अब दक्षिणा के लिये कहां से आता। वे बड़े सोच में पड़े अन्त में अपनी स्त्री को एक ब्राह्मण के यहां गहने रख दिया तिस पर भी पूरी दक्षिणा न मिली। विश्वामित्र तो परीक्षा लेने के लिये आये थे वे अपनी दक्षिणा मांगने में कड़ाई करने लगे। राजा विचारे सैकड़ों उपाय सोचते हैं परन्तु कोई उपाय विचार में नहीं आता था अंत में काशी नगरी में जब उनको ऐसा कोई धनपात्र न सूझा कि जिससे उनका काम निकलता तब वे विचारे एक श्वपच नाम चाण्डाल के यहां गये जो बड़ा धनी था। उससे जाकर उन्होंने कहा कि मुझे एक सहस्र सुवर्ण मुद्रा चाहिये। इन रुपियों के बदले में मैं तुम्हारी सेवा करूंगा। तब श्वपच बोला, हमारा काम बड़ा कठिन और नीच है तुमसे यह काम न हो सकेगा। तब राजा ने उत्तर दिया "मैं तुम्हारा जो काम कहोगे वही करूंगा परन्तु एक हजार असर्फी दे दो"। तब वह बोला तुमको हमारे स्मशान की चौकी देनी पड़ेगी, चाहे रात हो चाहे दिन हर समय वह तुमको उपस्थित रहना पड़ेगा और किसी के मुर्दे को बिना कर लिये न जलाने देना यही हमारी नीच नौकरी है। सो तुमसे होना बड़ा कठिन है क्योंकि तुम सुख में पले हो राजभोग भोगते रहे इस लिये यह नीच नौकरी करना तुम्हारे लिये बड़ा कठिन होगा और चक्रवर्ती राजा होकर हमारी

नीच नौकरी तुमसे कैसे हो सकेगी? यह सुनकर राजा बोले मैं सब प्रकार की सेवा करलूंगा परन्तु रुपया दे दो । इन्होंने विश्वामित्र जी को सुवर्ण मुद्रा दे दिये जिनको पाकर विश्वामित्र जी प्रसन्न होकर घर चले गये । राजा उसी दिन से डोम के यहां नौकरी करने लगे । रात और दिन स्मशान की चौकी देनी पड़ती थी, इन विचारों की तो यह दशा थी उधर इनकी स्त्री महाराणी शैव्या अपने पुत्र को लेकर ब्राह्मण की टहल करती थी जहां उसे बहुत से कष्ट सहने पड़ते थे क्योंकि नौकरी में तो नाना प्रकार के वाक्य कुवाक्य सभी सहने पड़ते हैं। एक दिन ब्राह्मण देवता को पूजाकेफूललाने के लिये राजपुत्र रोहिताश्व बाग में गया वहां दैव संयोग से उसे काले सर्प ने काट खाया। बालकों से ख़बर पाकर उसकी माता विचारी रोती पीटती आ कर देखती है तो उसे निर्जीव पाती है । अब उसके शोक का क्या ठिकाना था । केवल एक ही पुत्र था जिसके चन्द्र मुख को देखकर वह अपनी अवस्था भूल जाती थी । परन्तु आज विधाता ने वह सहारे की लकड़ी भी छीनली । वह नाना प्रकार के विलाप करती हुई छाती पीट २ रो रही थी कि "हा परमात्मन्! न जाने किस जन्म के पाप का यह फल उदय हुआ कि प्राण प्यारे पति से तो वियोग हो ही गया था जिसका दुसह दुःख हृदय को हर समय संताप दिया करता था परन्तु प्यारे पुत्रके चन्द्र मुखको देखकर अपने चित्त को बहला लेती थी। हाय! विधाता वह भी तुझसे न देखा गया। मेरे जीवन

ज्योतिको सर्वदाके लिये बुता दिया। हाय ! क्या इस वज्र का प्रहार मुझ अबलाही पर करना था। आपतो करुणानिधान हैं न जाने हमारी बेर आप क्यों निठुर होगये हैं।" इस प्रकार जब वह बिलाप कर चुकी तब उस मरे पुत्रको रात्रिके समय स्मशान घाट पर अँतक्रिया करने लेगई। वहां पर भी वह रो २ कर अपनी व्यथा प्रगट कररही थी कि राजा हरिश्चन्द्र के कानमें ये शब्द पड़े ज्योंही आकर देखते हैं तो रानी को "हा रोहिताश्व ! हा रोहिताश्व" चिल्लाते हुये पाते हैं जब अग्नि संस्कार करने के लिये रानी जाती है उस समय राजा कहता है। बिना कर (महसूल) दिये दग्ध क्रिया नहीं करने पावोगी। तब वह कहने लगी। हे राजन् ! यह आपकाही रोहिताश्व पुत्र है जो आज सर्प दंशसे मृत्युको प्राप्त हो गया। राजा हरिश्चन्द्र बोले मैं तो अब चांडाल का दास हूं मैं तो स्वामीकी आज्ञापर खड़ा हूं मैं क्या करूं। जो कुछ मुझे आज्ञा मिली है उसे अवश्य पालूंगा। बिना कर दिये तुम दग्ध क्रिया न करने पावोगी। यह सुन कर रानी रोने लगी और कर के स्थान पर रानी अपना चीर उतार कर देने लगी इतने ही में विश्वामित्र आ उपस्थित हुये और बोले बस राजन् परीक्षा हो चुकी ! तेरा सत्य पालन प्रशंसनीय है। जब तक संसार में सूर्य्य चन्द्र और पृथ्वी रहेगी तब तक तेरा नाम स्थिर रहेगा। धन्य है राजा तेरे धैर्य्य और सत्य को ! यही कहकर उस सर्प दंशित बालक को औषधि से तुरंत जिलाय दिया और उस श्वपच से राजा को मुक्त करवा दियां।

प्यारी माताओ तथा बहिनों ! देखिये राजा हरिश्चन्द्र के सत्य व्रत को। उनका राज्य, स्त्री और पुत्र आदि सर्वस्व बिक गया किन्तु उन्होंने सत्य न छोड़ा। लाखों राजा इस संसार में आये और चले गये जिनका नाम तक बाक़ी नहीं है किन्तु हरिश्चन्द्र की सत्य के कारण आज तक संसार में विमल कीर्ति फैल रही है और जब तक सूर्य चन्द्र और पृथ्वी इस जगत में बने रहेंगे तब तक उनकी कीर्ति कौमुदी चारों ओर छिटकी रहेगी। हम लोगों को भी महारानी शैव्यां के चरित्रों से उपदेश लेना चाहिये कि पति के ऊपर दुःख पड़ने पर उसने कैसे २ दुःख सहे किन्तु अधीर न हुई।

इस प्रकार शान्ता नित्य प्रति एक नई कथा कहकर स्त्रियों को प्रसन्न करती थी। सारे टोले की स्त्रियां कथाको बड़े चाव से सुनती थीं और मानती थीं कि किसी प्रकार रात्रि बीते सबेरा हो और हम घरका सब काम करके दसही बजे पं० शिवदत्तजी के घर कथा सुनने जावें। जब स्त्रियां कथा सुनकर घर लौटतीं और रात्रि को जब सब लोग खेती बारी के काम से फुरसत पाकर घर आते तब वे सब कथायें अपने पुत्रों और पतियों को सुनाती थीं जो सुनकर बड़े प्रसन्न होते थे और सब शान्ता की बड़ाई करते थे। बहुत सी स्त्रियों ने तो पढ़ना शुरू कर दिया, थोड़े दिनों में पुस्तकें पढ़ने लगीं यहां तक कि टोले में थोड़ी सी बूढ़ी स्त्रियां बच गई थीं जिन्होंने नहीं पढ़ा था शेष सब भली प्रकार पढ़ने लगी थीं। पं० शिवदत्त जी का घर एक प्रकार का स्त्री-पाठशाला बनगया था।

चौथा अध्याय।

अब पं० चन्द्रचूड़ बाजपेयी की पुत्री विद्यावती की अवस्था १६ वर्ष की होने आई। इनको अब उसके लिये बर खोजने की फ़िकिर पड़ी। पंडित जी को बाल बिवाह की चाल पसंद नहीं थी क्योंकि वे जानते थे कि बाल बिवाह से बड़े २ अनर्थ होते हैं। बालक थोड़ी ही अवस्था से वीर्य्य हीन होकर किसी न किसी रोग का ग्रास बन जाता है और फिर बाल बिवाह से संतानें भी बलिष्ठ नहीं होतीं। महाराज मनुजी ने धर्म्म शास्त्र में से कम कम १६ वर्ष की कन्या के लिये और २५ वर्ष के पुरुष के लिये बिवाह का समय बतलाया है। यही बात सुश्रुत में भी जो वैद्यक विद्या का सब से प्रधान पुस्तक माना जाता है लिखी है कि छोटी अवस्था में जो बिवाह होता है उससे संतान ही नहीं होती यदि होती है तो जीती नहीं और जो जीती भी है तो फिर दुर्बलेन्द्रिय हो सदा रोग में ग्रसित होकर काल ही का ग्रास बनी रहती है। यह समझते हुए उन्होंने अभी तक विद्यावती का बिवाह नहीं किया था। पं० चन्द्रचूड़ जी बर की खोज में निकले सौभाग्यवश एक ही सप्ताह में विद्यावती के लिये एक उत्तम बर मिल गया जिसकी अवस्था २५ वर्ष की थी। बर पढ़ालिखा

चतुर था, घर भी धन धान्य से भरा पूरा था। बर का परिवार भी बड़ा था इस प्रकार बर खोज कर पंडितजी ने विद्यावती का बिवाह बड़ी धूम धाम से कर दिया।

पं० शिवदत्त जी को भी अब अपनी कन्या शान्ता की चिन्ता पड़ी क्योंकि इसकी भी अवस्था अब १५ वर्ष की समाप्त होने आई थी। जब इसकी सहेली विद्यावती का बिवाह हो गया तब शान्ता की माता भी चिन्ता सागर में डूबने लगी कि किसी प्रकार वर मिल जावे और शान्ता का बिवाह करदूं। पंडित शिवदत्तजी निर्धन थे इस लिये इनको वर खोजने में बड़ा परिश्रम करना पड़ा क्योंकि बिना धन की सहायता के देश बिदेश कैसे जाना हो सक्ता है दूसरे दायजे की अमानुषी पृथा भी निर्धनों को कन्या बिवाहने के लिये कोढ़ में खाज का काम करती है। न जाने ये बुरी चालें जिनमें आज भारत फंस रहा है कब दूर होंगी। कान्यकुब्जों में बहुत से घर तो ऐसे हैं जिनमें तीस २ या चालीस २ वर्ष की कन्यायें कुंआरी बैठी हैं। जो हो इस बुरी रीति को हर भारतवासी का धर्म है कि वह इसे जड़ से उखाड़ दे। इस प्रकार विचारें शिवदत्तजी ने साल भर तक बर की खोज की तब थक कर एक गांव में जो चन्दनपुर से २३ कोस पर था बिवाह निश्चय कर लिया। इनके समधी का नाम पं० गौरीशंकर था वे बड़े सज्जन और उत्तम स्वभाव के पुरुष थे यद्यपि उनकी वृत्ति पुरोहिताई थी परन्तु वे थोड़ी खेती भी कर लेते थे जिससे घर गृहस्थी का निर्वाह भली

प्रकार होता जाता था। उनके दो पुत्र और एक कन्या थी बड़े पुत्र का नाम दयाशंकर और छोटे का नाम कृपाशंकर था। कन्या का नाम सुलोचनी था। दयाशंकर जिसकी अवस्था २५ की थी पुरोहिताई वृत्ति से बड़ी घृणा करते थे और खेती वारी में उनका मन नहीं लगता था इसलिये वे आगरे में जाकर एक वकील के यहां चपरासी का काम करने लगे। कृपाशंकर जिसकी अवस्था १२ वर्ष की थी गांव में लड़कों के साथ खेलता तथा खेती का काम देख आया करता था। सुलोचनी की वयस १० वर्ष की थी वह बड़ी सुशीला और अपनी माता के समान मधुर-भाषिनी थी। जब शान्ता का बिवाह पक्का होगया। शिवदत्तजी के यहां बिवाह की तय्यारी होने लगी जितने लोग टोला के थे वे सब इस समय आ २ कर शिवदत्तजी को बिवाह में सहायता देने लगे। आनन्द पूर्व्वक बिवाह समाप्त हुआ।

आज शान्ता की बिदा का दिन है लोग इधर उधर उदास घूम रहे हैं जिधर देखो उदासी छाई है शनैः २ टोला की स्त्रियों का आना शुरू हुआ। शान्ता की माता कल्याणी आंखों में आंसू भरे हुए लोगों को काम बतला रही है। लोगों के पैर जो कल काम करने में जल्दी २ चल रहे थे आज भारी होगये हैं। पड़ोस की स्त्रियां आज शान्ता की बिदा देखने आई हैं। छोटी कन्यायें जिन पर वह विशेष कृपा रखती थी आंखों में आंसू भरे हुये सुसक रही हैं। माता शान्ता को समझा रही है कि बेटी! मैं तुझे क्या समझाऊं तू तो सब प्रकार से चतुर और

सुजान है जिस प्रकार तू यहां मेरी आज्ञा मानती थी उसी प्रकार सास ससुर आदि की सेवा करता हुई अपनी पति की सर्वदा प्रेम पात्री बनी रहना। माता समझाय ही रही थी कि पं० चन्द्रचूड़ वाजपेयी की स्त्री कमला आई जिसको उठकर शान्ताने प्रणाम किया तब वह बाली बेटी! तू सौभाग्यवती और पुत्रवती हो और पति के चरणों में ही में तेरा ध्यान रहे! फिर समझाने लगी बेटी शान्ता! तू सर्वदा उस उपदेश को अपने ध्यान में रखना जो महाराणी सीता को अत्रि मुनि की स्त्री अनुसुइया ने दिया था। तू अपनी सास की सेवा अपनी माताही के समान करना, श्वसुर का सर्वदा मान करती हुई कभी उनकी आज्ञा उलंघन न करना पति की सेवा में सवदा रत रहती हुई उसे प्रसन्न रखना। ननद तुझसे कभी अप्रसन्न न होने पावे जैसे तू यहाँ सब को हर्षित रखती है उसी प्रकार ससुराल वालों को भी प्रसन्न रखना यों कह कर रूमाल से अपने अश्रु जल पोंछने लगी। शान्ता भी रुके हुये कंठ से बोली, माता जी! मैं सदा आपकी आज्ञा को शिरोधार्य्य करूंगी। इतने में पिता शिवदत्त तथा वाजपेयी जी आये और बोले समय अधिक हो गया मार्ग बहुत चलना है बिदा में जल्दी करो, फिर वे भी शान्ता को समझाने लगे। नेत्रों से यद्यपि चाहते थे जल न निकले परन्तु आंसू गिरही पड़ते थे। पालकी द्वार पर आ गई सब स्त्रियां शांता को लेकर द्वार की ओर चलीं इस समय

पत्थर का हृदय भी अश्रुपात करता था। कन्या की विदा होते समय योगियों तक को मोह आजाता है। यद्यपि राजा जनक विदेह थे परन्तु सीताजी का विदा के समय वे भी व्याकुल हो गये थे सत्य है जिसको परमात्मा कन्यारत्न देता है उसे एक न एक दिन अवश्य उसके विदा होने का दुख भी देखनाही पड़ता है। इस प्रकार शान्ता आखों में आंसू भरे सबको प्रणाम कर पालकी में बैठ गई। पं० शिवदत्त तथा वाजपेई जी लग भग एक मील के गांव के बाहर तक पहुंचाने गये फिर शान्ता को समझा बुझा कर घर लौट गये जिस घर में कल चहल पहल मची थी आज सुनसान जान पड़ता है चारों ओर उदासी छाई है आज वह चन्द्रमुख जिसकी कौमुदी सारे घर को प्रकाशित कर रही थी छिप गया है। शान्ता की माता भी पलंग पर उदास पड़ा है किसी को भोजन की भी परवाह नहीं है। पं० शिवदत्त जी भी अपना चित्त बहलाने के लिये वाजपेयी जी के यहां चले गये। टोला को स्त्रियां अब अपने २ घर में शान्ता को बातें कररही हैं कि पं० शिवदत्त जी के समधी पं० गौरीशंकर के तो भाग्य खुल गये जिनके घर में शान्ता सी बहू गई है न जाने शान्ता की सास ने पूर्व जन्म में कैसे सुकर्म किये होंगे जिसका फल उनको इस जन्म में प्राप्त हुआ धन्य है उस पति को जिसकी शान्ता जैसी विदुषी और सुलक्षणा पत्नी मिले इस प्रकार सब स्त्रियां आपस में बात चीत करती थीं।

पाठको ! अब शान्ता की ससुराल में चल कर देखिये कि वह वहां कैसे व्यवहार करती है क्योंकि आज वह नये मनुष्यों में गई है जो न उसके स्वभाव को जानते और न वह उनके स्वभावों को जानती है। वह नये फंसे हुये पक्षी के समान ससुराल-रूपी पिंजरे में आ फंसी है। यद्यपि यहां पर और भी स्त्रियां हैं परन्तु वे समय, स्थान और एक दूसरे के स्वभाव से भली प्रकार परिचित हो चुकी हैं।

ससुराल में जब शान्ता का डोला पहुंचा इसकी सास और बिरादारी तथा टोले की स्त्रियां अपने यहां की रीति के अनुसार उतार कर उसे घर में ले गईं और एक बिछे हुये गलीचे पर उसे बैठने के लिए कहा। शान्ता उन सब स्त्रियों को प्रणाम करके बैठ गई। थोड़ी देर में शान्ता की ननद जो भौजाई को देख आज आनन्द के मारे फूली नहीं समाती थी गिलास में शरबत बना कर लाई और शान्ता को पीने के लिये दिया परन्तु शान्ता ने लज्जावश शिर हिला कर न पीने का इशारा किया इस पर वह न मानी और ज़बरदस्ती उसे शरबत पिला ही दिया। सब स्त्रियां उसके रूप-लावण्य को देख दङ्ग हो गईं। कुछ स्त्रियां शान्ता से जब कुछ पूछती थीं तब वह उत्तर देने योग्य प्रश्नों का तो उत्तर बड़े मधुर और विनीत बचनों में दे देती थी। और जो प्रश्न केवल उससे हंसी करने के लिये किये जाते थे उनके जवाब में वह मुसकरा कर सिर नीचा कर लेती थी।

वह शान्ता जो ६ दिन पहले चन्दनपुर में अपने पिता शिवदत्त के घर में सैकड़ों स्त्रियों के बीच में बैठी पण्डिता बनी प्राचीन काल के महात्माओं की कथा सुना रही थी आज वह लज्जा-वश मुख नीचा किये हुए कुछ स्त्रियों के बीच में चुपचाप बैठी है।

इस प्रकार जब दो दिन बीत गये तब वह एक दिन हाथ जोड़कर अपनी सास से बोली माता जी! अब आप मुझे यहां के व्यवहार और सब काम बता दें तो मैं उसीके अनुसार आपकी सेवा करूंगी। तब सास बोली। बहू! कुछ दिन और सुस्ताले फिर तो सब काम तुझ ही को करना पड़ेगा। मैं तो केवल मेहमान के समान तेरे घर में बसूंगी शान्ता बोली माताजी! आपको काम करतो देख मुझको लज्जा आती है आज मुझे कृपा करके सब काम जो जिस समय इस घर में किये जाते हैं बता दीजिये मैं सब मन से करूंगी। तब सास ने सारे घर के काम जिस समय जो करने चाहिये वे सब बता दिये। शान्ता के पति दयाशङ्कर तो आगरे में एक वकील के यहां नौकर थे उस वकील के यहां भी कन्या का विवाह था इसलिये उसने विवाह के लिये इनको कठिनता से केवल पांच ही दिन की छुट्टी दी थी। इस प्रकार विवाह होने के बाद दयाशंकर तो आगरे चले गये। अब घर में शान्ता के ससुर सास, ननद सुलोचनी तथा देवर जिसका नाम कृपाशङ्कर

और शान्ता ये पांच प्राणी थे। इनके घर में एक गाय और उसका बछरा भी था॥

शान्ता का घर में प्रबन्ध करना।

शान्ता दो तीन घण्टे रात रहते उठकर घर के लिये आटा पीसती थी, उपरान्त शौचादिक से निवृत हो सारे घर में बढ़नी फेर कर घर को स्वच्छ कर देती थी तब घर में एक जो कुइआं थी उस में से घर के लिये पानी भर लेती फिर स्नान कर के जगत्पिता परमात्मा का ध्यान करती थी। उस के पश्चात् रसोई का प्रबन्ध करती। दस बजे तक रसोई तैयार कर देती थी। पण्डित कल्याणदत्त को पहले एक बजे से पूर्व रसोई कभी नहीं मिलती थी परन्तु अब शान्ता के इतनी जल्दी भोजन तैयार करने पर बड़े अचंभे में आते थे और अपनी स्त्री से पूछते थे कि इतनी जल्दी रसोई कैसे बन जाती है? तब वह कहती, यह बहू लक्ष्मी है तीन बजे से उठ कर घर का काम करती है, सारे घर का काम इसने अपने ही ऊपर उठा लिया है। तब वे कहते थे नहीं; तू उसे इतना काम न करने दिया कर नहीं तो वह बीमार पड़ जायगी। इस पर वह उत्तर देती, क्या करूं वह नहीं मानती, मैं जब तक सोकर उठती हूं तब तक उसे सब काम से निपट कर ईश्वर का ध्यान करते हुये पाती हूं तब वे शान्ता को आशीर्वाद देते और उसके व्यवहार से बड़े प्रसन्न होते थे। रसोई और भोजन आदि से वह बारह बजे छुट्टी

पाती उसके उपरान्त बैठ कर वह कोई न कोई कथा नित्य सास को सुनाया करती थी। ननद को भी उसने पहली किताब मंगा कर पढ़ाना शुरु कर दिया। शान्ता की सास का स्वभाव बड़ा सीधा था वह इसे अपनी पुत्री सुलोचनी से भी अधिक चाहती थी। पहिले दिन जब उसने कथा सुनी तो वह बड़ी प्रसन्न हुई। जो स्त्री घर में आती उससे बार २ वह शान्ता की बुद्धि और चतुरता की बड़ाई करती थी। अब ज्यों ही धीरे २ टोला की स्त्रियों ने सुना वे दुपहर को कथा सुनने के लिये इकट्ठी होने लगीं। शान्ता की विद्या और बुद्धि को देख कर सब स्त्रियां चकृत हो जाती थीं। सारे गांव में पं० कल्याणदत्त की बहू की बड़ाई फैल गई। शान्ता वैद्यक भी जानती थी। विशेष कर बच्चों की दवाई में तो वह अति ही निपुण थी। इसने बच्चों के लिये दवाइयां बना रखीं थी। दो एक बच्चों का दवाई करने से गांव में यह बात प्रसिद्ध होगई थी कि पं० गौरीशङ्कर जी की बहू का हाथ बच्चों की दवाई करने में बहुत कुशल है। गांव में जब किसी बच्चे को कुछ भी दुःख होता तो उसकी माता एक वार अवश्य उसे पं० गौरीशङ्कर के घर ले आती। बूढ़ी २ स्त्रियां तक भी अपने लिये दवाई ले जातीं थीं। १२ बजे से दो बजे तक तो उन सब को प्राचीन काल की कथायें वह सुनाती, फिर एक घंटे भर (३ बजे तक) घर के नये पुराने कपड़े सीती थी। सुलोचनी को

दाल चावल आदि बिनने को दे देती थी। इस प्रकार उसे धीरे २ सब काम सिखाती गई। शान्ता के काढ़े हुये बेलबूटे आदि देख कर गंवार स्त्रियां चकृत हो जाती थीं। तीन बजे फिर वह ब्यालू बनाने का लग्गा लगा देती। नित नये प्रकार के भोजन बनाती थी क्योंकि वह अपनी गुरुआइन कमला से सब प्रकार के व्यंजन बनाना सीख चुकी थी। पांच बजे यह अपने ससुर को ब्यालू करा देती थी। इससे सास और ससुर तो हर समय शान्ता की बड़ाई ही किया करते थे। रात्रि में बैठाल कर अपने देवर कृपा शंकर तथा सुलोचनी को पढ़ाया करती और आप भी अपनी पुस्तकें जो माइके से लाई थी पढ़ा करती थी। नव बजे तक अपनी सास के पैर दबाती सास के कई बार कहने पर सोने को जाती थी। इस प्रकार वह अपने समय को सब की सेवा और सुश्रूषा करने में बिताती थी। शान्ता को नित्य पढ़ता हुआ देख कर सास एक दिन बोली बहू क्या हम जैसी उमर वाली स्त्रियां भी पढ़ सकती हैं? तब शान्ता बोली, हां माता जी! विद्या पढ़ने के लिये शास्त्र में लिखा है, कि विद्या को यह समझ कर पढ़ना चाहिये कि हम कभी नहीं मरेंगी। क्योंकि शास्त्र का मत है कि मृत्यु के समय जैसी बासना होती है, वैसा ही उसको जन्म मिलता है और अन्त समय की तो बासना बहुत दिन अभ्यास करने पर सुधरती है। इसलिये यदि आप पढ़ें तो थोड़े ही दिनों में रामायण आदि हिन्दी-भाषा की पुस्तकें पढ़ जांयगी और

कुछ समय तक अभ्यास करने से आप अर्थ भी भली प्रकार समझने लगेंगीं ॥

शान्ता के कहने से सास ने भी पढ़ना आरम्भ कर दिया और कुछ महीनों के ही अभ्यास से वह रामायण आदि पुस्तकें भली प्रकार पढ़ने लगी ॥

पांचवां अध्याय ।

आज शनिश्चर का दिन है। शान्ता रसोई और भोजन से सुचित होकर घर के बासन मांज रही है। सासजी एक चटाई पर बैठी हुई स्लेट पर कुछ लिख रही हैं। सुलोचनी भी एक पुस्तक को सामने रक्खे सर हिलाहिला कर कुछ गुनगुना रही है। इतने में पं० गौरीशंकर जी एक तार लेकर आये और अपनी स्त्री से बोले आगरे से यह तार आया है दया की तबीयत बहुत दिक है। यह सुनकर वह घबड़ा गई और आखों में आँसू भर कर बोली, तो फिर जल्दी जाओ और बहूको भी लेते जाओ ? क्योंकि बहूके जाने से तुमको दयाकी सेवा करने में बड़ी सहायता मिलेगी। पंडित जी बोले, अच्छा झटपट तय्यारी करदो जिसमें कम से कम पांच कोस तो आज निकल जांय। घंटे भर में उनके यात्रा की सारी तय्यारी होगई। गौरीशंकर जी शान्ता को लेकर आगरे

के लिये रवाना हुये । शान्ता को इसलिये लेगये कि वह वैद्यक शास्त्र भी कुछ पढ़ी थी इस लिये दयाशंकर की सेवा भली प्रकार कर सकेगी । पाँच दिन में आगरे पहुंचे वहाँ देखते क्या हैं कि दयाशंकर को होश तक नहीं है । यह देखकर पं० गौरीशंकर घबड़ा गये और रोने लगे तब शान्ता ने आखों में आंसू भरे हुंये कहा कि, पिताजी ! आप इस समय दुःखी न हों, यह समय दुःख करने और घबड़ाने का नहीं है । इस समय धैर्य्य धर कर उपाय सोचना है कि, किस प्रकार ये आराम हों ? यदि आप घबड़ायंगे तो मैं भी घबड़ा जाऊंगी ! तब फिर घबड़ाहट के कारण कोई उपाय नहीं सूझेगा जिससे अनर्थ हो जाने की संभावना है ।

इस समय २५) रुपये तो पं० गौरीशंकर अपने संग लेगये थे और १०) रुपये दयाशंकर के पास थे, इस प्रकार ३५) रुपये कुल इनके पास थे । वकील साहब जिनके यहां ये नौकर थे वे हवा बदलने के लिये मय परिवार के शिमला पहाड़ पर चले गये थे । पं० गौरीशंकर जी डाक्टर को लाये औषधि होने लगी इस प्रकार लगभग १० दिन बीत गये परन्तु कुछ फ़ायदा न हुआ, रुपये भी धीरे २ बीच खर्च होगये । अब परदेश में कौन इनको रुपया देने वाला था । जब सब रुपये खर्च हो गये और कुछ फायदा न हुआ तब तो पंडित जी घबड़ाने लगे कि इधर तो पास में खर्च नहीं दूसरे परदेश का होना, तब शान्ता ने

२५) रुपये की क़ीमत का गहना जो उसके पास था उतार दिया मार्ग में चोरों और डाँकुओं के भय से वह दो एक गहने घर ही उतार आई थी। पंडित जी गहना बेचकर दवाई करने लगे। दयाशंकर की अवस्था ऐसी थी कि उनको घर भी नहीं ले जा सक्ते थे। इधर वकील साहब भी नहीं थे कि उन्ही से कुछ रुपये दवाई के लिये ले लेते। अब शान्ता भी सोचने लगी कि, अब क्या करना चाहिये? जब उसके पास केवल १५) रुपये रह गये तब पंडित जी बोले अब क्या करें? न रुपये ही बचते हैं न यह ही आराम होते हैं, इन को आराम होते भी देर लगेगी अब क्या करना चाहिये? तब शान्ता बोली, पिता जी! आप मुझे ३) रुपये के कलाबत्तू और ४) रुपये की सादी रेशमी साड़ी बजार से मोल ला दीजिये मैं उस साड़ी पर कलाबत्तू के बेल बूटे बनाकर अच्छी साड़ी तय्यार कर दूंगी जिस को बेच कर खर्च का काम चलेगा। निदान पंडित जीने ऐसी ही किया बाज़ार से ७) रुपये की सौदा लेते आये परन्तु मन में यह सोचने लगे कि १५) रु० में ७) तो ख़र्च हो गये अब केवल ८) बचे। इस पर दवाई और घर का ख़र्च मिला कर १) रुपये रोज़ का ख़र्च है। कहीं ऐसा न हो कि आठ रोज के बाद भीख मांगनी पड़े? बहू समझ गई कि ससुर जी को यह सोच है। तब वह समझाने लगी कि अब आप घबड़ावें नहीं, ईश्वर अवश्य सहायता करेंगे। आप केवल ईश्वर का

आसरा कीजिये वह सब कुछ देगा यों कह कर उनके लिये जो उसने लड्डू बना रक्खे थे उसमें से २ लड्डू और जल ले आई वे मना करते रहे परन्तु उसकी विनय पर उन्होंने १ लड्डू खा ही लिया।

शान्ता दयाशंकर के पलंग के पास बैठती ; जब उनको निद्रा आ जाती तब वह साड़ी में बेल निकालने लगती। इस प्रकार रात्रि दिन परिश्रम करके ६ दिनमें शान्ताने साड़ी तय्यार करदी फिर ससुर को बुलाकर यों बोली पिता जी ! आप इसे बाज़ार में ले जाइये और दस पांच बजाजों को दिखाइये परन्तु एक बार मुझे फिर बतला जाइये कि, इस का क्या दाम लगता है यह कह कर उसने उन को साड़ी देदी। परन्तु ज्यों ही पंडित जी ने साड़ी देखी अचम्भे में आ गये और पूछने लगे क्या यह वही साड़ी है जिसे हम लाये थे। उसने कहा हां, यह वही साड़ी है केवल इस में कलाबत्तू के बेल और बूटे बनाये गये हैं। पंडित जी उस की प्रशंसा करते हुये बाज़ार गये। बाज़ार में साड़ी बजाजों को दिखाई। कोई तो यह भ्रम करता था यह किसी की साड़ी चुरा लाया है और कोई यह समझता था कि यह पंडित है किसी ने इस को साड़ी दान दी होगी ; तकलीफ़ पड़ने पर यह बेचने आया है। बजाज लोग अनेकों प्रकार की पंडित जी के ऊपर शंका करते और कभी कभी उनसे टेढ़े सीधे प्रश्न भी कर दिया करते थे। कोई तो ५) रुपये

कहता कोई १०) और कोई कोई १५) भी कह दिया करते थे। इस प्रकार सारे बजाजे भर को इन्होंने वह साड़ी दिखाई, अंत में एक बजाज ने इन को बुला कर पूंछा तुम यह साड़ी कहां से लाये हो और क्यों बेचते हो? इन्होंने अपना सारा हाल उसे कह सुनाया। बजाज इस विपत्ति का हाल सुन कर आँखों में आँसू भर लाया और बोला, इस के ठीक २ दाम ४०) रुपये हैं। मैं इनको ४०) रुपये में लेलूंगा: यदि कहो तो रुपये दे दूं ? तब ये बोले, अच्छा मुझे अपनी बहू से पूंछ आने दो क्योंकि उसने केवल जांचने को मुझे भेजा है मैं उस से बिना पूछे बेच नहीं सकता। तब बजाज बोला, अच्छा जाओ और अपनी बहू से कह देना अब इस से ज़्यादा दाम नहीं चढ़ सकता असली कीमत यही है। यदि बहू मंजूर करले तो तुम मेरे हाथ बेच जाना। और जो २ काम तुम्हारी बहू बनावे वह मुझे बिना दिखाये मत बेचना।

यह सुन कर पंडित जी घर आये और बहू से सारा हाल कह सुनाया। तब बहू ने कहा, अच्छा आप ४०) रुपये में बेच आइये और उस बजाज से पूछना यदि तुम को ऐसी साड़ियां और चाहिये तो हम तय्यार करा दे गे। पंडित जी साड़ी लेकर उस बजाज के यहाँ गये और ४०) रुपये में साड़ी देदी और पूछा, यदि आप को इस प्रकार की साड़ियां और चाहिये तो मैं हर हफ़्ते एक साड़ी देसक्ता हूं। बजाज का नाम लाभचंद

था उसने कहा हां ! जितनी साड़ियां तुम लाओगे मैं सब लेलूंगा । उस ने अपनी इच्छानुसार कई रगों की रेशमी सादी साड़ियां देदीं और कहा आप इन साड़ियों पर ठीक पैसी ही बेल और बूटे निकलवाइये और जब २ तुम को खर्च की ज़रूरत पड़े हम से ले जाना यों कह कर एक नौकर संग कर दिया जिस से वह उनका मकान देख आवे।

पंडित जी प्रसन्न होकर घर आये और बहू से बोले बेटी ! तू धन्य है तेरे माता पिता भी धन्य हैं जिस के कोख से तू उत्पन्न हुई है । अब मुझे पूर्ण विश्वास है कि तेरे सतीत्व बल से दयाशंकर अवश्य आराम हो जायगे।

यह सुनकर बहू ने लज्जासे सिर नीचा कर लिया और बोली, पिताजी यह सब आपही का पुण्य प्रताप है। अब आप थोड़ी देर में सुस्ताकर बजार से कलाबत्तू और तारचावी ले आइये फिर मैं दूसरी साड़ी तय्यार करूं इस प्रकार उसने ३) रुपये की कलाबत्तू फिर मगवाई और दूसरी साड़ी में लग्गा लगा दिया।

दयाशंकर को विशेष आराम न हुआ किन्तु धीरे २ और गिरते गये यहां तक कि एक दिन इतने बेहोश हो गये कि दो घंटे तक होश मे न आये ; यह देख पिता रोने लगे। तब बहू ने आंखों में आँसू भर कर इनको समझाया कि, आप घबड़ाइये नहीं इनकी तबियत अच्छी हो जायगी । धीरज से सब काम होता है, घबड़ाने से अपनी भी तबियत बिगड़जाने का डर

है। यदि आप सोच में बीमार पड़ गये तो फिर अब परदेश में कोई दूसरा सहारा नहीं है। इस लिये आप मत घबड़ाइये। केवल ईश्वर का स्मरण कीजिये वह अनाथ रक्षक और करुणा-सागर है। हम लोगों की विपत्ति का उसे बहुत ध्यान होगा। वह जो कुछ करता है अच्छा ही करता है।

यह सुन कर पंडित जी को ढाढ़स बंधा और वे उस वैद्य को बुलाने गये जिसकी दवाई होती थी वैद्य जी ने आकर नाड़ी देखी और बोले ये निर्बल बहुत हो गये हैं इस लिये इनको बेहोशी आ गई है, आप घबड़ाइये नहीं ये अवश्य अच्छे हो जायंगे हां कुछ समय तो अवश्य ही लगेगा। यह कह कर दवाई देकर बोले इसको शहद में मिलाकर जब होश में आवें तब चटा देना और एक तेल हम घर से देवेंगे उसे तालूपर धीरे २ ठोंकना तो बेहोशी भी जाती रहेगी और इनको आराम भी पहुंचेगा। फिर शान्ता को समझाने लगे बेटी तू घबड़ाना मत केवल जो हम कहजाते हैं यदि उसी प्रकार परहेज से दवाई करती रही तो कुछ डर की बात नहीं है। ईश्वर चाहेगा तो ८ दिन में इनकी तबियत संभलने लगेगी। इस प्रकार समझा बुझा कर वैद्य जी चलेगये और दयाशंकर को भी होश आने लगा। इस प्रकार एक महीने में जाकर इनकी तबियत संभली और पथ्य भी कुछ लेने लगे। तब तक शान्ता ने ४ साड़ियां तय्यार करके भेजवा दीं जिनके दाम भी तुरन्त ही मिलगये।

जब पिताजी किसी काम से बाज़ार गये थे उस समय दयाशंकर ने शान्ता से पूछा प्यारी ! यह तो बताओ कि ख़र्च कैसे चलता है क्योंकि दवाई में तो बहुत ख़र्च पड़ा होगा क्या वकील साहब पहाड़ से आगये। यह सुनकर वह मुसक्यानी और धीरे से बोली आप क्यों चिन्ता करते हैं परमेश्वर ख़र्च देता है आप केवल अपनी तबियत को संभालिये। इतने में पिताजी आगये और वे चुप होगये।

जब दयाशङ्कर की तबियत बिलकुल अच्छी होगई तब पं० गौरीशङ्कर घर को चले गये और शान्ता को वहीं छोड़ गये। यदि उसे भी ले जाते तो दयाशंकर को भोजन आदि बनाने में बड़ा दुःख होता क्योंकि अभी तो वे बीमारी से उठे थे पंडितजीको चलते समय शान्ताने २५) रुपये दिये तब वे बोले "नहीं नहीं,, इसे तू अपने पास रख तू तो परदेश में है हम तो घर जा रहे हैं इसलिये रुपयों की जरूरत नहीं है" परन्तु शान्ता न मानी उसने जोराबरी रुपये दे ही दिये और कहा यहां रुपये की अब कमी न रहेगी। इस लिये आप यहां की कुछ चिन्ता न करना। माताजी से मेरा प्रणाम कह देना, और ननद जी को यह धोती देदेना और यह कह दीजियेगा कि अपनी पुस्तकें पढ़ती रहे मैं देवर जी को और ननद जी को यहां से अच्छी २ पुस्तकें लेकर पीछे भेजूंगी। राह के लिये पंडित जी को जो उसने लड्डू बना दिये थे सो देदिये।

जब पंडित जी घर आये पंडिताइन दयाशंकर का सारा हाल पूछने लगीं तब वे बोले कि क्या कहें हम लोगों ने न जाने पूर्व जन्म में कौन से सुकृत किये हैं जिनका फल यह लक्ष्मी रूपी बहू मिली है। जब उन्होंने सारा वृतान्त आगरे का कहा तब तो सास अचंभे में आगई और थोड़ी देर बाद मारे ख़ुशी के अपने आपे में न रही। ननद भी धोती देखकर उछलने लगी और सारे टोला में दिखाती फिरी कि यह मेरी भौजाई ने मेरे लिये भेजी है।

जब यह वृतान्त टोले में फैला तब तो स्त्रियां आ २ कर पंडिताइन के भाग्य को सराहती थीं और यह कहती थीं कि परमेश्वर सबको ऐसी बहू दे।

यहां आगरे में पंडित जी के चले जाने पर शान्ता से दयाशंकर बोले अब क्या करें ५) रुपये में अब कैसे ख़र्च चलेगा क्योंकि हमारी तनख़्वाह तो केवल पांच ही रुपये हैं और खर्च दो जनों का हो गया। तब शान्ता कुछ मुसक्याकर बोली आप चिन्ता न कीजिये ख़र्च तो परमेश्वर देताही रहेगा जिसने संसार में उत्पन्न किया है उसे भोजनों की भी चिन्ता है। एक दिन उसे साड़ी में बेल लगाते देख दयाशंकर बड़े आश्चर्य्य में हो आये और कहने लगे क्या यह तूने ही तय्यार की है! अहा। तूतो बड़ी गुणी है यह तूने कहाँ सीखा है मैं ने आजतक ऐसी साड़ीही नहीं देखी। तू अब इसे क्या करेगी

अपने लिये बना रही है ? वह बोली नहीं मैंने यह बिक्री के लिये बनाई है फिर उसने सारा हाल बीमारी का कह सुनाया और जिस प्रकार बीमारी में खर्च की तकलीफ़ हुई और ईश्वर ने साड़ी की बिक्री का सिलसिला लगाया वह सारा वृत्तान्त उनको कह सुनाया। जिसे सुनकर वे बड़े प्रसन्न हुये और शान्ता की सराहना करने लगे। उस के पढ़ने का हाल सुनकर तो वे दंग रह गये और बोले क्या तू देवी है जो औतार लेकर मेरे घर आई है परन्तु अपनी ओर विचार कर लज्जित हो गये और कहने लगे तेरी ऐसी स्त्री रत्न मेरे घर के योग्य नहीं है। तेरा ब्याह तो किसी धनी और विद्वान के घर होना उचित था मैं गंवार और मेरा ग़रीब घर तेरे लिये उचित नहीं है। यह कहकर चुप होगये। तब वह हंसकर बोली प्राणपते ! मैं आपकी दासी किसी योग्य नहीं हूं। आप मेरे लिये ईश्वर तुल्य हैं मैं आपकी पूजा में ही सारे तीर्थ समझती हूं आप का घर मेरे लिये स्वर्ग तुल्य है। यों कह कर बोली पढ़ने की कहिये तो क्या आपकी अवस्था अभी निकल गई है क्योंकि शास्त्र में लिखा है कि विद्या और धनको यों संचित करना चाहिये मानों मृत्यु कभी न आवेगी। सुना है शेख़ सादी ने जो फ़ारस के एक बड़े कवि हुये हैं जिनकी समता लोग गोसाईं तुलसीदास जी से करते हैं, चालीस वर्ष की अवस्था में पढ़ना प्रारम्भ किया था तो आपकी तो अवस्था

अभी २४ वर्ष ही की हो पाई है यदि आप अबसे भी विद्या में अच्छा परिश्रम करें तो आशा है कि थोड़े दिनों में आप अच्छे विद्वान हो जावेंगे।

दयाशंकर ठंढी सांस भर कर बोले प्रिये! हमारे भाग्य में पढ़ना कहां लिखा है। हमारे करम में तो केवल दरबानी लिखी है जिस के लिये ५) रुपया हर महीने मिलता है। फिर यदि पढ़ें भी तो छुट्टी कहां किस के पास जाकर पढ़ें कौन पढ़ावेगा।

शान्ता-हे प्राण वल्लभ! यदि आप अनुचित न समझें तो थोड़ी देर मुझ दासी से ही पढ़ लिया करें मैं तो तन मन से आप की सेवा में तत्पर हूं।

दयाशंकर—नहीं ऐसा नहीं कर सकते जो कोई सुनेगा वह हंसेगा। फिर अपनी स्त्री को गुरू कैसे बना सकते हैं यह शास्त्र विरुद्ध लोग बतलाते हैं। विद्या तो गुरु ही से पढ़ना चाहिये जो लोग इधर उधर पढ़ते भी हैं तो उन्हें नहीं आती। तुम से पढ़ने में बड़ा पाप होगा।

शा०—यह किस मूर्ख ने आप को बहका दिया है कि स्त्री से कुछ न सीखे। जब शास्त्र में अपनी स्त्री को अर्द्धाङ्गिनी कहा है तो मैं भी आप का आधा अंग हुई और आधे अंग से अपना काम लेना पाप नहीं है जैसे यदि बायां हाथ दाहिने हाथ की सहायता करे तो उसका तो कर्तव्य

ही है यदि कर्तव्य पालन न करे तो अवश्य पापी होवेगा। इस लिये मैं यदि विद्या के द्वारा आप की सहायता करूँ तो किसी प्रकार न तो मुझे पाप है और न आप को।

द०—हां कहती तो ठीक हो तुम पढ़ी लिखी हो मैं तो लिखा पढ़ा नहीं, पाप पुण्य मुझे कुछ नहीं मालूम यदि तुम मुझे पढ़ाने में पाप नहीं समझती तो मैं पढ़ने को तय्यार हूं ; जो पुस्तक कहो ले आऊं।

शा०—मेरी समझ में उत्तम गुण ग्रहण कर लेना चाहिये फिर विद्या रत्नाकर है जिसके समान संसार में कोई धन नही। इस धनको न चोर चुरा सक्ता है और न कोई भाई बन्धु बटा ही सका है। धन से सब जगह आदर नहीं होता परन्तु विद्या से पंडित का राजा तक आदर करता है विद्या परदेश में भाई के समान सहायता करती है फिर आदर और सत्कार के सिवाय जो विद्या से मनुष्य आनन्द पाता है वह चाहे सैकड़ों गुना धन क्यों न हो परन्तु आनन्द नहीं मिलता। विद्वान जिस समय एक प्रसिद्ध कवि की कविता को पढ़ता है उस समय उसके आनन्द को वही जान सक्ता है जो विद्वान है इसलिये आप अवश्य विद्या पढ़िये। लोगों की भली बुरी बातों पर कभी बिचार नहीं करना चाहिये। अब आप १ पहली पुस्तक, एक अङ्कगणित, एक स्लेट पेन्सिल और कुछ कागज़ ले आइये, आज ही से पढ़ना आरम्भ कर दीजिये

क्योंकि उत्तम काम तुरन्त शुरू कर देना चाहिये। आप बहुत जल्द पढ़ जायगे क्योंकि आप को समय भी अधिक रहता है वकील साहब के द्वार पर केवल बैठे रहना पडता है वह समय तो भली प्रकार से आप काम में ला सक्ते हैं। तिस में भी आज कल वकील साहब पहाड़ पर गये है वे पांच महीने बाद आवेंगे तब तक तो आप हिन्दी भाषा भली प्रकार जान जाओगे। यदि आप परिश्रम करेंगे तो उनके आने के पहले ही आप रामायण आदि पुस्तकें भली प्रकार पढ़ने लगेंगे और चिट्ठी पत्री लिखने का भी अभ्यास हो जावेगा।

दयाशंकर शास्त्री के कथनानुसार पुस्तक आदि सब माल ले आये और पढ़ना प्रारम्भ कर दिया। उसी दिन से पढ़ने की ऐसी चाट लगी कि रात दिन पढ़ने में ही लगे रहते। एक दिन में तो अक्षरों का अभ्यास किया क्योंकि लड़कपन में पहली पुस्तक कुछ दिनों पढ़ी थी और सौ तक गिनती जानते थे। इस प्रकार ५ दिन में उन्होंने पहली पुस्तक हिन्दी की और सौ तक गिनती ५ तक पहाड़े याद कर डाले और लिखने का भी अभ्यास शुरू कर दिया। छठवें दिन से दूसरी पुस्तक और ६ से आगे पहाड़े शुरू कर दिये। दूसरी पुस्तक में १५ पाठ थे सो उन्होंने १० दिन में समाप्त किये पहाड़े भी १५ दिन में १५ तक सीख लिये अर्थात् १५ दिनों में पहली और दूसरी पुस्तकें, सौ तक गिनती और १५ तक पहाड़े सीख लिये।

सोलहवें दिन तीसरी पुस्तक सोलहवाँ पहाड़ा पढ़ना और लिखना प्रारम्भ किया तीसरी पुस्तक में २५ पाठ थे जिन को उसने १५ दिन में समाप्त किया और पहाड़े भी ३० तक भली प्रकार याद हो गये अर्थात् एक महीने में ३ पुस्तकें और ३० पहाड़े सीखे।

दूसरे महीने में चौथी पुस्तक और जोड़ पढ़ना प्रारम्भ कर दिया। चौथी पुस्तक में ३० पाठ थे जिन को उसने २० दिन में पढ़े और बासही दिन उसको जोड़ और बाकी सीखने में लगे अर्थात् एक महीने २० दिन में उसने चौथी पुस्तक और जोड़ बाकी सीख लिया। इसके साथ ही साथ वे लिखने का भी पूरा २ अभ्यास कर रहे थे।

अब इन्होंने पांचवीं पुस्तक पढ़ना आरम्भ किया उसके साथही साथ गुणा और भाग भी सीखने लगे। पाँचवीं पुस्तक में ४० पाठ थे उनको उसने २५ दिन में समाप्त कर लिया और गुणा भाग भली प्रकार जान गये अर्थात् ३ महीने में वे ५ पुस्तकें हिन्दी की और भाग तक हिसाब भली प्रकार जान गये। अब शान्ता ने उनको रामायण पढ़ाना आरम्भ करदिया साथही साथ अर्थ भी बतलाती जाती थी। हिसाब भी मिश्र जोड़ मिश्र बाकी, मिश्र गुणा, और मिश्र भाग जल्द जान गये और भिन्न में लग्गा लगा दिया। सैकड़ों चौपाइयाँ रोज पढ़जाते थे और उसका अर्थ भी समझते जाते थे एक तो

शान्ता सी गुरू और बुद्धि भी तीक्ष्ण साथही साथ उसके परिश्रम करना ये तीन बातें जहां संग ही संग थीं तो फिर पढ़ना क्यों न जल्दी आता। पांच महीने में वकील साहब के आने के पहले उसने किष्किन्धाकाण्ड तक तो रामायण और हिसाब में भिन्न और त्रैराशिक तक सीख लिया अब इस समय ये चिट्ठी भली प्रकार लिख लेते थे। रात्रि के समय शान्ता इनको नाना प्रकार की कथायें सुनाती थी। जब भर्तृहरि शतक आदि के श्लोक पढ़कर इनको उसका अर्थ समझाती तो इतने प्रसन्न होते कि फूले नहीं समाते थे। इनको भी संस्कृत पढ़ने की प्रबल उत्कण्ठा उत्पन्न हुई परन्तु शान्ता इनको समझाती थी कि एक

भाषा का पूरा ज्ञान हो जाने से दूसरी भाषा जल्दी आती है पहले आप हिन्दी जो हमारी मातृभाषा है उसको भलीप्रकार से जान जांय तब संस्कृत का आरम्भ कीजियेगा। धीरे २ दयाशंकर जी को हिन्दी का अच्छा अभ्यास हो चला। अब तो आप कुछ कविता भी कर चले। दुपहर को एक पत्र मिला कि वकील साहब ४ दिन में आगरे पहुंच जांयगे। यह सुनकर इनको बड़ी खुशी हुई। ४ बजे बाद स्टेशन पर वकील साहब को लेने गये। जब वकील साहब घर आये तब इनसे बीमारी का सारा हाल पूछने लगे इन्होंने सारा हाल कह दिया कि पिताजी आये थे आराम होने पर हमारे घर के

लोगों को यहीं छोड़ गये हैं। यह सुनकर वकील साहब बड़े खुश हुये और बोले अब तुमको खाना तय्यार मिला करेगा। अब तुम चने चबाकर और सतुआ खाकर दिन नहीं काटोगे क्योंकि तुमको खाना बनाने का बड़ा आलस है। कहो तुम्हारी जोड़ निरी गवाँर तो नहीं है खाना अच्छा बना लेती है या नहीं? दयाशंकर लज्जा से चुपके होगये कुछ न बोले इस प्रकार वकील साहब की स्त्री को भी जब ख़बर हुई कि दयाशंकर की स्त्री भी आगई है तब उन्होंने दयाशंकर से बुलाकर कहा कि दया! आज तुम अपनी दुलहिन को तो मेरे यहां भेजदेना मैं अभी मज़दूरिन भेजती हूं। दयाशंकर ने हामी भरली और घर में आकर शान्ता से कहा प्रिये! आज बहू जी ने तुमको बुलाया है अभी मज़दूरिन आती होगी तुम तय्यार रहना। यह सुनकर शान्ता ने सादे कपड़े पहिन लिये और वही सादे गहने जो उसने साड़ियाँ तय्यार करके बनवाये थे पहिन कर तय्यार हो गई। मज़दूरिन आई और शान्ता को बहू जी के पास ले चली। घर थोड़ी ही दूर था। पहुंचने पर बहूजी ने शान्ता को अपने पास बुलाकर बैठाला। शान्ता की सुन्दरता देख कर बहू जी दंग रह गईं। यद्यपि वह सादेही कपड़े पहिने थी और गहने भी विशेष नहीं थे परन्तु सुन्दरता से वह बड़ी भली जान पड़ती थी। उसके मधुर और विनीत बचन सुनकर बहूजी बड़ी प्रसन्नहुई

और कहने लगीं बहू तुमसे हमारी तबियत बड़ी प्रसन्न है। तुम क्यों अलग कोठरी लेकर रही हो हम तुमको अपने घर के बाहर का एक खंड जो बिल्कुल खाली पड़ा रहता है और जो निराला भी है देदूंगी तुम उसमें उठि आओ। वहां अकेले तुम्हारा मनभी न लगेगा यहाँ पर जब तबियत ऊबी चलीं आईं तबियत बहल जाया करेगी क्योंकि दुपहरी में अवश्य अकेले मन ऊबा करता होगा। तब शान्ता बोली आपकी आज्ञा मुझे सर्वदा शिरोधार्य्य है परन्तु मुझे वहां भी दुःख नहीं है क्योंकि दुपहर के समय मैं कोई न कोई पुस्तक देखा करती हूं इससे तबियत नहीं ऊबती। बहूजी बोलीं क्या तुम पढ़ी भी हो ? शान्ताः-हाँ मैं कुछ थोड़ा पढ़ी हूं।

बहू०—मेरे पिता तो स्त्रियों के पढ़ने के बहुत खिलाफ थे, उन्होंने मेरे चाचा के बहुत कहने पर भी मुझे नहीं पढ़ने दिया क्योंकि वे कहते थे कि पढ़ी लिखी स्त्रियां विधवा हो जाती हैं इसके सिवाय वे चिट्ठी पत्री का व्यवहार करने लगती हैं ऐसा स्वभाव स्त्रियों को बिगाड़ देता है, वे अक्सर यह भी कहा करते थे कि स्त्रियों को पढ़ाने से क्या लाभ है क्या स्त्रियों से नौकरी करानी है इनको तो घरका काम काज करलेना और रोटी बनालेना ही बहुत है।

शा०—मैं तो स्त्रियों को पढ़ाना अच्छा समझती हूं क्योंकि स्त्रियों को पढ़ाने में बहुत लाभ हैं जिनमें थोड़े से तो मैं अभी वर्णन करती हूं:—

(१)--स्त्रियों को पढ़ाने से संतान सुशिक्षित होगी जिससे वंश की दिनों दिन उन्नति होती है क्योंकि कुलमें एक भी अच्छा विद्वान हो जाय तो सारे कुलको जगमगा देता है।

(२)--यदि पति विद्वान हो और स्त्री कुपढ़ी हो तो आपस में प्रेम नहीं होता। जब पति और पत्नी में प्रेम ही नहीं तो गृहस्थी का कुछ सुख नहीं मिलता किन्तु घर कलह का मंदिर हो कर नर्क का धाम बन जाता है। इसलिये स्त्रियों के पढ़ाने से मनुष्य गृहस्थी के सच्चे सुख को भोग सक्ता है।

(३)—जबतक माता विदुषी (पढ़ी लिखी) न होगी तब तक संतान साधारणतः विद्वान हो ही नहीं सक्ती क्योंकि शतपथ ब्राह्मण में लिखा है कि "मातृ-मान पितृमानाचार्य्य-मान् पुरुषो वेद" अर्थात् पहली गुरू माता दूसरा पिता और तीसरा आचार्य्य होता है। तो सबसे पहली नींव मनुष्य के स्वभाव की माता ही डालती है फिर उस नींव के ऊपर पिता और आचार्य विद्या रूपी मंदिर तय्यार करते हैं इसलिये पहले माता को विदुषी (पढ़ी लिखी) होना बड़ा जरूरी है।

(४)—शास्त्रमें स्त्रियों के पढ़ने पर बहुत ज़ोर दिया गया है क्योंकि सीता गार्गी, मैत्रेयि, सरस्वती अनसूया आदि स्त्रियां न पढ़ी होतीं तो हम लोगों को भी पढ़ने का अधिकार न होता।

इस प्रकार मैं स्त्रियों के पढ़ने के गुण कहां तक गिनाऊं मेरी समझ में विद्वान कभी यह न कहेगा कि स्त्रियों को न

पढ़ाना चाहिये। रह गया आपके पिता का कहना वे विचारे जैसा सुनते होंगे वैसा कहते होंगे भला विद्या में क्या विष मिला रहता है जिसके अभ्यास से स्त्रियों को तो कुछ नहीं होता परन्तु उनके संसर्ग से उनके पति जीवित नहीं रहते। यदि यह बात सत्य है कि जो स्त्रियां पढ़ती हैं उनके पति जीवित नहीं रहते तो महाभारत में सैकड़ों प्रमाण ऐसे मिलेंगे जिनमें स्त्रियां बहुत पढ़ी लिखी हुई हैं और उनके पतियों की भी उम्र उनसे अधिक हुई हैं। यह तो होही नहीं सक्ता कि पतिपत्नी दोनों संगही मरें और जो दो एक प्रमाण मिल भी जांय तो वे विशेष नियम में आजाते हैं नहीं तो यही होता है कि कभी स्त्री पहले मरती और कभी पति पहले मरता है यह तो प्रकृति का नियम ही है। हाँ इसमें कोई संशय नहीं कि पूर्व्व जन्म के अनुसार हम लोगों को फल भोगना पड़ता है यदि हमारे कर्म पूर्व्व जन्म में अच्छे नहीं हुए तो फिर अवश्य रड़ापा भोगना ही पड़ैगा इसमें विद्या का कुछ भी दोष नहीं। फिर जो स्त्रियां अनपढ़ होती हैं वे क्या विधवा नहीं होती यदि जांच कीजिये तो पता लगेगा कि इस भारत वर्ष में लाखों अनपढ़ स्त्रियां विधवा बैठी हैं और सहस्रों ऐसी भी मिलेंगी जो पढ़ी लिखीं है परन्तु पुत्रवती और सधवा हैं। फिर क्या संसार नौकरी ही के लिये पढ़ता है पढ़ने से तो जीवन का सच्चा स्वाद मिलता है। जिन विचारों ने पढ़ने का स्वाद ही

नहीं जाना वे अवश्य इसको बुरा कहेंगे इसलिये माता जी स्त्रियों का पढ़ना मेरी समझ में सब से अच्छा है। देश का सुधार तो बिना स्त्री-शिक्षा के हो ही नहीं सक्ता। यह सुनकर बहूजी तो आश्चर्य्य में आकर चुप हो गईं क्योंकि पढ़ी लिखी तो थी ही नहीं जो कुछ भी शान्ता को उत्तर दे सकतीं।

बहू—पंडिताइन मैं क्या कहूं मेरा भी पढ़नेको बहुत चित्त चाहता है परन्तु कोई पढ़ाने वाला नहीं हैं यदि तुम यहां आ-जाओगी तो तुमसे हम भी कुछ पढ़लेंगी।

शान्ता—हां! यदि आप परिश्रम करेंगी तो थोड़ेही दिनों में तुम को पढ़ना लिखना भली प्रकार आ जायगा।

बहू—पंडिताइन जी मुझे रामायण कितने दिनों में आजायगी?

शान्ता—आप यदि परिश्रम करेंगी तो आठ महीने में रामायण भली भांति बांचने लगेंगी और उसका अर्थ भी समझने लगेंगी।

अब चार बजे का समय हुआ था। शान्ता ने कहा यदि आज्ञा हो तो मैं जाऊं क्योंकि अब भोजन बनाने का समय होने आया फिर कभी आपकी सेवा में उपस्थित हूंगी। यह सुन कर बहू जी ने मज़दूरिन को संग करके कहा कि मैं कल तुम्हारे लिये यह मकान साफ़ करवादूंगी और वकील साहब के द्वारा दयाशंकर से भी कहला दूंगी और मैं भी कह दूंगी आशा है कि पंडित हम लोगों के बचन को कभी न टारेंगे। तुम्हारे

मिलने से हमारी तबियत बहुत प्रसन्न हुई है। चलते समय बहू जी ने शान्ता को २) रुपये दिये जिसको शान्ता नहीं लेत थी परन्तु बहुत कहने पर विवश होकर लेने ही पड़े। अब शान्ता घर आई और नित्य के धंधे में लग गई। दयाशंकर जब आये तब पूछा कि कहो बहू जी से क्या बात चीत हुई तब इसने सारा हाल कह सुनाया और यह भी कहा कि बहू जी घर भी रहने के लिये देने कहतीं हैं। वकील साहब और बहू जी भी आप से कहेंगी।

दयाशंकर—हां ! फिर तुम्हारी क्या राय है ?

शान्ता—आप ही की इच्छा में मेरी इच्छा है।

दयाशंकर—तो फिर उठ चलना ही अच्छा होगा क्योंकि घर का किराया बचेगा और घर भी सुन्दर मिलेगा। इसके सिवाय वकील साहब तथा उनकी स्त्री का स्वभाव भी बहुत अच्छा है फिर वे स्वामी होकर कहते हैं तो आज्ञा भी मानना हम लोगों का धर्म है।

कचहरी से आकर वकील साहब ने अपनी स्त्री से पूछा कहो पंडत की स्त्री कैसी है निरा गंवार ही तो नहीं है ? अब तुम्हारे लिये तो अच्छा हो गया दुपहरी में दाल चावल बीनेगी अगर मिसराइन जब कभी न आवेगी तो खाना भी पका दिया करेगी इसके सिवाय मिसराइन अब शोख़ होगई है तुम को जवाब देदिया करती है अगर मुनासिब समझो तो। इसी

पंडत की घरवाली को उसकी जगह पर रखलो अच्छा है उसका भी गुज़ारा चल जायगा क्योंकि ५) रुपये में पंडत को क्या हो सकता है। रात को तुम्हारे लिये पीस भी दिया करेगी पिसनारी से पीछा छूटेगा।

बहू—क्या कहूं जी पंडत की बहू तो बड़ी सुन्दर है यहां तक कि हज़ार में एक है इसके सिवाय है तो वह गांव की रहने वाली लेकिन इतनी समझदार है कि उसे देखकर मेरी अकिल हैरान होगई फिर वह इतनी पढ़ी लिखी है कि पंडत के पुरखे भी न पढ़े होंगे। मैं तो उसकी बातें सुन कर आज चकित हो गई वह रमाइन वगरः सब अच्छी तरह से पढ़ लेती है। उसके सामने तो मैं चुप हो गई मुझसे तो बोला भी न गया। जब से वह गई है तब से मैं उसी का ख़्याल कर रही हूं कि कहाँ तो वह पंडत मूरख कहाँ उसकी जोड़ू इतनी पढ़ी लिखी ? उसको तो किसी बाबू की इस्त्री होनी थी। देखो परमेश्वर ने, बैल के गले में हिरनी बांध दी है पंडत उसको क्या सुख देगा, वह अपना गुज़ारा ५) रुपये में क्योंकर कर सकेगा। मेरी समझ में पंडत को २) रुपये माहवारी और बढ़ा दो। मैं ने उसकी बहू से यह भी कहदिया है कि तुम मेरी हवेली के बाहर वाले चौक में आजाओ, वह उसके लिये अच्छी जगह होगी सो तुम भी पंडत से कहदेना। उसकी बहू से मैं भी पढूंगी और उसकी संगत में मेरी कुंतली भी पढ़ जायगी।

यह सुनकर वकील साहब आश्चर्य में आ गये और बोले अगरचे यह बात सच है तो पंडत हक़ीक़त में बड़ा भाग्यशाली है। मेरी तो यह समझ में नहीं आता कि इस लड़की के बाप ने जिसने अपनी बेटी को इतनी तालीम दी क्योंकर ऐसे मूरख गंवार के पल्ले बांध दिया! अच्छा मैं पंडत को २) रुपया माहवारी अब का बार से तरक्क़ी दूंगा और घर में रहने के लिये भी उससे कह दूंगा।

शाम को वकील साहब ने दयाशङ्कर को बुला के कहा "पंडत तुम बड़े तक़दीरवर हो तुम्हारी इस्तरी की तो बड़ी तारीफ़ सुना है मेरे घर में आज उसकी बड़ी बड़ाई कर रहीं थीं अब की माह से तुम्हारी ७) रुपया माहवारी तनख़्वाह हो गई और घर में कहती हैं कि हवेली के बाहिरी हिस्से में तुम चले आओ। वहां तुम को ज्यादे आराम मिलेगा और किराया भी कुछ न पड़ेगा। सबेरे साफ़ करा दिया जायगा।

दया०—बहुत अच्छा, बाबू जी! मैं कल उठ आऊंगा। जब आप की दया है तो हम को किस बात का दुःख हो सकता है। दूसरे दिन सबेरे पंडित दयाशङ्कर अपने असबाब को वकील साहब के घर में उठा ले गये। शान्ता ने बड़ी सावधानी और बुद्धिमानी से जो चीज़ जहां रखनी चाहिये थी वहां वैसीही सजाई जिससे वह स्थान जहां वह रहने लगी मनोहर होगया था। हर आदमी की तबियत चाहती थी कि वहां थोड़ा अवश्य

ठहर ले। उसने थोड़े से गमले मंगाये जिसमें गुलाब, चमेली और बेले आदि के पेड़ लगादिये थे। हर दरवाज़े के दोनों ओर बड़े २ गमलों में लतरें चढ़ाई थीं जो टट्टियों पर अठि-लाती हुई चढ़ी चली जा रहीं थीं। थोड़े दिनों में वह स्थान बड़ा रमणीक हो गया था।

वकील साहब की बहू और उन की पुत्री कुन्तली दोनों शान्ता से पढ़ने लगीं। इन दोनों को उसने बेल बूटे काढ़ना, जाली बुनना आदि सारे काम सुईकारी के सिखा दिये। थोड़े दिनों में बहू जी और कुन्तली अब भोजन भी नाना प्रकार के बनाने सीख गईं। सन्ध्या को बहुधा वे ही भोजन बनाया करती थीं। वकील साहब भी अब दयाशङ्कर का बड़ा ख्याल रखने लगे रुपये पैसे भी तन-ख़्वाह के अतिरिक्त दे दिया करते थे क्योंकि वेजानते थे कि इस की पत्नी, बहू जी और कुन्तली दोनों को पढ़ाने और काम काज सिखाने में बड़ा परिश्रम करती है। इसकी संगति से बहू जी और उनकी पुत्री आलस्य त्याग कर अब बड़े परिश्रम से स्वयं घर का भली प्रकार प्रबन्ध करने लगीं थीं उनके घर में जो नौकर का राज्य हो रहा था सो अब जाता रहा। वकील साहब के यहां सौदा बनियें के यहाँ से उधार आया करती थी। हलवाई भी एक लगा हुआ था, कपड़े आदि बज़ाज के यहां से उधार ही आते थे हर महीने की दूसरी तारीख़ को वकील साहब के यहां

मुअक्किलों के सिवाय आधा कमरा तो तगादेवालों का भरा रहता था। सैकड़ों की थैली भरी आती और सब खाली हो कर जाती थी। जिसने जो बताया वही देना पडता था क्योंकि वकील साहब के यहां कुछ लिखा पढ़ी तो होती ही नहीं थी जो ठीक २ हिसाब करके रुपया दिया जाया करता। बनिये और हलवाई आदि के यहां से जो चीजें आती थीं वे सब मामूली रहती थीं क्योंकि उधार में तो चीजें मामूली ही मिलती हैं। नौकरों का तो रामराज्य था जो मन मे आया अपने लिये भी ले आये। वे भी जानते थे हिसाब तो होता ही नहीं चलो जो ले आवेंगे उसे कौन जानेगा। इसके सिवाय बनिया आदि से महीने में दस्तूरी बंधी थी सो भी अलग भत्ता के तौर पर ले आया करते थे।

छठवां अध्याय।

शान्ता ने यह सब हाल देखा कि वकील साहब के घर में बड़ा ही अंधेर मचा रहता है, एक दिन उसने सारा वृत्तान्त बहू जी से पूछा कि आप सौदा इकट्ठा क्यों नहीं मगालेतीं ? इस प्रकार उधार में नतो चीज़ही अच्छी मिलती है और व्यय भी अधिक होता है। भेद पूंछने से मालूम हुआ कि वकील साहब की आमदनी से ख़र्च कुछ ज़्यादा ही रहता है और बचता कुछ नहीं, तब उसने कहा मैं जिस प्रकार बताऊं यदि आप उसी प्रकार करें तो आपके पास. बड़ा धन हो जायगा और सुख से समय व्यतीत होगा। ईश्वर न करे यदि कुछ विपत्ति आपड़ी तो फिर आप बुरे दिनों का एक झटका भी नहीं सह सकेंगी। समय कुसमय के लिये अपना हाथ चलते हुये कुछ न कुछ अवश्य संचय कर लेना चाहिये जिससे फिर अधिक कष्ट तो नहीं उठाना पड़ेगा। मानलो इसी प्रकार यदि ख़र्च रहा तो फिर कुन्तली के बिवाह में अवश्य आपको कर्ज़ लेना पड़ेगा। और कर्ज़ से अधिक कोढ़ का भी रोग नहीं होता। कर्ज़ लेनेवाला आदमी सदा दास बनकर दबा रहता है उसकी आत्मा सदा चिन्ता से व्यग्र रहती है बुद्धि मंद पड़जाती है, साहस पस्त होजाता है, धैर्य्य पास तक नहीं फटकता। सच है किसी कविने कहा है :—

चिता चिन्ता द्वयोर्मध्ये, चिन्ता चैव गरीयसी।
चितादहति निर्जीवं, चिन्ता दहति सजीवकम्

अर्थः—चिता और चिन्ता दोनों में चिन्ता प्रबल होती है चिता तो मरे मनुष्य को जलाती है परन्तु चिन्ता जीवित को भी सुलगा २ कर मार डालती है। ऋणी मनुष्य उन्नति के स्थान पर अवनति की ओर झुक जाता है। इसलिये मनुष्य को ऋण रूपी कोढ़ से सदा बचना चाहिये। जो लोग धन का मितव्यय करते हैं वे लोग सदा सुखी रहते हैं।

आपलोग आलस्य के कारण अपने शरीरों को स्थूल बनालेती हैं, बदन में फुरती नहीं रखतीं, हर काम के लिये नौकर की सहायता की आवश्यकता पड़ती है जिससे वे भी मालिक का आलसी स्वभाव जानकर अपनी मनमानी करने लगते हैं। इसके सिवाय स्त्रियों के जो शरीर स्थूल हो जाते हैं जिससे प्रायः संतान भी नहीं होती। दौड़ने का जब कभी काम पड़जाय तो दौड़ना तो दूर रहा चलना भी उनके लिये कठिन हो जाता है। स्त्रियां तो प्रायः पुरुषों के लिये यात्रा में एक प्रकार का बोझ हो जाती हैं सवारी न मिले तो उनके लिये बड़ी कठिनता होती है। जब मनुष्य बाहर जाते हैं और उनकी स्त्री भी उनके संग जाने के लिये कहती है तो प्रायः मैंने उनको यह कहते हुये सुना है, "मैं तुमको कहां लादे २ घूमूंगा ? मैं

तुम्हारे जाने से बंधुआ हो जाऊंगा"। है भी वास्तविक ऐसा ही, स्त्रियों से यात्रा में सहायता तो दूर रही उलटा बोझ हो जाया करतीं हैं। उनको चाहिये कि अपने स्वभावों को ऐसा बनावें जिससे अपने पतियों को सब प्रकार से सहायता दे सकें। सम्पत्ति शास्त्र (Political Economy) के अनुसार कपने २ काम को बड़ी उत्तमता से करें। गृह के जितने काम हैं उनको स्त्री स्वयं संपादन करे, पति को बाहर से रुपया कमाने आदि· का काम करने दे। आज कल हमारे भारत वासियों की दशा बड़ी शोचनीय है। स्त्रियां तो अपाहिज बनाकर बैठाल दी जाती हैं, वे तो केवल चौका वर्तन करना, रोटी बनाना जानती हैं इसके सिवाय संतान उत्पन्न करने की कल (मेशीन) हैं। यदि ग़रीब हुई तो थाड़ीही उमर में दर्जनों सन्तानें हो जाती हैं २० वर्ष की उम्र ही में बुढ़िया हो जाती हैं। बुद्धि का काम तो वे कुछ जानती ही नहीं। न तो वे घर का हिसाब रख सकी हैं और न धन का सुव्यय करना ही जानतीं हैं। रुपया प्रायः इन्हीं के हाथ में रहता है। मैंने स्वयं देखा है कदाच्चित ही कोई भाग्यशालो गृह होगा जिसमें स्त्री कुछ हिसाब जानती हो। वें प्रायः धोबी और तम्बोली आदि का हिसाब घर के किवाड़ों की चौखट या दीवारों के ऊपर चूना या कत्था की सीधी लकीरों के द्वारा लिखती हैं। हा! यह दशा देखकर मुझे बड़ा शोक होता है क्या इन्हीं की पूर्व्वजा लीलावती थीं जो गणित शास्त्र में अपना पटतर नहीं रखती थीं। स्त्रियों के मूर्ख रहने

से घरका भी काम पुरुषों ही को करना पड़ता है वह विचारा घोड़े की तरह दिनरात घर और बाहर जुताही रहता है । वे दिन चर्य्या और रात्रि चर्य्या और ऋतु चर्य्या आदि से इतनी अनभिज्ञ हैं कि घर में एक न एक रोगी सदा बनाही रहता है । विचारे पति को कमाने की फ़िकिर, घर की फ़िकिर रोगी को डाक्टर को दिखाना आदि सभी काम ऐसे रहते हैं कि विचारे का स्वास्थ्य बिल्कुल बिगड़ जाता है जिससे थाड़ेही दिनों में उसको यमराज का मिहमान होना पड़ता है ।

अमरीका जापान आदि देश क्यों उन्नति के शिखरपर पहुंच गये हैं ? इसका कारण यही है कि वहाँ गृहस्थी रूपी गाड़ी को स्त्री पुरुष दोनों पहिया बनकर चलाते हैं जिसका फल यह होता है कि वे नाना प्रकार के सुखों का उपभोग करते हुये यथार्थ जीवन का फल प्राप्तकरते हैं । यदि हमलोग भी इसी प्रकार व्यवहार करें तो फिर हम भी उसी प्रकार उन्नति कर सकी हैं । हमारी सन्तानें सुशिक्षित और उद्यमशाली होगा । यह सुनकर बहूजी बड़ी प्रसन्न होकर बोलीं,-पंडिताइन जी ! अब जिस प्रकार आप बतावेंगी उसी प्रकार मैं घरका प्रबन्ध करूंगी । यदि मेरे घरका सुप्रबन्ध हो गया तो जन्म भर आप का एहसान नहीं भूलूंगी हम लोगों को जिस प्रकार आप आज्ञा देंगी उसी प्रकार हम लोग करेंगीं आप जो प्रबन्ध उचित समझें हम लोगों को अवश्य बतावें किसी प्रकार का

संकोच न करें। मैं बाबू साहब को भी समझा दूगीं वे कुछ उजर नहीं करेंगे।

शान्ता बोली, अच्छा तो अबकी बार से जिस प्रकार मैं बताऊं उस प्रकार प्रबन्ध करना: परन्तु आप वकील साहब से दरयाफ़ कर लें ऐसा न हो कि वे नाराज़ हों, बहूजी बोलीं, तुम डरती क्यों हो ? वकील साहब तो तुम्हारी बड़ी तारीफ़ करते हैं बात बात पर तुम्हारा प्रमाण देते हैं वे तुमको कुंतली के समान समझते हैं। जब कभी आते हैं पहले तुम्हारी कुशल अवश्य पूछ लेते हैं, मुझसे कई बार कह चुके हैं कि देखो बहू को किसी प्रकार की तकलीफ़ न होने पावे। जो चीज़ अब वे घर में लाते हैं तुम्हारे लिये पहले ही रख देते हैं। दयाशंकर को भी वे पहलेही से अपने पुत्र के समान समझते हैं सदासे वे उसके ऊपर कृपा रखते आये हैं।

अब सन्ध्या होने आई। इसलिये बहू जी तथा शान्ता आदि सब अपने २ काम में लग गईं। सन्ध्या को जब टहल कर वकील साहब घर आये और जल पान करके आराम के साथ आराम कुरसी पर बैठ कर इधर उधर की बातें करने लगे उस समय उनकी स्त्री ने आकर उनसे कहा कि, बहू ने हमारे घर का कुप्रबन्ध देख कर मुझे इसके प्रबन्ध के लिये बहुत कुछ कहा सुना है। यदि आप आज्ञा दें और इस महीने से सारा प्रबन्ध हम लोगों के हाथ में दे दें तो आप

की फ़िक्र भी मिट जायगी और आप को सिवाय वकालत करने के घर का कुछ काम न करना पड़ेगा।

यह सुन कर वकील साहब हंस कर बोले, "मैं सदा से कहता चला आता हूं कि कुछ घर का प्रबन्ध कर लिया करो परन्तु तुमने मेरी बातों पर अभी तक कुछ ध्यान न दिया। अब बहू की शिक्षा लगी तब आँखें खुलीं ख़ैर जो हो सवेरे का भूला भटका यदि शाम को भी घर आ जावे तो भूला नहीं कहलाता। अच्छा बहू को बुलाओ उससे पूछेंगे कि किस प्रकार वह प्रबन्ध करना चाहती है उसी प्रकार किया जाय।

कुन्तली शान्ता को बुलाने गई और बोली, "भाभी जी चलो अम्मा बुलाती हैं बाबू जी भी बैठे हैं वे आप से कुछ पूछना चाहते हैं।

शान्ता दयाशङ्कर से पूछ कर आई और बाबू साहब और कुन्तली की माँ को प्रणाम किया। कुन्तली की मा ने प्यार से अपने पास बैठा लिया।

बाबू साहब,—बहू! लज्जा की विशेष आवश्यकता नहीं है मैं तो दयाशंकर को पुत्रवत् समझता हूं और तुम मेरे लिये कुन्तली के समान हो। जब से तुम आई हो मेरा घर सुधर चला मैं तुम से बहुत ही खुश हूं। दयाशंकर भी बड़ा सीधा लड़का है उसमें भी पहले की बनिस्बत अब कुछ होनहार

आसार नज़र आने लगे हैं। अब तेरी वजह से वह भी रात दिन किताब लिये हुये नज़र आता है। उसने हिन्दी तो थोड़े ही दिनों में इतनी पढ़ डाली है जिसकी इन्तिहा नहीं। हर चौथे या पांचवें दिन एक न एक किताब डाँक के ज़रिये से आया ही करती है मैंने भी उससे कह दिया है कि "जो किताब तुम को चाहिये डांक के ज़रिये से मंगा लो मैं सब की क़ीमत दे दिया करूंगा"। अब उर्दू में भी उसने अच्छा महावरा कर लिया है उम्मेद है कि थोड़े दिनों में उसें अच्छी लियाक़त हो जायगी। तुमने भी कुन्तली और कुन्तली की माँ को अच्छी तालीम देनी शुरू की है। ये लोग अब रामायण वग़ैरः अच्छी २ किताबें पढ़ने लग गई हैं। सुईकारी का काम भी ख़ूब करने लगी हैं। घर का बन्दोबस्त अब जैसा तुम करना चाहती हो वैसा ही किया जायगा।

शान्ता—बाबू जी ! मेरी सम्मति यह है कि आप जितनी आमदनी रोज़ लाते हैं वह सब एक बेंक में दूसरे दिन डलवा दिया करें और महीने में इकट्ठा घर के ख़र्च के लिये मंगालिया करें तो आमदनी और ख़र्च का ठीक २ पता लगेगा नहीं तो अंधाधुन्ध ख़र्च में आमदनी और ख़र्च का कुछ पता नहीं लगता। दूसरे, घर का सौदा कुछ भी उधार न आया करे क्योंकि उधार में एक तो सौदा उत्तम नहीं मिलता दूसरे दाम भी दूने पड़ते हैं। इसके सिवाय रोज़ २ सौदा मंगाने से

घर की हलकई जान पड़ती है, फिर नौकरों का राज्य हो जाता है। इन सब बातों का ध्यान रक्खा जाय तो धन भी इकट्ठा किया जासक्ता है और तकलीफ़ भी किसी प्रकार की नहीं हो सक्ती।

बाबू साहब—तो कल पहली तारीख़ है कल ही से कचहरी का जो रुपया आवेगा वह हम तुमलोगों को देदेंगे तुम लोग बेंक में भेज दिया करना। अब के महीने का तो परसों हिसाब करेंगे बनियों का सब चुकता कर दिया जायगा। लेकिन फिर इकट्ठी सौदा लाने के लिये तो रुपया नहीं है क्या किया जाय।

शान्ता—अब हलवाई और बजाज़ आदि का तो सारा हिसाब आप तोड़ दें। अकेले बनियें का हिसाब रक्खें। उससे कहदें कि तुझको भीतर ही से रुपया मिला करेगा और जो नौकर भीतर से रुक्का न लेकर सौदा लेने आवे तो लौटाल देना, दूसरे तुमको महीने भर की सारी सौदा इकट्ठी देनी होगी यदि दे सको तो तुमही दो नहीं तो हम बाज़ार से मगालेंगे और तुझको सब चीज़ें बाज़ार भाव देनी पड़ेंगी। यदि इन शर्तों को वह मानें तो जो हम लोग सौदा लिखादें आप मंगा दीजिये फिर घरका सारा प्रबन्ध हम लोग करलेंगी। महीने भर तक आपको कुछ फ़िक्र नहीं करनी पड़ैगी। यदि वह न माने तो दूसरे बनियें को बुलाकर पूछ लीजिये जो बनियां राजी हो उसीसे प्रबन्ध कर लीजिये।

बाबू साहब--हां मैं ठीक वैसा ही बन्दोवस्त करदूंगा जैसा तुम कहती हो। वकील साहब की स्त्री बोली, आजही आप बनियें को बुलादें क्योंकि यदि वह बनिया न माने तो आप अब की बार उसको दाम न दीजिये, हम उसी रुपये से बजार से सौदा मंगा लेंगी और फ़ायदा दिखाकर दूसरे महीने में हम इसी मास के ख़र्च से बचाकर बनयें का हिसाब चुकादेंगी।

बाबू—इतनी बचत तुम एक महीने में नहीं कर सकीं; हाँ पाँच या छः महीने में ज़रूर ही निकाल लोगी।

बहू जी—सच्छा आप इतना तो कीजिये मैं आप को दूसरे महीने में अपना ज़ेवर गहने रखकर बनिये का ख़र्च दूंगी। इसकी आपकुछ चिन्ता न कीजिये।

बाबू साहब—अच्छा तो मैं बाहर जाकर अभी साहजी को बुलाता हूं। यों कहकर बाबूजी ने बाहर आकर बनियें को बुलवाया। बनिया आया और बाबू साहब को सलाम करके बैठ गया।

बाबू—साहजी! मैंने तुमको आज इस लिये बुलाया है कि आज से मैं ने अपने घर का सारा हिसाब घर में दे दिया है, अब हिसाब किताब का बन्दोवस्त घर ही से होगा।

बनियां—सरकार! मोकाका चाहे आप दें चाहे घर से मिलै बाततो पकै है।

बाबू साहब—हां बात तो एकही है लेकिन इसमें दो शर्त नई हैं, वे ये हैं—

(१) एक तो तुमको सौदा सब अच्छा और बजार भाव देना पड़ेगा।

(२) दूसरे किसी नौकर को बिना रुक्का लिये सौदा मत देना। जब घरमें किसी सौदा की ज़रूरत होगी तब वे नौकर के हाथ एक रुक्के में चीज़ का नाम और तारीख़ लिख अपने दस्तख़त कर के भेज देंगी, तुम सौदा दे दिया करना। लेकिन नौकर को बिना दस्तख़त के सौदा मत देना। रुक्का इकट्ठा करके रखते जाना तुमको हर पहली ही तारीख़ को हिसाब चुकता मिलजाया करेगा। अभी तो कुछ दूसरे महीने के लिये बक़ाया भी रहा जाता है, लेकिन अबकी बार से तुमको बोलना नहीं पड़ेगा सारा हिसाब चुकता होजाया करेगा।

बनियां—सरकार मोका पहली बात में कुछ उजुर नाहीं है मैं सौदवा अच्छा और बज़ार भाव देंहों, मुदा रुक्का उक्का का झगड़ा है जैसे सौदवा आवत रहा वैसिन मोसे सरकार लै लिहा करें। आप के नौकर चोर नाही हैं। पुन सरकार मोसे रुक्कवा पढ़ौ न जाई। मैं तो हिन्दुई बहुत नाहीं पढ़ा हौं।

बाबू साहब—मैं जानता हूं तुम हिन्दी बख़ूबी पढ़ लेते हो क्योंकि उस दिन जब मैं तुमारी दुकान के पास से होकर निकला था उस वक्त तुम रमाइन पढ़ रहे थे। बस उसी

तरह के हरूफ़ों में साफ़ हिन्दी २ लिखी हुई तुमारे पास आया करेगी। जैसे रुक़े पर दस्तख़त होंगे वह मैं तुम को पहले दिखला दूंगा।

बनिया—सरकार मोसे ऐसा न होई। मैं ईझंझट में न पड़िहों, मैं आपन सौदा बिचहों कि रुक़वा पढ़ावत फिरहों पुन खोइ जाय तो मोर नुकसान होई। ऐसे न करिहों।

बाबू साहब—अच्छा अगर इन शर्तों पर राज़ी नहीं हो तो जाओ मैं दूसरे बनिये को बुला कर उस से तै करूंगा। अच्छा तुमारा हिसाब अगले महीने की पहली तारीख़ को मिलेगा। इस महीने में तुम को कुछ न मिलेगा क्योंकि नये बनिये से ही जब हम को हिसाब खोलना है तब फिर हम तुमारा हिसाब नहीं दे सकेंगे।

बनियाँ—सरकार! फिर ई महीना में मोर कैसे काम चली? मोका ई महीना में हिसाब न मिली तो दुकान की सौदा कैसे लइहों?

बाबू—मैं नहीं जानता किस तरह तुम अपना काम चलाओगे। अच्छा जाओ मैं भी जाता हूं। अन्दाज़न तुमारा इस महीना का क्या निकलेगा सो बतलाओ।

बनियाँ—१५०) रु० निकली हैं।

बाबू—अच्छा मैं अब दूसरे बनिये को बुलाता हूं क्योंकि तुम से तो जवाब मिल चुका। मुझे आज ही सौदा बाज़ार से मंगा लेना है क्योंकि कल पहली तारीख़ है। अब

अब तक बनिया यह समझता था यदि मैं हठ करूंगा तो बाबू साहब हिसाब करदेंगे और पहले की तरह सौदा मंगाते रहेंगे परन्तु यहां तो मामला बदल गया जब उसे ठीक २ पता लग गया कि यदि वह रुक्के पर और बाज़ार भाव सौदा न देगा तो अवश्य दूसरा बनिया लगा लिया जायगा क्योंकि बाबू साहब उसी के सामने दूसरे बनिये को बुलाने की आज्ञा दे रहे थे।

बनियाँ—अच्छा सरकार! मैं बहुत दिनन से सरकार का नमक खाये हौं। जैसे बनी तैसे सरकार का हुकुम मनिहौं औ सौदवा कल देइहौं। मोका सौदवा मालूम हुइ जाय कौन २ सौदवा चाही। मैं कल बजार से लाइ रखिहौं।

बाबू साहब—अच्छा हम घर में पूछ लें कि कौन २ सी सौदा चाहिये उसका रुक्का तुमको दे दिया जाय।

यह कह कर वकील साहब घर में गये और कहने लगे कि बनिया तो आगया है और उससे सारा हाल कह दिया। पहले तो वह सौदा देने पर राजी न हुआ लेकिन जब मैं दूसरा बनियां बुलाने लगा तब राजी होगया और रुक्का मागता है कि कौन २ सी सौदा चाहिये जिस से वह कल भेज देवे।

कुंनली की मा शान्ता से पूछने लगी, कौन २ सी सौदा चाहिये ?

शान्ता—इस समय तो बनियें को जाने दीजिये। हम लोग अब सलाह कर डालें और जिस २ सौदा की आवश्यकता होगी

उसी का रुक्क़ा बनाकर बनियें के यहां भिजवा दिया जायगा क्योंकि यदि उसको देरतक बैठाला जायगा तो उसका बड़ा हर्ज होगा।

बाबू साहब—हां बहू ठीक कहती है इस समय तुम लोग सलाह करके ज़रूरी सौदा लिखडालो मैं उस रुक्क़े को पीछे भेजदूंगा।

यों कह कर वकील साहब बाहर चले गये बनिये से भी जाने के लिये कह दिया कि रुक्क़ा पीछे भेज दिया जायगा।

बनियां चला गया। शान्ता कुन्तली और वकीलाइन बैठ गईं और हिसाब होने लगा। शान्ता ने कहा, सौदा इतनी मंगाई जाय कि महीने के भीतर फिर किसी चीज़ की ज़रूरत न हो। अब फ़िहरिस्त बनकार हिसाब होने लगा। हिसाब के बाद यह निश्चय हुआ कि बनियें के यहां से सौदा केवल साठ रुपये का मंगवाया जाय; क्योंकि घर के खानेवाले वकील साहब के यहां केवल तीन आदमी थे परन्तु रिश्तेदार और मिहमान आदि आजाया करते थे इससे कुछ अधिक सौदा मंगाने की आवश्यकता पड़ती थी। शान्ता ने फ़िहरिस्त (सूची) बनाकर वकीलाइन को दिखलाई और कहा कि और किसी चीज़ की ज़रूरत हो लिखदीजियेगा। कम करना हो तो इसमें से काट दीजिये। तब कुन्तली और उसकी मा ने कहा, कि सब चीज़ें ठीक हैं। शान्ता बोली, यदि पीछे कम भी हो जायँगी तो क्या फिर आनहीं सकी?

परन्तु कोशिश यही करनी चाहिये कि महीने के भीतर अब किसी चीज़ की ज़रूरत न हो। जब फ़िहरिस्त बनकर तय्यार हो गई तब वकील साहब को बुलाकर दे दी। जिसको पढ़कर वकील साहब बड़े अचम्भे में आये और बोले, कि और सब चीज़ तो ठीक है परन्तु ये दवाइयाँ क्यों इसमें लिखी गई हैं? शान्ता ने उत्तर दिया, ये सब वस्तुयें हर गृहस्थ को घर में रखना चाहिये, इन वस्तुओं से जो लाभ होगा वह आप को पीछे मालूम हो जायगा। फ़िहरिस्त इस प्रकार दी गई थी।

घर का खर्च

१५)	घी	१)	मसाला धनिया वग़ैरह
१५)	गेहूं	३)	बादाम
१)	चना	२)	फुटकर मेवा
४)	चावल पुराना	१)	हर्र छोटा
१)	दाल उर्द की	१)	सोंठ
२)	दाल अरहर की	३)	चीनी
१)	मूंग	२)	तेल कड़ुआ
।)	नमक	१)	तेल मीठा
१)	सूजी	।)	इलायची

हवन की सामिग्री

)॥	छोटी इलायची	)॥	अश्वगंध
=)	केसर	)॥	सोंठ
)॥	बालछड़	)॥	गुर्च
)॥	झाड़ छड़ीला	)॥	मुरेठी

)॥	नागर मोथा	)॥	अगर
)।	कपूर कचरी	)॥	तगर
)॥	बेल गिरी	)॥	देवदार
)॥	इन्द्र जौ	–)	सफ़ेद चन्दन
)॥	सुगन्ध बाला	)॥	लाल चन्दन
)॥	गिरी	=)	बादाम
)॥	चिरौंजी	)॥	छोआरा
–)॥	पिस्ता	)॥	मखाना
)॥	जावित्री	=)	चंदनका बुरादा
१॥)	कस्तूरी	।)	चांनी
१)	घी		

बनिये के पास वकील साहब ने रुक्का भेज दिया। दूसरे दिन सारी चीज़ें आ गईं। एक रुक्के में सौदे के भाव की क़ीमत भी दी हुई थी। दूसरे दिन से शान्ता ने अपना प्रबन्ध करना शुरू कर दिया लकड़ी आदि जो २ सौदा आनी थी वह भी सब मंगाली। शान्ता ने वकीलाइन को बदाम का हलुआ बनाना सिखा दिया था। उसने सवेरे नित्य क्रिया से सुचित्त हो बादाम का हलुआ बना दिया और वकील साहब के लिये एक छोटी थाली में रख कर लेगई। वे पूछने लगे यह क्या है बोली, बादाम का हलुवा है यह आप को फ़ायदा करेगा

सबेरे यही आप के लिये बना दिया जाया करेगा। आप अब हलवाई के यहां से कोई चीज़ न मंगावे जब जिस चीज़ पर मन चले तुरन्त बतलाइये वही चीज़ आप के लिये तय्यार कर दी जाया करेगी क्योंकि एक तो घर की मिठाई ताज़ी बनेगी दूसरे सफ़ाई रहेगी क्योंकि हलवाई बड़े मैले रहते हैं इसी वजह से बहुत से लोग तो बज़ार की मिठाई ही से बीमार पड़जाते हैं।

बाबू साहब–यदि कोई मिहमान आजावे तब तो बाजार से मिठाई मगानी ही पड़ेगी इतनी जल्दी तुम कैसे तय्यार कर सकेगी।

बहूजी—अबसे आप हमेशा घरमें कई प्रकार की मिठाई और नमकीन चीज़ें तय्यार पावेंगे।

वकील—तो क्या तुम सब चीज़ें बनाना जान गईं? क्या बहू इन सब को बनाना जानती है?

बहूजी—जितनी मिठाई आदि बहू बनाना जानती है उतना तो कोई होशियार हलवाई भी न जानता होगा। उस ने सब चीज़ों का बनाना हम लोगों को भी सिखा दिया है।

वकील—बहू तो पूरी लक्ष्मी ही है। ईश्वर करे इस की उम्र दराज़ हो। देखो उस को किसी तरह की तकलीफ़ न होने पावे रुपये पैसे की जिस चीज़ की उसे जरूरत पड़े फ़ौरन उस को देना उसे तुम कुन्तली के सामान प्यार किया करो। मेरी समझ में उस को इनाम के तौर पर एक गहना

बनवा दो क्योंकि औरतें गहनों से बड़ी खुशी रहती हैं।

पत्नी—मैं आप के बिना पूछे ही उसके लिये सोने की कंठश्री बनवाने को थी, जब मैंने उससे पूछा तब वह बोली- मैं तो इन नकली गहनों को पसंद नहीं करती, मुझे तो विद्या और गुणों के गहनों की रुचि है। विद्या और गुणों से मनुष्यों के मुख पर एक प्रकार का तेज झलकने लगता है जिस के सामने सारे गहनें फीके पड़ जाते हैं। गहनों से मूर्खता प्रगट होती है। दो एक गहनें बहुत हैं। आज कल भारत वर्ष की स्त्रियां तो गहनों को अपना प्राण समझती हैं, पति का रात दिन नाकों में दम किये रहती हैं, सैकड़ों घरों में कलह का कारण यही गहना है। आजकल तो पति पत्नी के प्रेम ने गहनों का रूप धारण कर लिया है। भारत वर्ष के पतित होने में स्त्रियों का गहना भी एक कारण है क्योंकि गहनों से स्त्रियों में अभिमान आजाता है। जिन स्त्रियों के पास गहना नहीं होता चाहे वे कितनी ही गुणवती क्यों न हों परन्तु उन्हें सब स्त्रियां अनादर का दृष्टि से देखती हैं। जिन स्त्रियों के पास गहना नहीं रहता वे म्लानि मुखी हो जाती हैं। यदि किसी के घर कुछ उत्सव हो और वहां बहुत स्त्रियां इकट्ठी हों तो पहले तो गहनों की दिखउल होती है उसके पश्चात् उनका मुख्य विषय गहना ही रहता है। जो स्त्रियाँ वहाँ गहना पहिन कर नहीं जातीं या जिनके पास सुवर्ण के कीमती गहने नहीं होते उनसे कोई बोलता ही नहीं जिसके

पास उत्तम गहनें होते हैं उसके पास सब बैठ कर उस की बातों को बड़े चाव से सुनती हैं और फिर जब अपने २ घर लौटती हैं तब घर में आते ही मुंह लटका लेती हैं। किसी काम में उनका मन नहीं लगता। पति के आने पर उनसे गहनों के लिये कहती हैं कि हम को भी गहना बनवा दो परन्तु यह नहीं जानतीं कि उसकी हैसियत बनवाने की है या नहीं। जब वह कहता है कि मेरी शक्ति नहीं है कि मैं ऐसा कीमती गहना बनवा सकूं तब उसके पीछे वे पड़ जाती हैं और घर में कलह करना प्रारंभ कर देती हैं। इतनी तो बेसमझ हैं कि, सरासर जानती हैं कि रुपया पैसा उन्हीं के पास रहता है पति नौकर है और सारी तनख्वाह पहली ही तारीख को ला कर उन्हीं के हाथ में रख देता है फिर वह विचारा कहां से उनको गहना बनवा दे। यदि एक आध गहना बनवा भी दिया तो क्या उस से संतोष होता है; इच्छा बढ़ती ही जाती है अर्थात् नित्यप्रति कलह बना ही रहता है। एक के घर में जब उत्सव होता है तब सैकड़ों के घरों में कलह हो जाता है, यही नहीं, उत्सव की समाप्ति पर उसके स्वयं गृह में कलह देव जी का दौरा होता है क्योंकि उसके इहां भी तो स्त्रिया नाना प्रकार के गहनें पहिन कर आती हैं।

(२) जिन स्त्रियों को उत्सव में जाना होता है यदि वे ग़रीब हुईं तो वे अपने अपमान बचाने के लिये अपने पड़ोसियों तथा रिश्तेदारों से गहना माँग लेजाती हैं। एक तो

उनको पहिनने का अभ्यास नहीं होता दूसरे वह गहना नाप का भी नहीं होता जिस कारण प्रायः गिर जाता है और फिर उसका रुपया भरने में बरसों सारे घर को क्लेश सहना पड़ता है।

(३) गहना चोरों के लिये न्योता देता है अर्थात् उस को देख कर चोर भी ललचा कर घर का मुलाहिज़ा करने की इच्छा करने लगते हैं।

(४) गहनों में जो रुपया फसा दिया जाता है उसका बढ़ना तो अलग रहा पूंजी भी आधी हो जाती है। बालकों को पहिनाने से सैकड़ों बालकों की जानें गहने ही के कारण गई हैं। इस लिये गहनों में रुपया फंसाना व्यर्थ है। अधिक रुपया हो तो बेङ्क में रखना चाहिये, जिसमें न तो चोरों का डर है और न रुपये में नुकसान है; बल्कि रात दिन व्याज के द्वारा रुपया बढ़ता ही रहता है। इस प्रकार समझाती हुई शान्ता ने उनको एक सच्चा किस्सा भी सुनाया जो ऐतिहासिक सच्चा वृतान्त है कि रोम में ग्रीकआई की मा दो बहिनें थीं छोटी का नाम कारनीलिया था वह अमीर घराने में व्याही गई थी और ग्रीकआई की मा गरीब घर में। कारनीलिया के कोई संतान नहीं थी। वह एक बार बड़ी बहिन के यहां गई और जाते ही कुशल पूछने के पश्चात् अपना सारा जवाहिरों से जड़ा हुआ गहना दिखाने लगी उसकी बड़ी बहिन पढ़ी लिखी चतुर थी वह बोली हां बहिन ये गहने तेरे बड़े सुन्दर हैं। तब कारनी-

लिया पूछने लगी आपके पास कौन २ से गहने हैं मुझे दिखा-इये यद्यपि वह जानती थी कि यह ग़रीब है इसके पास इतन कीमती गहने कहां से आये परन्तु वह फिर भी न मानी और दिखलाने के लिये ज़िद्द करने लगी। तब उसने उत्तर दिया मेरे गहने तुम्हारे गहनों से भी ज़्यादा कीमती हैं परन्तु दो घंटे बाद दिखाऊंगी क्योंकि इस समय मुझे आवश्यक कार्य्य करना है यों कह कर उसने ज्यों त्यों दो घंटे बिताये। तीन बजे बाद उसके दो लड़के पाठशाला से पढ़कर लौटे। आतेही मा ने उन्हें चूम कर गोद में बैठा लिया और बोली देखो बहिन! येही मेरे गहने हैं। ये असली और सच्चे गहने हैं तुम्हारे गहने तो नकली हैं यह तो तुम्हारे ऐसे सैकड़ों गहने पैदा कर लेंगे यह उत्तर सुन कारनीलिया लज्जित होगई। इसमें कोई संशय नहीं उस माता ने सच्चे सपूत और देशभक्त पुत्र उत्पन्न किये थे। वे दोनों युवक सच्चे देशभक्त होकर अपने देश के कल्याण के लिये अपने जीवनों को तृणवत समझ कर न्यौछा-वर कर गये। जिनका नाम जब तक रोम का इतिहास संसार में विद्यमान रहेगा तब तक उनके नाम इतिहास के पत्रों पर सुवर्णाक्षरों में अवश्य अङ्कित रहेंगे। इस लिये स्त्रियों को विद्या और गुण के उत्तम गहने स्वयं पहिनने और संतान को पहिनाना चाहिये इसलिये बहू कभी नकली गहनों को पसंद नहीं करेगी। यह सुन कर वकील साहब बोले धन्य है बहू जैसी स्त्री तो शायद ही दुनिया में मिले?

पत्नी- उसे किसी बात का शौक नहीं है, न तो वह पान खाती है और न किसी प्रकार का व्यसन रखती है। एक बार मैं जब उसे पान देने लगी वह बोली मैं नहीं खाती। मैंने पूछा क्यों? तब वह बोली किसी प्रकार का नशा नहीं करना चाहिये; मनुष्य को साधारण रहना चाहिये। जितनाही मनुष्य इन शौकोंसे बचेगा उतनाही सुखी रहेगा, फिर बोली मैंने बहुत सी स्त्रियों को पान और तमाखू खाते देखा है, वे जहां बैठती हैं वहीं इधर उधर थूक देती हैं, मुंह उनका कभी साफ़ नहीं रहता प्रायः गंधाता रहता है दाँत भी मैले हो जाते हैं क्योंकि तमाखू तो ज़हरीली चीज़ है उससे फेंफड़े ख़राब होजाते हैं इसके खाने से लोग नाना प्रकार के रोगों में फंस जाते हैं जिस से स्वास्थ्य बिगड़ जाता है और थोड़ेही दिनोंमें यमराज का मिहमान बन जाता है। बहुत सी स्त्रियों को पान का ऐसा स्वभाव पड़ जाता है कि उनको एक घंटे भी बिना पान के चैन नहीं पड़ता। मनुष्य को देखो कैसा मूर्ख है एक तो पैसा खर्च करता है; दूसरे रोग मोल लेकर क्लेश को न्योता देता है बहू के कहने से मैंने भी पान तमाखू छोड़ दी। वकील साहब बहू की सराहना करते हुये अपने काम में लग गये। सन्ध्या को आते ही वकील साहब को जल पान के लिये नमकीन उत्तम वस्तुयें तय्यार मिलती थीं॥

इस प्रकार शान्ता ने सारे घर का प्रबन्ध कर दिया। धोबीको कपड़े हर आठवें दिन घरही से मिलने लगे। वकील

साहब को कभी साफ़ कपड़ा नहीं मांगना पड़ता था। जभी उन की पत्नी ने उन का कुछ भी मैला कपड़ा देखा तुरन्त ही दूसरा निकाल कर रख दिया। कोट में रूमाल डाल दिये घर के नौकर कभी सुस्त नहीं होने पाते थे। घर में जिधर देखो वहीं सफ़ाई। जहाँ कच्ची ज़मीन थी वहाँ तो ज़मीन में और जहाँ पक्की ज़मीन थी वहां गमलों में नाना प्रकार के पौधे लगा दिये थे। दरवाज़ों की मिहराबों पर अंगूर आदि की सुन्दर सुन्दर बेलें बड़ी सफ़ाई और कारीगरी से चढ़ा दी गई थीं। घर के बर्तन सब अच्छी तरह से मजे हुये एक ऊंची चौकी पर सजे रखे थे। भंडार घर ऐसा अच्छा था मानों किसी अच्छे बनिये की दुकान सजी हो। रसोई घर इतना साफ़ और सुन्दर लगता था कि वहां हर एक का थोड़ी देर बैठने को मन चलता था॥

वकील साहब का घर अब छोटा अजायब घर सा जान पड़ता था झाड़ू तक अपने स्थान पर सजा हुई रखी दिखाई देती थी। पनहड़े की ओर देखने से पानी पीने का मन चल आता था; सुन्दर २ साफ़ घड़ों पर सफ़ेद और स्वच्छ कपड़े के टुकड़े छान कर पानी पीने के लिये पड़े हुये थे क्योंकि शांता खाने पीने की वस्तुओं की सफ़ाई पर विशेष ध्यान देती थी। वैद्यक के अनुसार ऋतुओं के अनुकूल भोजन बनाया जाता था। तामसी भोजन तो कभी रसोई में लाया ही नहीं जाता था। लहसुन प्याज आदि सारे भोजन शान्ता ने बन्द करवा दिये थे। पहले वकील साहब प्रायः मांस भी खाया करते थे

क्योंकि कायस्थों में इस का रिवाज ही है। परन्तु शान्ता ने आते ही वकीलाइन को उस के दोष दिखा कर उसे बन्द करवा दिया था। एक दिन बाबू साहब ने पूछा कि माँस क्यों नहीं पकता? उस समय शान्ता भी दैव सयोग से वहां बैठी थी। उस ने बतलाया कि मांस खाना बड़ा पाप है इस को नहीं खाना चाहिये। तब बाबू साहब बोले बकरे वग़ैरः तो खुदा ने खाने ही के लिये पैदा किये हैं। मांस खाने से ताक़त होती है और यह बड़ा अच्छा लज़ीज़ खाना है, एक बार मनुष्य खाले तो फिर अवश्य आदत पड़ जाती है, पाप कहो तो यह बिरहमनों की धमकी है; जिस को इन्होंने अच्छा समझा उसको जाइज़ कर दिया और उसमें पुण्य बतला दिया और जिसको बुरा समझा उसको पाप बतला कर मना कर दिया। शान्ता ने उत्तर दिया अच्छा आप मांस खाने के दोषों को सुन लीजिये फिर आप ही न्याय कीजियेगा कि माँस खाना अच्छा है या बुरा:—

(१) पाप पुण्य को जाने दीजिये आप अपनी आँखों से देखते हैं जिस जीव को आप मारते हैं तब वह कैसा तलफता है? पहले तो भागने की कोशिश करता है फिर जब निर्दय हाथ से छुरी लग ही जाती है तब थोड़ी देर तक उसकी लाश तड़फड़ाती है न जाने ऐसा कठोर चित्त लोगों का क्यों हो जाता है क्या वे अपने दुःख को भूल जाते हैं यदि उनके ज़रा सी सुई चुभ जाती है या कलम बनाने में चाकू लग जाता है

तो हाय २ चिल्लाते हैं और पनकपड़ा बांधते फिरते हैं किन्तु जब किसी जीव की गर्दन पर तलवार की धार पड़ती है तब उसके लिये अपना चित्त पत्थर के समान कड़ा बना लेते हैं॥

(२) जो हिन्दू हैं वे तो अपने धर्म शास्त्रों को मानते हैं धर्म शास्त्र में मनुजी ने मांस खाने को मना किया है लिखा है :—मारने वाला, बनाने वाला, खाने वाला इत्यादि आठ प्रकार के मनुष्य सब नर्क को जाते हैं। योग शास्त्र में पतञ्जलि मुनि भी मांस खाना पाप बतलाते हैं। व्यास जी तो इसको बहुत ही बुरा कहते हैं अर्थात् सब ऋषि मांस खाने को बुरा ही बतलाते हैं॥

(३) आज कल विलायत के बड़े २ डाक्टरों ने भी माँस खाना बुरा सिद्ध किया है, वे बतलाते हैं मनुष्य अन्न और फल खानेवाला जानवर है, जिस के लिये वे नीचे लिखे प्रमाण देते हैं :—

(१) मनुष्य के दांत अन्न फल और बनिस्पति खाने वाले जानवरों के समान बनाये गये हैं॥

(२) मनुष्य तथा घास खाने वाले जानवर को पसीना आता है; परन्तु मांस खाने वाले जानवर के नहीं आता॥

(३) मनुष्य और घास खाने वाले जानवरों को अधिक थूक होता है परन्तु मांसाहारियों को नहीं होता॥

(४) मनुष्य और घास खाने वाले जानवर घूंट कर पानी

पीते हैं परन्तु मांसाहारी जानवर जीभ के द्वारा चपर २ कर के पानी पीते हैं॥

(५) जो बनिस्पति खाते हैं वे देर तक अधिक परिश्रम कर सक्ते हैं क्योंकि उनमें दम अधिक होता है। परन्तु मांसाहारी जल्द थक जाते हैं॥

(६) मांसाहारी जानवर क्रोधी और आलसी होते हैं परन्तु बनिस्पति खाने वाले जानवर सहनशील और अधिक नम्र होते हैं॥

(७) मांस खाने वाले मनुष्यों के पसीने और मुख में बड़ी दुर्गन्ध आती है। इस के सिवाय ईश्वर को लगाई हुई इस जीव रूपी फुलवाड़ी को किस को अधिकार है कि इस को उजाड़े। वकील साहब इसका उत्तर न दे सके और बोले अच्छा अब आज से मांस न खायेंगे। अगर शास्तर में खाना नहीं लिखा तो हम हरगिज़ न खायेंगे॥

इस प्रकार धीरे २ शान्ता ने सब को धार्मिक बना दिया। हवन की सामग्री जो आई हुई रक्खी थी उसको कुटवा कर उसमें चीनी मिला एक डिब्बे में रखवा दी और घी को गरम करके उसमें केसर मिला कर रख दिया। आम की लकड़ियों को पतला २ चीर कर एक दौरी में रख दिया। शान्ता ने पहिले वकीलाइन को सन्ध्या और हवन करना सिखाया और वकील साहब को उन की पत्नी ने सिखा दिया। वकील साहब अब

नित्य हवन करने लगे उन में दानशीलता भी आगई और धार्मिक पुस्तकें भी देखने लगे ॥

एक मास के बाद शान्ता ने ३३५) रु० बैंक में भेजे। इस प्रकार वकील साहब के घर का प्रबन्ध उत्तरोत्तर उत्तम होता गया। साल भर के भीतर वकील साहब के ४०००) बैंक में जमा होगये। वकील साहब से रुपयों का हिसाब कुछ नहीं बताया जाता था। जब बेङ्क से साल भर के बाद ४०००) रुपये की रसीद आई तब तो वकील साहब की आंखें खुल गई और मारे खुशी के फूले न समाये। शान्ता की बड़ी ही तारीफ़ करने लगे कि धन्य है वह माता पिता जिसकी कोख में से ऐसी लक्ष्मी उत्पन्न हुई ॥

सातवां अध्याय।

दयाशङ्कर जी ने जब हिन्दी भाषा में अच्छा अभ्यास कर लिया तब आप को उर्दू सीखने की इच्छा हुई आप पहिली पुस्तक से अभ्यास करते हुये अब अच्छी उर्दू जान गये थे। लिखने में भी आपने भली प्रकार अभ्यास कर लिया था। पढ़ने में तो चाहे जैसी शिकस्ता उर्दू हो ये उसे तुरन्त पढ़ लेते थे। मुहर्रिरी का काम अच्छी तरह कर लेते थे क्योंकि मुहर्रिर अपने काम में प्रायः इनकी सहायता लिया करता था। जब २ वकील साहब का मुहर्रिर बीमार पड़ता था; तब तब येही काम को सम्भालते थे। आमदनी भी इनको अधिक होने लगी थी क्योंकि तहरीर वगैरः में इनको लिखाई मिल जाती थी। एक बार मुहर्रिर १५ दिन तक बीमार होगया उनके स्थान पर येही काम करते रहे अन्त में मुहर्रिर के मर जाने पर वह १५) रु० मासिक की जगह इनको ही मिल गई। इन्होंने ताज़ीरात हिन्द देख कर सारे कानून जान लिये थे। कभी कभी वकील साहब को भी मुक़द्दमों में बहुत कुछ सहारा दे देते थे क्योंकि इनकी बुद्धि बड़ी तेज़ थी और क़ानूनी दिमाग़ भी था। अब इन्होंने अङ्गरेजी भी पढ़ना प्रारम्भ कर दिया क्योंकि एक मास्टर साहब वकील साहब के बड़े मित्र थे वे प्रायः उनके पास आया करते थे उन्होंने अवसर पाकर एक रोज़ बड़ी नम्रता

पूर्वक मास्टर साहब से कहा—कि मास्टर साहब ! हम कुछ अङ्गरेज़ी पढ़ना चाहते हैं यदि आप कुछ थोड़ा समय भी कृपा करके मुझे पढ़ने के लिये दे देंवे तो बड़ी कृपा होगी। मास्टर बोले—अच्छा पंडित जी हम आप को पढ़ा देंगे लेकिन आपको रात्रि के समय मेरे मकान पर आना पड़ा करेगा। ये बोले हां साहब यदि आप आधी रात को बुलावेंगे तब भी हम आप के पास पढ़ने अवश्य आया करेंगे।

ये ७ बजे रात्रि को पढ़ने जाते और १० बजे लौट आया करते। १०॥ बजे जाते और सवेरे चारही बजे उठ बैठते थे। उस समय ये अङ्गरेज़ी पढ़ते, हिसाब करते, भूगोल और इतिहास वग़ैरः भी पढ़ा करते थे, इस प्रकार की ढाई बरस की मिहनत में इनको अङ्गरेज़ी अच्छी तरह लिखने पढ़ने की शक्ति होगई। उस समय कानून का प्राइवेट इम्तहान हुआ करता था। ये अंगरेज़ी में कानून पढ़ने लगे। उर्दू में ताज़ीरात हिन्द पढ़ ही डाली थी, कानून तो सब जानते ही थे अङ्गरेज़ी में तय्यार करके इन्होंने वकालत का इम्तहान दे दिया। ईश्वर की कृपा से बहुत अच्छे नम्बर में पास होगये। अब क्या था वकील होगये। बहुत दिन तक तो अपने वकील साहब के साथ ही वकालत करते रहे। इनकी वकालत भी अच्छी चलने लगी क्योंकि मुकद्दमों को समझते अच्छा थे। इन्होंने अपना आगरे ही में एक बड़ा मकान बनवाया। जो बड़े अच्छे बाग के बीच में था।

आइये पाठकगण ! मैं आज आपको पं० दयाशंकर जी के मनोहर उपवन की सैर कराऊं। यह बाग़ शहर से एक मील की दूरी पर एक बड़े एकान्त स्थान में सड़क के किनारे पर था। इस बाग को सजाने के लिये बड़ी २ दूर के नामी माली बुलाये गये थे। इस रमणीय उपवन के चारों ओर मील भर की लम्बाई चौड़ाई में एक चहार दीवारी खिंची है जिसमें दो २ गज की दूरी पर मिहराबदार खिड़कियां लगीं हैं। खिड़कियों के ऊपर उत्तम २ फूलदार लतरें दौड़ रही है जो सदा हरी बनी रहती हैं। उत्तर की चहार दीवारी से चार २ गज़ के फांसले पर आम और जामुन के वृक्ष लगे हैं। प्रत्येक आम और जामुन के बीच में दो खिड़कियों का अन्तर है यदि बाग़ के फाटक बन्द भी हो जाँय तो लोग बाग़ की कुछ शोभा खिड़कियों के बीच से भी देख सकते हैं परन्तु भीतर नहीं आ सकते; क्योंकि प्रत्येक में लोहे की छड़ें लगी हैं यदि बाग़ को बिलकुल बन्द करना चाहें जिससे कोई कुछ देख न सके तो खिड़कियों के सारे किवाड़ और फाटक बंद कर दिये जांय तो फिर बाग के भीतर का कुछ नहीं दिखाई दे सकता सिवाय ऊंचे २ वृक्षों और भवनों के जो बाग़ में बने हैं। आम और जामुनों के वृक्षों से २० हाथ की दूरी पर आमने सामने फिर उन्हीं वृक्षों की पट्टी लगाई गई है। आम के सामने आम और जामुन के सामने जामुन बड़े सुहावने जान पड़ते हैं। मानों दोनों ओर के वृक्ष प्रसन्नता से हाथ मिलाते हों। आम

और जामुन के वृक्षों की पट्टियों के बीच एक आठ हाथ चौड़ी पक्की सड़क गई है जो बाग के कोने तक जाकर दाहिनी ओर को फिर घूम गई है। इस प्रकार बाग़ के चारों ओर इन्हीं तीन प्रकार के वृक्षों की पट्टियां सड़क की शोभा को बढ़ा रहीं हैं। जब बसन्त ऋतु में उन वृक्षों की डालियों पर कोयल कूकती थी उस समय बड़ा आनन्द आता था। पचास २ गज़ की दूरी पर दोनों ओर वृक्षों के नीचे सुन्दर कुरसीनुमा बेंचें पड़ी थीं, जिन पर दर्शक आकर प्रायः विश्राम लेते हैं। इस बाग में ८ फाटक हैं चार तो चारों कोनों के पास और एक २ बीच में। उत्तर की ओर बीच में सदर फाटक है जो लोहे के सुन्दर जालीदार जंगलों का बना है फाटक के दोनों ओर दीवालों के कोनों पर आमने सामने दो सुन्दर पत्थर के मोर बैठे हैं जिनका रंग ठीक असली मोरों के रंग से मिलता है दूर तो क्या निकट से भी लोगों को भ्रम हो जाता है कि ये असली मोर हैं या नकली।

सड़क की बाईं ओर आम और जामुन की पट्टी से लेकर १० हाथ की दूरी पर बाग़ के भीतर की ओर करौंधों की झाड़ी लगी है। जिस में रंग बरंगके फल लगे हुये हैं। करौंधों की झाड़ियां बीस २ हाथ तक लम्बी चली गई हैं फिर उन दोनों के बीच १॥ गज़ चौड़ी सड़क से मिली पगडंडियां गई हैं जो इधर सड़के से मिली हुई हैं। करौंधों की झाड़ी से मिली हुई एक २ गज़ चौड़ी हरी दूब की पट्टियाँ पगडं-

ड़ियों और उन सड़कोंके लिये स्थान छोड़ती हुई बागके चारों ओर दौड़ गई हैं। उन पट्टियों के बीच रंग बरंगे पुष्पों का लहरिया क्या ही अच्छी शोभा दे रहा है और ये नन्ही २ घास की पट्टियां भी गोट बनकर लहरिये की शोभा को दूनी कर रही हैं। फिर बाईं ओर की पट्टी से लगी हुई एक और ६ हाथ चौड़ी सड़क गई है। सड़क के बाईं ओर ऐसाही पट्टियों सहित एक और लहरिया जाता है जिस से सड़क बड़ी ही सुन्दर जान पड़ती है। इस सड़क और आम के बीच वाली सड़क से ये ही पगडंडियां करौंधों की झाड़ियों को विभाजित करती हुई आकर मिलती हैं जिनका वर्णन ऊपर हो चुका है। बाग के पूर्व्व की ओर बीच वाले और कोने के फाटक के बीच २० हाथ लम्बा और उतनाही चौड़ा एक पक्का सरोवर बना है जिस में संगमरमर की सीढ़ियां लगी हैं। इस सरोवर के चारों ओर आमों का कुञ्ज है जो सरोवर की शोभा को द्विगुण कर रहा है वहीं पर कुछ केलों के वृक्ष भी लगे हुये तपो भूमि का स्मरण दिला रहे हैं। इस तड़ाग में बहुत ही स्वच्छ और निर्मल जल भरा है। सब से ऊपर की सीढ़ी अधिक चौड़ी बनी है इस सरोवर के चारों कोनों पर पत्थर के गोल २ स्थान बने हैं जिन पर बैठकर लोग प्रायः संध्या करते हैं। जो बाग की सैर को जाता है वह इस सरोवर की शोभा देखकर अवश्य मोहित हो जाता है। विशेष कर भक्तिमय हृदय तो उछलने लगते हैं, उन के हृदय में आनन्द की हिलोरें उठने लगती हैं

और वे इस एकान्त स्थान में बैठकर कानन सुख अनुभव करना चाहते हैं।

दूसरी सड़क के किनारे २ पचास २ गज की लम्बाई के कई गाटे हैं। किसी में तो अमरूद, सीताफल, गुलाब और जामुन आदि के वृक्ष लगे हैं, जिनमें से कुछ में तो बड़ेही सुन्दर फल लटकते हैं जिनको देख कर चित्त लोभायमान हो जाता है। आगे चलकर दूसरे गाटे में नारंगी, चकोतरा, नींबू, संतरे, आदि फलों के वृक्ष अलग ही प्रकृति देवी की रचनाको प्रकट कर रहे हैं, अहा! इधर देखो ये लङ्गड़ा, फ़ज़ली, मालदा, बम्बइया, मोहनभोग, कृष्णभोग आदि आमों के वृक्ष कैसे बौराये हुये हैं इनमें से भीनी २ सुगन्ध निकल कर चित्त को कैसी आह्लादित करती है, आम्रमंजरियों पर बैठे हुये भौंरे भनभना रहे हैं। हरे पत्तों के बीच से निकल कर पुष्पवत् ताम्र किशलय रसाल वृक्ष की शोभा को द्विगुण कर रहे हैं। अहा! यह आमनी बौर संभारिता हो गर्भवती नवबधू के समान लज्जा से झुकी जाती है। कोकिल भी एक डाली पर पत्तों के बीच बैठी हुई अपने पंचम स्वर से ऋतुराज की बधाई गा रही है। एक गाटे में सेब, नासपाती, फालसे, शहतूत और अनार के वृक्ष लगे हुये अपनी फलरूपी संपत्ति से अलग ही दर्शकों की जिह्वाओं को लालायित कर रहे हैं। हरित वर्ण के तोते आ आ कर अनार के फलों से दाने निकाल २ कर प्रसन्नता से खा रहे हैं। यद्यपि कई रक्षक उस गाटे की रक्षा करने के लिये

नियुक्त हैं परन्तु तोतों का हरा रंग अनार की पत्तियों में बिल्कुल मिल जाता है और लाल चोंच अनार के पुष्पों में छिप जाती है इस लिये इन चोरों से दाड़िम (अनार) का बचाना बड़ा कठिन है । हां, जब बहुत से तोते आकर अनार पर बैठे हुये अनार खाकर गाने लगते हैं तब तो पता लगही जाता है और बिचारों को चौकीदार की ले ले ले की आवाज़ सुनकर भागना पड़ता है। दूसरी ओर पक्षिगण भी कैसा कलरव कर रहे हैं। इधर देखा लाल और मुनियों के झुंड वृक्षों की ऊंची डालियों पर चुह चुहाते हुए आपस में मग्न हो कर खेल रहे हैं। अहा ! इन्हें देख कर तो मन में आता है कि यदि हम लाल होते तो इसी तरह फुंदुकते हुए फुर्र से उड़ कर किसी ऊंचे वृक्ष पर बैठ जाते और परमात्मा का गुणानुवाद गाते। फिर भी इनको देख कर शरीर नहीं तो मन अवश्य ही फुंदुकने लगता है। आगे चल कर पुष्पवाटिका का चक्कर है जिस में लतर गुलाब का मिहराबदार दरवाज़ा बना है जो बांस की टट्टी के सहारे पर चलता है। नाना प्रकार के पुष्प लगे हुये हैं सफ़ेद लाल गुलाबी आदि रंगों वाले खिले हुए गुलाब अपने स्थलपद्म के नाम को सार्थक कर रहे हैं। अपनी शोभा से दर्शकों को प्रसन्न करते और सुगन्ध से उनका अतिथि सत्कार करते हैं। कहीं मोगरा और कहीं चमेली अपनी अलबेली चाल से अठिला रही है। नाना प्रकार के पौधे अपने पुष्प रूपी अलङ्कारों के अभिमान में मस्त हो रहे हैं। कहीं

कहीं लता मंडप बने हैं जिनके ऊपर अंगूर की लतरें दौड़ रही हैं। आम्र वाले गाटे के पास एक वृक्ष पर चढ़ी हुई मालती लता कैसी मनोहर जान पड़ती है उस लता ने एक मंडप सा बना लिया है। उस वृक्ष के चारों ओर एक पक्का चबूतरा भी बना है। जिसपर एक कुरसीदार सुन्दर बेंच पड़ी है जहां प्रायः दर्शक लोग आकर बैठते हैं। मालती की भीनी भीनी सुगन्ध उस गाटे भर को सुवासित कर रही है। ऐसेही मंडपों के नीचे बैठ कर कवि लोग अपनी ओजस्वनी भाषा में सच्चा प्राकृतिक दृश्य खींचते हैं जिसके कारण उनका नाम संसार के इतिहास में अजर अमर हो जाता है।

बाग़ के बीच में शान्ता की सम्मति से एक बहुत अच्छा भवन बनाया गया था। इस भवन में सामने की ओर बीच में बड़ा कमरा था जिस का फ़र्श संगमूसा और संगमरमर का शतरंज के खाने के समान बहुत ही सुन्दर जान पड़ता था। किनारे २ पर इन्हीं दो पत्थरों का लहरिया सारे फ़र्श की शोभा को दूनी कर रहा था ग्रीष्मकाल में तो वह फ़र्श इतना ठंडाता था कि इसपर नंगे बदन सोने की तबियत चलती थी। ऊपर की भीतों पर भारत वर्ष के बड़े २ महानुभावों की तस्वीरें लगी थीं ऐसा जान पड़ता था मानों वे महात्मा लोग भारत का अधः पतन सुन कर स्वर्ग से इस कमरे में सभा करने आये हों कि किस प्रकार यह देश फिर सभ्यशिरोमणि हो सक्ता है। जिस की ओर देखिये वही गंभीर विचार में मग्न

हो रहा है। कोई तो विशाल ललाट में हाथ की टेक लगाये हुये बैठा हुआ बतला रहा है कि ठहरा मैं अभी उत्तम उपाय बताये देता हूं। कोई नेत्र विस्तृत करके अचम्भा सूचित कर रहा है कि ऐं ! यह वही भारत है जिसमें हरिश्चन्द्र, रामचन्द्र और युधिष्ठिर से न्यायी राजा थे, प्रजा बड़े सुख से अपने समय को बिताती थी, नर नारियों में परस्पर कैसा प्रेम था छोटे लोग बड़ों का कैसा आदर और सन्मान करते थे। पुत्र पिता के कितने आज्ञाकारी थे, पति पत्नियों में धार्म्मिक प्रेम पराकाष्ठा तक पहुंच गया था, भाई भाई का प्रेम, देश का प्रेम अर्थात् प्रेम उनके रग रग में दौड़ रहा था। जिधर देखो मनुष्य प्रेम और उत्साह भरे दिखाई देते थे। छोटे बड़े सब अपना २ कर्तव्य पालन करने में तत्पर रहते थे। नीच और ऊंच का कोई विचार नहीं था।

उधर देखिये एक महात्मा शान्त चित्त हो हाथ उठा कर अपनी आकृति से यह बतला रहे हैं कि यह सृष्टि का स्वाभाविक नियम है कभी उन्नति होती है और कभी अवनति जो देश आज उन्नत है वही कल अवनति को प्राप्त हो जायगा संसार का अर्थ ही परिवर्त्तनशील है। एक सी अवस्था कभी नहीं रहती। जब संसार के सारे देश आलस्य की नींद में सो रहे थे, तब भारत सारे संसार को अपनी सभ्यता से चकित कर रहा था फिर मिश्र देशका नम्बर आया यह भी उन्नति की ऊंची सीढ़ी तक पहुंच गया। मिश्र भी बहुत दिन तक उन्नति को

फल न भोग पाया था कि यूनान देश की बारी आ गई यह देश भी समय रूपी आकाश में तारे के समान चमक गया। तत्पश्चात् क्षितिज की ओर से रोम का सितारा बढ़ा और उसने भी अपनी चमक दमक दिखाई। रोम के अस्त होते ही यूरोप का तारक समूह कुछ दूर पर झिल मिलाने लगा देखते ही देखते बीच आकाश में आ गया। अमरीका का सितारा भी यूरोप की बराबरी पर पहुंच गया। इतने में पूरब की ओर दूर से जहां आकाश समुद्र से मिला दिखाई देता है जापान रूपी तारा दमकता हुआ तुरत निकल आया यद्यपि यह मध्य आकाश में अभी नहीं पहुंचा किन्तु प्रकाश बहुत तेज है। चीन भी अब कुछ झिल मिलाने लगा है, देखें यह कैसा चमकता है परन्तु रात्रि के अब चार बज गये हैं भारत भानु की अरुणाई आकाश में आने लगी है शनैः २ चढ़ता जायगा कुछ समय पश्चात् अपने पूर्ण तेज से सारे तारामंडल को मन्द कर देगा क्योंकि भारत के प्रकाश का समय अब दूर नहीं है। इस प्रकार उनकी आकृति मानों सभा में उपस्थित लोगों को आशा दिला रही है कि विशेष चिन्ता नहीं उन्नति का समय अब आ पहुंचा है घबड़ाने की बात नहीं।

उधर देखो एक महात्मा कुछ मुस्क्याय कर इनकी ओर देखते हुये अपनी भी वैसी ही सम्मति देते जान पड़ते हैं कि हां अब घबड़ाने की विशेष बात नहीं समय अब आचला है थोड़े ही दिनों में भारत रूपी सूर्य्य गगन मंडल में आना चाहता है इस

प्रकार उनकी सभा भारत के अभ्युदय के गंभीर विचार में मग्न हो रही है। चलो धीरे २ यहां से निकल चलें ऐसा न हो कि वे कहीं हमारे पैर की आहट से हमारी ओर देखने लगें। यदि सारा कमरा देखना ही चाहते हो तो एक स्थान पर खड़े होकर देख लो। देखो वह सामने एक कैसी सुन्दर घड़ी रखी है कोनों में चीनी के झबूरे बालों वाले बालक हाथ में गैस का लेम्प लिये खड़े हैं। एक ओर सामने आबनूस का पलग पड़ा है उस पर स्प्रिंगदार मखमली गद्दा बिछा है। सिरहाने एक बड़ा सुन्दर तकिया है पलंग में चारों ओर खूब चमकती सुनहली छड़ें लगी हुई हैं जिस पर रेशमी मसहरी अलग ही शोभा को दूनी कर रही है। बीच कमरे में एक सुन्दर मेज़ रक्खी है जिस पर झालरदार ऊनकी चद्दर पड़ी है उसपर एक चांदी का बढ़िया कलमदान रक्खा है। चिट्ठी लिखने के कागज़ तथा उत्तम पिन पेड आदि मेज़ की शोभा को बढ़ा रहे है।

कुर्सियां भी सुन्दर २ कई प्रकार की गद्दी लगी हुई पड़ी हैं। सामने एक बड़ा शीशा भी रक्खा है जो कमरे की शोभा को अधिक बढ़ा रहा है। भीतों में बारह सिंहों के बढ़िया २ सिर सहित सींग लगे हैं। झाड़ फानूस की तो कथा ही क्या है जिस समय रात्रि में जलाये जाते हैं उस समय अपनी अनोखी ही शोभा बढ़ाते हैं।

भवन में ऊपर लोहे के रंगे हुये हरे जंगले अति मनोहर

जान पड़ते थे। बीच वाले बड़े हाल (कमरे) के बगल में जो कमरा है उसमें १५ फीट लम्बा और इतना ही चौड़ा एक तख़्त बिछा है उस पर एक गद्दा पड़ा है जिस पर एक चिकनी दूध सी सफ़ेद चद्दर बिछी है। इस भवन का सामना उत्तर की ओर है एक बड़ा तकिया पूर्व की ओर दीवाल से लगे हुये एक चिकने गलीचे की शोभा को बढ़ा रहा है। पं० दयाशंकर जी आकर उसी पर बैठा करते हैं। पश्चिम की ओर मुंह कर के दीवार से लगी हुई गद्दी पर उन का राजनाथ नामक मुहर्रिर बैठता है उसी के पास उसकी सहायता के लिये एक दूसरा मुहर्रिर भी बैठा करता है। तख़्त के पास उत्तर और दक्षिण की ओर कानूनी पुस्तकों की आठ आलमारियां भरी हैं जिनमें सुनहले अक्षरों में पुस्तकों के नाम और सन् लिखे हैं।

मुअक्किल लोग वकील साहब से मिलने उसी कमरे में आया करते हैं। इस भवन का ऊपर का भाग और भी अधिक सजा है। उनके स्वयं बैठने उठने का कमरा ऊपर ही है। वे प्रायः अपने मित्रों तथा बड़े आदमियों से उस ऊपर वाले कमरे ही में मिलते हैं। वह ऊपर वाला कमरा शान्ता के कमरे से मिला हुआ है। शान्ता के कमरे में भी पुस्तकों की आलमारियां रक्खी हैं स्त्री शिक्षा की तथा धर्म की कोई भी ऐसी पुस्तक नहीं है जो उनके पुस्तकालय में न हो। कई समाचार पत्र भी आया करते हैं। इतिहास भूगोल उपन्यास, नाटक

आदि सब प्रकार की हिन्दी, संस्कृत, बंगला गुजराती आदि भाषाओं की पुस्तकें उपस्थित हैं। क्योंकि शान्ता को पुस्तकें पढ़ने की बड़ी रुचि बढ़ गई है पुस्तकें पढ़े बिना उसे कल नहीं पड़ती। जो पुस्तक उसके हाथ में पड़ती है वह उसे बिना समाप्त किये नहीं छोड़ती। जो पुस्तकें उसके यहां हैं वे प्रायः सभी उसकी पढ़ी हैं उस के कमरे में एक ओर वर्तमान काल और प्राचीन काल की आदर्श देविओं की तसवीरें लगी हैं दूसरी ओर बड़े २ विद्वानों के चित्रों से वह कमरा विभूषित हो रहा है। इसी कमरे के बगल में एक ओर वह कमरा है जो चारों ओर से हवादार है क्योंकि उसमें सब ओर खिड़कियां लगाई गई हैं उसमें चार चौकियां पड़ी हैं उन पर ऊनी गलीचानुमा आसन बिछे हैं। बीच में ऊंचे पर एक तांबे का बड़ा हवन कुंड रखा है। एक ओर प्रोक्षणी प्रणीता और स्रुवा आदि हवन के पात्र रखे हैं। एक खिड़की में पीतल का एक कटोरा रक्खा है जिसमें हवन की सामिग्री भरी है उसी के पास ताया हुआ एक बर्तन में केसर मिला स्वच्छ घी रक्खा है। एक कोने में शमी वृक्ष की पतली २ कटी हुई लकड़ियां रक्खी हैं। जो हवन में आहुति के काम में आती हैं यहीं पर वे दोनों संध्या और हवन किया करते हैं। इस कमरे में बड़े २ योगियों के चित्र भी लटकते हैं, यह कमरा सदा सुगन्धित वायु से सुवासित रहता है।

भवन के सामने एक बड़ी सहन है जिसके फ़र्श पर काले और सफ़ेद संगमरमर और संगमूसा के पत्थर बिछे हुये शतरंज के घरों के समान मालूम पड़ते हैं। इस की लम्बाई साठ फ़ीट और चौड़ाई पचास फ़ीट है। सामने के दोनों कोनों पर दो बुर्जियां बनी हैं जिनपर चमकता हुआ कौड़ी का चूना शोभा देता है, जो इतना चिकना है कि हाथ रखने से फिसलता है।

दोनों बुर्जियों के पास दो हांडी तार लेम्प लटक रहे हैं जिनका प्रकाश रात्रि में भवन की शोभा को दुगुनी कर देता है। सहन के सामने एक हरी घास की लान है जिसका लम्बान सहन के पास से लगी हुई छोटी सड़क से लेकर बाग़ के सदर फाटक के पास तक है और चौड़ाई भी सहन की लम्बाई के बराबर है। उस लान के चारों ओर घनी मिहंदी की दो फ़ुट ऊंची बारी लगी हैं। सहन पर आने के लिये भवन के आगे वाली सीढ़ी के सामने उस छोटी सड़क से लगा हुआ एक मिहराब दार द्वार है जिसके दोनों ओर पूरब और पश्चिम में मेंहदी ही के आकार के मोढ़े बने हैं जिन के ऊपर मिहंदी ही के मुरैले बैठे हुए बड़े सुन्दर जान पड़ते हैं उनकी कटाई और सफ़ाई देख कर माली की चतुरता की सराहना करनी पड़ती है। लान के चारों कोनों पर मिहंदी ही के छोटे २ हाथी खड़े थ मानों चारों दिशाओं के

दिग्गजों ने अपने बच्चों को पंडित जी के उपवन की शोभा बढ़ाने के लिये भेज दिया हो। लान के भीतर की ओर मिहंदी की बारी के किनारे डेढ़ फुट चौटी छोटी २ संगमरमर की गुट्टियों का लहरिया जाता है जिसके बीच २ में छोटी सीपों के फूल बने हैं। लहरिये की गोट के स्थान पर भीतर की ओर बड़ी सीपों की रेखायें हैं। लान की घास बड़ी सफ़ाई के साथ मेशीन के द्वारा काटी गई है। हरी सम कटी हुई कोमल दूब ऐसी जान पड़ती है मानों एक बढ़िया ऊन का हरा गलीचा बिछा हो जिस की रमणीयता देख कर उसपर बैठने को चित्त चाहता है। उस लान के बीचो बीच में एक सुन्दर छोटा सा सफ़ेद संगमरमर का सरोवर है। जिसके चारोंओर की सीढ़ियां मन मोहे लेती हैं उसमें स्वच्छ निर्मल जल भरा है। जिसमें प्रफुल्लित नील कमल दर्शकों के चित्त की कली को खिलाये देते हैं। पत्रों के ऊपर भृङ्गावली गूंजती हुई ऐसी शोभा दे रही है मानों जितने दर्शक उसके देखने के लिये आज तक आये हैं उन सब के मन लोलुप बनकर कमलों ही पर रह गये हों परन्तु उनकी आत्मायें विवश होकर अपने २ मन रहित शरीरों को लेकर चली गईं हों। उस तड़ाग के बीच में एक सुन्दर संगमरमर का फुहारा भी है जिसमें एक यंत्र के द्वारा संगमरमर की पुतलियां हाथ में एक २ कमल का पुष्प लिये नाच रही हैं जिनकी पखुरियों में से जल उछल रहा है और बीच में सीधी ऊंची धार छूटती है। उस फुहारे के अस

बिन्दु नीचे नील पद्मों पर गिर कर ऐसे बिलाय जाते थे जैसे योगियों के चित्त से तृष्णा। यद्यपि पद्म जल से उत्पन्न होता है और जल ही में रहता है इसी से उसका नाम जलज है परन्तु जल में लिप्त नहीं होता किन्तु जल में रहता हुआ भी जल से न्यारा रहता है इसी प्रकार सज्जन लोग यद्यपि ससार ही में उत्पन्न होते हैं और धन ही से उनका पालन पोषण होता है परन्तु फिर भी धन में लिप्त नहीं होते, सांसारिक प्रलोभन उनके चित्त को कदापि नहीं मोह सकते। सज्जनों का चित्त सदा कमलंवत् प्रफुल्लित रहता है यद्यपि जल बिन्दुओं के समान लक्ष्मी मोहित होकर उनके पास आने की चेष्टा करती है परंतु वे उसे अपने पास तक फटकने नहीं देते। अहा! मनुष्यों को जगत्पिता परमात्मा कमलों की नाईं छोटे २ प्राकृतिक पदार्थों द्वारा भी सदा उपदेश दिया करते हैं परन्तु हम अज्ञानियों को चेत कहां! हम लोग तो मोहरूपी मदिरा में मस्त हुये मत्त जनों की भाँति इधर उधर अपवित्र स्थानों में गिरते पड़ते हैं। हम लोग उस ब्रह्मानन्द के सुख को क्या जानें जिसके स्वाद के आगे महात्मा भर्तृहरि गौतमबुद्ध प्रभृति जनों ने अतुल सम्पत्तियुत राजलक्ष्मी को तृणावत त्याग दिया। उन कमलों पर नीले वर्ण वाली तितिलियां आ आकर अपने परों के रङ्ग और कोमलता का मिलान कमलों से करती हैं परतु वे मूर्खा यह नहीं जानतीं कि उसी कारीगर ने उनको भी बनाया है जिसने कमलों को नील वर्ण दिया है।

इस लान के चारों ओर लकड़ी की सफ़ेद रोगनदार कुर्सी नुमा बाग़मुखी बेंचें पड़ी हैं। लान के उत्तर की ओर सदर फाटक के सामने ही पहाड़ी छोटे पौधों का "स्वागत" बना है उत्तर और दक्षिण की ओर संगमरमर की मेजें पड़ी हैं। इस बड़ी लान के पश्चिम में एक पक्की सड़क गई है जिसके पश्चिम में उससे लगा हुआ लतागृह है। बड़ी लान के उत्तर की ओर भी एक पक्की छोटी सड़क है जो बाग के सदर फाटक तक गई है और उस सड़क से लगा हुआ पूर्व में एक लान है जो बड़ा सुन्दर और मनोहर है इसके बीच में एक ऊंचा चबूतरा है जिसके तलपर पच्चीकारी का बड़ा सुन्दर काम किया गया है उसके ऊपर हर एक मनुष्य का मन बैठने को चलता है। इस लान के पूरब की ओर एक गबड्डी खेलने के लिये भी छोटा मैदान है जिस पर हरी २ दूब लगी है।

पाठक महाशय! अब आप पंडित जी के लतागृह (समर हाउस) में चलिये और वहां की सैर कीजिये। लान के दक्षिण की ओर एक सुन्दर हरा गृह है यद्यपि बना तो वह ईंटों ही का है परन्तु उसके ऊपर बेलें ऐसी चढ़ाई गई हैं कि सिवाय हरियाली के और कुछ नहीं दिखाई देता। ऊपर छत के स्थान पर बांस की छड़ें पड़ी हैं जिन पर बेलें अठलाती हुई चढ़ती चली आती हैं और सिरे के उठे हुये तंतुओं के द्वारा मानों वे सिर उठा कर

आगे पसरने के लिये जगह ढूंढ़ती हैं। इस लता भवन के द्वार पर एक बड़ी सुन्दर बेल चढ़ रही है। भीतर और बगल में दक्षिण की ओर एक बड़ा कमरा है जिस में चारों ओर जाली लगी है ऊपर एक सुन्दर छप्पर पड़ा है उसके ऊपर लतायें दौड़ रही हैं। इसमें हरे शीशे की खिड़कियाँ भी लगी हैं जिस के कारण कमरे में बड़ा प्रकाश आता है कमरे के बीच में एक गज़ लम्बा और हाथ भर चौड़ा एक सुन्दर पत्थर का हौज़ बना है जिसमें चिड़ियां पानी पीती हैं यह कमरा चिड़िया खाना है इसमें नाना प्रकार के पक्षी कलरव कर रहे हैं। कहीं तो तोते बेंड़ी लटकती हुई छड़ों पर बैठे हुये सिर खुजा रहे हैं। कहीं लाल फुदक रहे हैं। कहीं बिना सीखचों वाले पिंजड़े पर बैठे हुये काकातुआ प्यारी आवाज़ में बोल रहा है अहा! वह देखो गिलहरी डाली पर छिपकली की भांति चढ़ी जा रही है। मैना कैसी अच्छी बोली में बोल रही है। उनके खाने के लिये ककुनी आदि अन्न भी छुटी २ सफ़ेद पत्थर की थालियों में पड़ी हैं। और उसके पूरब वाले कमरे में ऊपर बिल्लौरी कांच लगा है। इस कमरे में उत्तर और दक्षिण की ओर छः २ सीढ़ियां बनी हैं जिन पर नाना प्रकार के पौधों के रंगीन गमले रक्खे हैं। ये पौधे सब पहाड़ी शीत देशों से मँगाये गये हैं। इस में भी हरे कांच के द्वार और खिड़कियां लगी हैं उनके द्वारा जो प्रकाश कमरे में आता है उससे उस भवन का शोभा दूनी हो जाती है। पौर से चल कर भीतर जाने के लिये

एक द्वार मिलता है उसद्वार से एक छोटा लकड़ी का पुल लगा है उस पर से दर्शक को भीतर आना पड़ता है पुलके दूसरे छोर पर एक पहाड़ी पत्थरों का मिहराब दार दरवाज़ा बना है जिसके ऊपर लतायें दौड़ रही हैं यह द्वार बड़ी शोभा देता है। पुलके नीचे दोनों ओर जल भरा है जिसमें कमल खिल रहे हैं। भवन के पूरब की ओर भीतों से लगे हुए नकली पहाड़ बने हैं उनपर नाना प्रकार के पौधे और बेलें लगी हैं। कहीं तो धौलागिरि की नकल है और कहीं गौरीशंकर की, उनकी चोटियों पर एक प्रकार की ऐसी सफ़ेद पत्तों वाली बेलें छिछल रही हैं जो दूर से बरफ़ से ढके हुये पहाड़से दृष्टि आते हैं। चारों ओर पहाड़ ही पहाड़ नज़र आते हैं उनपर ऐसी २ बेलें और पौधे लगरहे हैं जिनकी विचित्रता को देखकर बुद्धि भ्रमित हो जाती है। इस भवन के बीच में एक छोटा सफ़ेद संगमरमर का चबूतरा बना है जिसके चारों ओर बढ़िया पच्ची कारी का काम किया गया है। उस पर प्रायः लोग विश्राम लेते हैं। पश्चिम की ओर ऊंचा स्थान बना है जिसपर चढ़ने के लिये दो ओर सीढ़ियां लगी हैं परन्तु वह भी पहाड़ही के ढंग का है उसपर नाना प्रकार के पहाड़ी वृक्ष लगे हैं। इस पहाड़ के तल के समीप एक झील बनाई गई है उसके बीच में भी जाने के लिये एक छज्जादार पुल बना है उसमें कई प्रकार के कमल खिल रहे हैं शोभा देखकर मन यहां से फिरने को नहीं चाहता। धन्य है परमेश्वर को

जिसने ऐसे २ विचित्र फल फूल आदि संसार में उत्पन्न किये। इस समय भक्ति मय हृदय तो परमेश्वर की लीला देखकर मुग्ध हो जाते हैं। उस पुरुष को जिसने इसका नकसा बनाया होगा जितना ही धन्यवाद दिया जाय उतना ही थोड़ा है, अब आगे चलकर दक्षिण की ओर फिर एक मिहराबद्वार पहिलेकी भांति द्वार है। उसमें से निकल कर एक लकड़ी का दरवाज़ा है जो एक बड़े लम्बे दालान में मिला है इस के बीच में तो चौपहल हौज़ बना है। जिसके बीच में एक फुहारा नाचता है। यहां पर भी दूसरे कमरे की भांति दोनों ओर सीढ़ियां बनी हैं परन्तु इसमें जो गमले रक्खे हैं वे सब रंग बरंगे पुष्पों वाले हैं और सब गमले भी चढ़ाव उतार द्वार सजे हैं अर्थात् सब से ऊपर वाली सीढ़ी पर तो बड़े २ रंगीन गमले रक्खे हैं और फिर इसी प्रकार उत्तरोत्तर गमले छोटे होते गये हैं सब से नीचे की सीढ़ी में सबसे छोटे गमले हैं।

इस प्रकार लता गृह की अनोखी शोभा को देख देख कर दर्शकों के चित्त मोहित होजाते हैं। यह बाग और भवन सारा शास्त्रा की अनुमति से बनाया गया है इस उपवन में और भी कई सुन्दर घर बने हैं जिनमें प्रायः उनके मित्र और मुअक्किल आदि ठहरते हैं। पंडित जी के यहां भोजन के समय परिवार के लगभग ५० मनुष्य एक संग भोजन करते हैं। परन्तु ठहरने

के लिये उनके वास्ते दूसरी जगह पर उसी बाग में स्थान दे दिया है । पुण्य और परोपकार में पं० दयाशंकर तथा शान्ता सदा ही प्रसन्न होती थीं। सत्य है परमात्मा के सच्चे भक्त बड़ीही प्रसन्न रहते हैं ।

आठवां अध्याय

आज पंडित जी के यहां आनन्दोत्सव है बहुत से लोग माला पहिने और मस्तकों में केसर और चंदन लगाये हुये प्रसन्न मन पंडित जी के घर से निकले चले आ रहे हैं। कोई तो कह रहा है लक्ष्मी की शोभा दान से है ईश्वर ने जैसा पंडित जी को धन दिया है वैसाही उदार हृदय भी दिया है। कोई कहता है पंडित जीका स्वभाव कैसा उत्तम है घमंड तो छूकर भी नहीं निकला, अपने यहां निमन्त्रित पुरुषों का कैसा अच्छा आदर किया है, परमात्मा इनके पुत्र को चिरायु करे। पूछने से पता लगा। आज पंडित जी के पुत्र उत्पन्न हुआ है जिसके जात कर्म संस्कार से लौटे हुये पुरुष मार्ग में बातें करते जाते हैं।

पंडित जी ने ग्यारहवें दिन नाम करण संस्कार करके उस बालक का नाम सत्यव्रत रखा वह चन्द्रमा की कला के समान नित्य प्रति बढ़ने लगा था। गर्भाधान से लेकर उसके अब तक सब संस्कार होते गये। माता शान्ता उसके पालन पोषण का स्वयं विचार रखती थी। वह नित्य प्रति उसे शुद्ध २ शब्दों का बोलना सिखलाती थी। साथ ही साथ उसे अक्षराभ्यास भी कराती गई। बड़े २ सुन्दर अक्षर बनाकर

रख लिये थे उनको काट २ कर उसने दो इञ्च लम्बे और उतने ही चौड़े लकड़ी के आध इञ्च मोटे टुकड़ों पर चिपका लिये थे। वे ही एक २ उठाकर उसको पहिचनवाती थी धीरे २ उसे हिन्दी के अक्षरों का पूरा २ अभ्यास हो गया। उसने बाल्यावस्था ही में बालक को सैकड़ों सुन्दर २ श्लोक कण्ठ करवा दिये थे। बालक अपनी दादी से बहुत हिला था पं० गौरीशंकर अभी जीवित थे उन्हों ने यह सब सुख बहुत-दिनों तक भोगा। वे पुरानी चाल के आदमी थे, सदा अपने पूजा पाठ आदि में लगे रहे थे। कभी २ तीर्थाटन कर आते थे उन को अब किसी बात की चिन्ता नहीं थी पूर्व्व जन्म के भाग्य से ऐसे सपूत पुत्र के पिता हुये थे। सत्यव्रत उनसे बहुत हिल गया था। कृपाशंकर जी पण्डित दयाशंकर के भाई थे वे भी कलकत्ते में एफ० ए० क्लास में पढ़ते थे। उनको संस्कृत भाषा में बड़ा प्रेम था। हिन्दी में तो वे अच्छे लेखक थे। प्रायः बड़ो छुट्टियों में घर आया करते थे।

अपने निवास के लिये दयाशंकर जी ने ऐसा गृह बनवाया था जिसमें सब लोग अलग अलग अपने २ कमरों में रहें एक प्रकार से सब लोग अलग हो रहते थे। भोजन आदि के समयों पर इकट्ठे हो आते थे। दयाशंकर की माता को भी पढ़ने लिखने में बड़ा अभ्यास हो गया था। वह तो प्रायः भीतर वाले पुस्तकालय में ही बैठी रहती थी क्योंकि घर में सब प्रकार का आनन्द था। सुमति ने तो पं० दया

शंकर जी के गृह को अपना निवास स्थान बना लिया था। इस प्रकार अत्यन्त परिश्रम कर के कृपा शंकर जी ने बी० ए० परीक्षा पास की। पश्चात् घर चले आये, घर आकर इन्होंने ३ वर्ष तक अच्छा परिश्रम करके अंगरेज़ी संस्कृत तथा हिन्दी भाषा की नामी पुस्तकों का मनन किया इससे उनकी योग्यता बड़ी सराहनीय हो गई थी।

दयाशंकर जी की बहिन का व्याह तो कई वर्ष हुये एक अच्छे कुलीन घर में पढ़े लिखे वर से हुआ था। अब कृपाशंकर के व्याह की बात चीत प्रारम्भ हुई। एक उत्तम और विद्या सम्पन्न घर मिल गया जहां पिता ने अपनी कन्या रत्न को सब प्रकार के गुणों से अलंकृत किया था। विद्या में वह इतनी निपुण थी कि इनके घर के लिये सब प्रकार से योग्य थी। वर बधू के सब प्रकार से गुण कर्म स्वभाव मिलाये गये। जब सब प्रकार से एक दूसरे के योग्य समझे गये तब बड़े उत्साह और आनन्द से वैदिक रीत्यानुसार विवाह हुआ। इस वधू का नाम सुशीला था।

पंडित जी का गृह सरोवर अब नारी रूपी प्रफुल्लित कमलिनियों से बड़ा मनोहर और शोभायमान जान पड़ता था जब सुलोचनी ससुराल से आ जाती थी उस समय तो इस भवन की शोभा का क्या वर्णन किया जाय। जिस समय पंडित जी की माता के चारों ओर आकर सुलोचनी, सुशीला

तथा शान्ता आकर बैठ जाती थीं और सुलोचनी तथा सुशीला के बीच किसी विषयपर संवाद (बहस) शुरू हो जाता था उस समय बड़ा ही आनन्द आता था। एक ओर तो सुशीला का पक्ष लेकर माताजी होजाती थीं दूसरी ओर सुलोचनी का पक्ष लेकर शान्ता हो जाती थी फिर बड़ी बहस होती थी जिस में बड़ा आनन्द आता था। आपस में कैसी उत्तम और उत्साह भरी बातें होती थीं। सब के मुख कमल सदा खिले दिखाई देते थे। अहा! धन्य है ऐसे गृह, ऐसे ही गृहों की शोभा देख कर कविजनों के चित्त मुग्ध हो जाते हैं परन्तु यह स्वर्गीय सुख भारतवर्ष में अब बिरले ही गृहों में होगा। ऐसे ही गृहों से रामचन्द्र, भीष्म, अर्जुन और कृष्ण जैसे मर्य्यादा पर चलने वाले महापराक्रमी शूर वीर तथा योगी निकलते थे जिन की कीर्ति से अबलों भारत का तेज जाज्वल्यमान हो रहा है। किसी कवि ने सत्य कहा है कि यदि घर में सुमति हो तो गृह सुख के समान स्वर्गीय सुख भी तुच्छ है हा! अब ऐसे गृहस्थ स्वप्न हो गये। हर घर में द्वेषाग्नि भड़क रही है लोग एक दूसरे को देख कर ईर्षा और डाह की अग्नि में भस्म हुये जाते हैं। न जाने पिता पुत्र में अलौकिक प्रेम, भाई भाई में भ्रातृ स्नेह किस लोक को सिधार गये। यदि रामचन्द्र और भरत आदि की आत्मायें आकर हम लोगों के अमानुषी व्यवहार देखें तो उनको कैसा दुःख हो। हम लोग यद्यपि आपस की विरोधाग्नि का फल भोग रहे हैं

तिस पर भी तो चेत नहीं हो फिर ईर्षा की आहुति बनते ही चले आते हैं। अमरीका तथा इङ्गलेण्ड देश निवासियों के गृहों में आप प्रवेश कर के देखें तो आप ठीक वैसा ही गृहस्थ सुख पावेंगे जैसा किसी समय में हमारे यहां था। अब तो हम लोगों को सचेत होने का समय है, घर घर में विद्या का प्रकाश फैला कर लोगों की अविद्या का नाश कर दो यही भारत देश १० वर्ष के परिश्रम से वैसा ही वैभव शाली हो जायगा'।

भगवान् मरीचिमाली (सूर्य्य) धीरे२ पश्चिम की ओर चले आरहे हैं। सूर्य्यमुखी भी पश्चिमाभिमुख हो भक्त पारसियों के समान नमित मस्तक हो बन्दना कर रहे हैं। कमल वृन्द जो अभी थोड़ी देर पहले अपने परम स्नेही के मिलन से हर्षित हो रहे थे सो अब उसी प्रेमी के विछोह से म्लानि मुख हो शोक प्रगट कर रहे हैं। जो गउएं अपने प्यारे बछड़ों को भूल स्वच्छन्द हार में चर रही थीं वे अब उनको स्मरण कर उन को दूध पिलाने के लिये कैसी उतावली से रांभती हुई घर की ओर जा रही हैं। नाना प्रकार के पुष्पों तथा तितली और मोर आदि पक्षियों के पंखों के ऊपर अपना रंग दिखाकर फिर अब आकाशको नाना प्रकार के रंगोंसे विभूषित कर सूर्य्य की किरणें अपने सप्त वर्णों की आभा दिखा रही हैं अर्थात् मनुष्यों को विज्ञान का उपदेश कर रही हैं कि देखो सात रंग यदि नियमानुसार मिलाये जाँय तो वही एक

सफ़ेद रंग हो जाता है। पक्षिगण दिन भर के बिछुड़े हुये शावकों से मिल कर गृहस्थी का सुख अनुभव कर रहे हैं। शान्ता सुशीला और विद्या भी वायु सेवन के लिये बाग में टहल रही थीं। नाना प्रकार के पक्षियों तथा पुष्पों को देख कर परमात्मा की अनौखी कारीगरी को सराहती थीं। दो मृग शावक भी कुलेल करते हुये इनके संग आ रहे थे। वे दोनों शांता से बहुत हिल गये थे। कभी २ मार्ग में आकर अड़ जाते थे तब सुशीला और विद्या इनको ढकेल कर आगे बढ़ती थीं। कभी २ जब ये किसी पुष्प को ध्यान पूर्व्वक खड़ी होकर देखने लगतीं तब ये मृग छौने इनसे अपनी पीठ रगड़ने लगते तब सुलोचनी और सुशीला स्नेह पूर्व्वक हलके हाथों से उनको थपथपा देती थीं। तब शान्ता बोल उठती थी बिचारों को मत मारो। इस प्रकार बाग में आनन्द पूर्व्वक वे विहर रहीं थीं कि इतने ही में एक दासी ने आकर शान्ता से कहा, "बड़ी बहू जी! आप के पीहर से चिट्ठी लेकर एक आदमी आया है इस लिये माताजी आपको यादकर रही हैं" यह सुनकर सब की सब कोठी की ओर लौट पड़ी। घर में आ-कर चन्दन पुर से आये हुये नाऊ को बुला कर ख़बर पूछने लगीं कि पिता और माता अच्छी तरह से हैं न? नाऊ बोला "कुशल नहीं है पंडित जी को सिपाही हवालात में पकड़ ले गये हैं जिस को आज चार दिन हुये। मुझे पंडिताइन ने तुरन्त परसों सबेरे आप के पास चिट्ठी देकर भेजा है इस में

उन्होंने सब हाल अपने हाथ से लिख दिया है उसे पढ़ लो" शान्ता ने झट चिट्ठी ले ली और पढ़ने लगी जिस में निम्न लिखित हाल लिखा था :—

चन्दन-पुर

चैत सुदी १३ बुद्धवार

प्यारी पुत्री शान्ता !

आज ग़रीबी का दुःख भोगते २ मुझे युग बीत-गया परन्तु इतना दुःख मुझे कभी नहीं हुआ जितना इस समय मेरे ऊपर आ पड़ा है मैं अपनी अवस्था को लिख नहीं सकी जो कुछ मेरे ऊपर बीत रही है वह मैं ही जानती हूं। सारा ज्ञान इस समय शून्य हो गया। मैं नहीं जानती कि मुझे अब क्या करना चाहिये। मुझे कोई उपाय नहीं सूझता। जैसे बने वैसे बेटी! इस समय अपने पिता को बचाने का प्रयत्न करो। बेटा दयाशंकर को कह देना कि अभी तक यद्यपि तुम बहुत कहते रहे परन्तु मैंने क़िसी प्रकार की सहायता नहीं ली अब अपने श्वसुर को बचा कर मेरी रक्षा करो नहीं तो अब इस संसार में मेरा ईश्वर के सिवाय और कोई नहींजिसकी शरण में जाऊं। जैसे बने वैसे देखते इस पत्र के शीघ्र चले आओ"। तुमारे पिता को शत्रुओं ने फ़ौज़दारी के मामले में फंसा दिया है। लोग कहते हैं कि उनको अवश्य सज़ा हो जायगी।

यह पत्र पढ़कर शान्ता कुछ उदास हो गई वह देखकर

सुशीला और विद्या पूछने लगीं कुशल तो है न? शान्ता बोली अभी तक मेरे पिता के शत्रु शान्त नहीं हुये उनको दुष्टों ने फौज़दारी के मामले में फंसा दिया है॥

नाऊ के लिये भोजनादि का प्रबन्ध करके शान्ता संध्या गृह में जाकर संध्या में लवलीन हो गई। संध्या से निश्चिन्त हो पं० दयाशंकर जी के आने पर हवन करना प्रारम्भ कर दिया। जब हवन आदि नित्य क्रियाओं से सुचित हो चुकी तब उसने अपनी माता के यहां से आया हुआ पत्र पं० दयाशंकर जी को दे दिया जिसे पढ़कर पंडित जी बोले। अच्छा मैं अपने सारे मुक़द्दमों को पन्द्रह दिनों के लिये मुलतवी करवा दूंगा। और मेरी समझ में हम लोग भोजन करके रात्रि ही को गाड़ी में सवार हो जावें जिससे रातही रात जसवन्त नगर स्टेशन पर पहुंच जांयगे और सबेरे चार बजे से रास्ता चलना शुरू कर देंगे इस प्रकार दो बजे तक चन्दनपुर अवश्य पहुंच जाँयगे। सवारी के लिये मैं, जसवन्तनगर के एक अपने रईस मित्र को जो मेरे मुअक्किल भी हैं जिनका एक मात्र साठ हज़ार का मुक़द्दमा मैंने हाल ही में जिताया है, एक तार दिये देता हूं। वे तुम्हारे लिये पालकी और मेरे लिये घोड़े का प्रबन्ध कर देंगे। जहां तक हो जल्दी ही पहुंचना चाहिये तुम्हारी माता ने बड़े दुःख के साथ पत्र भेजा है। एक तो वे स्त्री हैं दूसरे वहां कोई उन का सहायक नहीं। मैंने कई बार उनसे और बड़े पंडित जी से

यहीं आकर रहने के लिये कहा परंतु वे नहीं माने ख़ैर जी हो अबकी बार मैं आकर उनके शत्रुओं को ठीक कर दूंगा ॥

शान्ता बोली प्राण नाथ ! यदि ऐसा कर देंगे तो बड़ी कृपा आपकी मेरे ऊपर होगी । इस समय माता और पिता के दुःख से मैं बड़ी दुखी हूं ॥

दयाशंकर—(हंसकर) प्रिये ! क्या तेरे उपकार मेरे ऊपर कम हैं तूने मेरे प्राण बचाये, मुझे दरिद्र रूपी शत्रु से छुटकारा दिया, मुझे विद्या दान दिया फिर तेरे ही धर्म्म से यह राजलक्ष्मी और वैभव विद्यमान है मैं इस जन्म की कौन कहे कई जन्मों में भी तेरे उपकारों को नहीं भूल सकता ॥

शान्ता—मैं दासी तो किसी योग्य नहीं। ये बचन तो केवल मुझे उत्साह देने के लिये हैं । भला मैं दीन अबला आप की क्या सेवा कर सकती हूं । अच्छा ! तो मैं जाती हूं । मार्गोपयोगी भोजन बना कर तय्यार करती हूं आप अपने मुकद्दमों के मुल्तवी करने की अर्जी भेज दें। संग में केवल दो नौकर एक दासी और एक सिपाही ले लीजिये। और किसी को संग मत लीजिये क्योंकि वहां दुःख के समय जा रहे हैं ऐसे समय में भीड़ भाड़ से जाना मेरी समझ में ठीक नहीं ॥

दया०—अच्छा मैं जाता हूं तुम तय्यारी करो क्योंकि गाड़ी यहां से १० बजे चलती है ॥

दयाशंकर और शान्ता ने माता पिता से आज्ञा लेली और

तय्यारी करके १० बजे की गाड़ी से जसवन्तनगर को रवाना हो गये। वहाँ पर इनके मित्र सवारी आदि का प्रबन्ध करके अगवानी के लिये स्टेशन पर खड़े थे। उन्होंने अपने घर ले चलने के लिये बहुत कुछ कहा परन्तु वे बोले मुझे यहीं वेटिंग रूम में ठहरने दीजिये घर पर जाने से मुझे बड़ा परिश्रम पड़ेगा। इस समय मैं यहां कुछ नींद लेकर चार बजे प्रातःकाल रवाना हो जाऊंगा क्योंकि आज मुझे तीसरे पहर चन्दनपुर अवश्य पहुंचना है। यह सुन कर मित्रजी ने वेटिंग रूम में बिछौने लगवा दिये और वे सवारी आदि का ठीक २ प्रबन्ध करके चले गये। पंडित जी भी सोने को गये। शान्ता को नींद कहां ? वह तो अपने पिता तथा माता के दुःख की चिंता में डूब रही थी। चार बजते ही सारे नौकर तथा सवारी वाले तय्यार हो गये। पंडित जी शीघ्र उठकर शौच और स्नान आदि से निवृत्त हो चन्दनपुर की ओर रवाना हो गये। एवं दो बजते २ चन्दनपुर में पहुंच गये॥

इनको आता हुआ देख लड़के जो एक विशाल पेड़ के नीचे खेल रहे थे सब के सब कौतुक से इनके समीप आकर खड़े हो गये। एक लड़के से पंडित दयाशंकर ने कहा बेटा ! इस सामने वाली हवेली के किवाड़ तो खुलवाओ यह सुनकर वह लड़का दौड़ता हुआ गया और किवाड़ जो केवल उटके हुये थे उन्हें खोल कर भीतर घुस गया और जाकर शान्ता की माता को ख़बर दी अम्मा जीजी आगई। यह सुन कर माता

जिसे उठने तक की सामर्थ नहीं थी अपने फटे वस्त्रों को संभाल कर द्वार की ओर चली त्योंही शान्ता ने भीतर आकर माता के चरणों पर सिर रख दिया। माता ने तुरंत उसे उठा छाती से लगा लिया और रोने लगी। शान्ता ने समझाया माता जी आप क्यों रोती हैं दुःख तो संसार में सबके ऊपर पड़ता है परन्तु आप घबड़ायें नहीं पिता जी आज ही छूट आवेंगे और सब दुःख दूर हो जायगा। दुःख की भी अवधि होती है अब दुःख का अन्त आ गया है॥

पाठक! आप लोग हमारे सत्यव्रत को भूल गये होंगे ये चुपचाप अपनी माता की धोती पकड़े पीछे खड़े हैं यह सब तमाशा आश्चर्य्य से देख रहे हैं। कल्याणी अपने आंसू पोंछ झट उसे गोद में उठा मुंह चूमने लगी उसकी वह शोक और दुःख के बीच की दशा लेखनी से नहीं लिखी जा सकी। सत्यव्रत गोद में चढ़े हुये सारे घर को देख आश्चर्य्य में हो रहे हैं कि हम कहां आगये। कल्याणी शान्ता के लिये दरी ले आई जिसे देख माता से ले शान्ता ने स्वयं बिछा ली। नानी कोठरी में आकर एक गगरी से गुड़ निकाल सत्यव्रत को देने लगी उसने पहले तो लज्जा की परन्तु शान्ता के कहने से तुरन्त ले लिया और बड़े चाव से खाने लगा क्योंकि उसने गुड़ पहले न देखा और न खाया था॥

इतने में पंडित दयाशंकर जी रौघर में आये व आकर अपनी सास का पैर छूने लगे। कल्याणी ने हाथ पकड़ कर

कहा बेटा तुम चिरंजीव रहो। तुमको देखकर जो मुझे प्रसन्नता होती है वह मुझे स्वर्ग से भी ज़्यादा है मैं तुमारे दर्शन से सारे दुःख भूल गई। मेरे समान किस के भाग्य हैं जिसके तुमारे से दामाद हों। परन्तु मैं किसी योग्य नहीं, यों कहती हुई आखों में आंसू भर लाई। तब दयाशङ्कर जी बोले। माता जो? दुखी न हूजिये मैं अभी जाकर पिता जी को छुड़ाये लाता हूं और फिर उनके दुश्मनों को एक २ करके देख लूंगा। विश्वास रखो अब से उनका कोई शत्रु न रहेगा। अच्छा! तो अब हम जाते हैं सवारी तय्यार है यह हम दरयाफ़्त कर चुके हैं किस थाने में पंडित जी रक्खे गये हैं। थाना यहां से दो कोस पर है दो घंटे में पहुंच जायंगे और शामतक अमानत पर छुड़वा लावेंगे। कल्याणी बोली बेटा! भोजन तय्यार करती हूं भोजन करके तब जाना अभी इतना रास्ता चले आए हो। बोले नहीं हम लोगों ने रास्ते में भोजन कर लिया है। कुछ तो घर से लाये थे और जसवन्तर नगर से एक मित्र ने बहुत सा सामान संग बांध दिया है। अब आप इस समय कुछ भी भोजन का सामान न करें। परन्तु कल्याणी ने न माना कुछ थोड़ा गुड़ और दही लेही आई और बोली बेटा! ग़रीबों के यहां सिवाय ग़रीबी चीज़ के तुमारे लायक पक्की मिठाई कहां! मुझे पूछते भी संकोच मालूम पड़ता है। परन्तु रामचन्द्र ने भी जंगल में शिवरी के बेर खाये थे वही हाल यहां है। यह सुनकर पंडित दयाशंकर जी बोले माता! ला को

यह गुड़ और दही तो मेरे लिये अमृत तुल्य है। यह कह कर वे खाने लगे सत्यव्रत जी भी आकर पिता के घोंटू पर बैठ गये और लगे दही का सड़ापा भरने। कल्याणी ने एक लड़के को बुलाकर किसी पड़ोसी के यहां से भूसा लाने के लिये एक टोकरी दी। दयाशंकर समझ गये कि ये कहीं से सवारी के लिये भूसा मगा रही हैं। वे बोले नहीं माता जी भूसा ऊसा मत मगाओ। मैंने सब मगाकर सारा प्रबन्ध कर लिया है आप

अब बिल्कुल कष्ट न करें।

यह कह और प्रणाम करके पंडित दयाशंकर जी घोड़े पर सवार होकर थाने की ओर चल दिये। थाने में पहुंच कर वहां दरोगा जी से मिले और एक हजार रुपये जमानत के नगद जमा करके उन से पंडित शिवदत्त जी को हवालात से निकलवाने की आज्ञा दिलाई। सिपाही पंडित जीको हवा- लात से निकाल लाये। पंडित जी फटे वस्त्र पहिने दरोगा जी के पास चले आ रहे हैं। इनकी दशा देखकर पंडित दयाशंकर जी की आंखों में आंसू आ गये। निकट आने पर ज्योंही उठे और उनके चरण छूने लगे त्योंही पं० शिवदत्तजी ने हाथ पकड़ लिया और बोले बेटा! तेरे पवित्र हाथ इस पापी के चरणों से मलीन हो जायंगे। यह सुनकर दयाशंकर जी दुःख के आवेग को रोक न सके और बोले पिता जी! आप शोक न करें मैं प्रतिज्ञा पूर्वक कहता हूं जिन शत्रुओं ने आप की यह दशा की है या तो उनको विवश होकर आपका मित्र

बनना होगा नहीं तो जिस दशा को आप भोग चुके हैं उसी का उनको भी स्वाद लेना पड़ेगा। तब वे समझेंगे कि किसी भले मनुष्य को सताने का क्या फल होता है॥

इतने ही में ठाकुर सुजानसिंह का घोड़ा और सईस आ गया जो पंडित दयाशंकर जी ने पंडित शिवदत्त जी के लिये मगाया था क्योंकि इसी गांव में पंडित जी के मुवक्किल ठाकुर सुजानसिंह जी रहते थे परन्तु उस समय वे गांव में नहीं थे उनके भाई थे जिन्हों ने रुक्का पढ़ते ही अपना घोड़ा और सईस भेज दिया। दोनों जने घोड़ों पर सवार होकर चन्दनपुर पहुंचे। इनको देख कर लोग पालागन और जुहार करने लगे। घर में आते ही शान्ता पिता जी के चरणों को स्पर्श करने चली परन्तु उन्होंने उसे रोक लिया और आंख में आंसू भर कर बोले बेटा! तेरे उपकार को क्या मैं जन्म भर भूल सकता हूं? कल्याणी भी लोटे में हाथ मुंह धोने के लिये जल लेकर आई जिसको लेकर पंडित जी ने हाथ मुंह धोया फिर शरबत पीकर बात चीत करने लगे॥

शान्ता—पिता जी! भोजन तय्यार है। पंडित शिवदत्त जी स्नानादिक से निवृत हो थोड़ी संध्या करके पंडित दयाशंकर जी के संग भोजन करने गये। इस बीच में अपने शत्रुओं के दुःख पहुंचाने का सारा हाल शिवदत्त जी कहते रहे जिसको पंडित दयाशंकर जी बड़े ग़ौर से सुनते रहे॥

अब भोजनादिक से निवृत्त हो चुके तब पंडित दयाशंकर जी ने उस मामले का सारा हाल पूछा जिसके कारण उनको हवालात हो गई थी। हाल सुनने पर मालूम हुआ कि इनके एक शत्रु ने यह चाल इसलिये चली थी कि इनका घर उस को मिल जावे क्योंकि वह बहुत दिनों से इनके घर पर दांत लगाये था॥

जिस दिन मुक़द्दमें की तारीख़ थी ये कचहरी में गये और बहुत अच्छी बहस करके पंडित शिवदत्त जी को छुड़ा लाये और इनके शत्रुओं से कहा कि यदि तुम अब से पंडित जी के साथ अच्छे वर्ताव करने की प्रतिज्ञा न करोगे तो हम तुम पर उलटा मुक़द्दमा चला करके तुम्हें फंसा देवेंगे और घर द्वार सब बिकवा लेंगे॥

ये बातें सुन कर वे लोग घबड़ा गये और वादा करने लगे हम लोग कभी भूल से भी पंडित जी को दुःख पहुंचाने की चेष्टा न करेंगे किन्तु जहाँ तक हो सकेगा सहायता करने में कसर न करेंगे॥

पं० दयाशंकर जी ने सब को माफ़ कर दिया और गांव के पुराने लोगों को बुला कर कहा कि अब हम पंडित जी की राज-भक्ति के बारे में सरकार में अर्ज़ी देते हैं कि ये सरकार के बड़े ख़ैरख्वाह रहे। इन्होंने कई अंगरेज़ों की ग़दर में ऐसे समय सहायता की है जिस समय उनके प्राणों पर आ

रही थी। जो चिट्ठियां शिवदत्त जी को अङ्गरेज़ों ने ख़ैरख़्वाही में दी थीं उनको उन्होंने बेपरवाही से रद्दी में फेंक दिया था। पण्डित जी ने शान्ता से पुराने बस्तों को निकलवा कर काग़ज़ ढुंढ़वाये संयोग वश एक पत्र किसी कलेक्टर का रद्दी दशा में मिला। उसमें पण्डित जी की बड़ी तारीफ़ लिखी थी। जिस प्रकार उन्होंने कलेक्टर को मुसीबत के समय सहायता की थी वह सब हाल उसमें लिखा था। उस पत्र को पाकर पण्डित दयाशङ्कर जी बड़े प्रसन्न हुये। पण्डित शिवदत्त जी से बोले पिता जी! आप का कष्ट बहुत जल्द मिट जावेगा अब समय कुछ अच्छा आ चला है। यह पत्र जो आज मिला है इसके द्वारा आप का समय फिर लौट आवेगा। यों कह कर एकान्त में जा मसोदा बनाने लगे। पुराने लोग को गवाही देने के लिये तय्यार किया।

पण्डित शिवदत्त जी की ओर से एक अर्ज़ी दिखाई और पैरवी करने लगे। पण्डित दयाशंकर जी केवल १५ दिन वहां रह कर घर को लौट गये क्योंकि उनको बिल्कुल फ़ुरसत नहीं थी।

पं० शिवदत्त जी तथा कल्याणीको भी शान्ता आगरे ले गई थी वहां पर मुक़द्दमे में बड़ी सहूलियत पड़ती थी क्योंकि मुक़द्दमा तो आगरे ही में था।

डेढ़ वर्ष तक मुक़द्दमा चलता रहा। इन्होंने अत्यन्त परिश्रम कर के और गवाही आदि दिला के कलेक्टर का

पत्र पेश किया अर्थात् जब सब प्रकार से हाकिमों को साबित हो गया कि पंडित शिवदत्त जी निर्दोष हैं तब उनकी सारी रियासत जो सरकार में जप्त हो गई थी पं० जी को लौटाल दी गई। सरकारी इन्तिज़ाम होने के कारण अब इनकी ज़मीदारी बड़ी पैदावार हो गई थी।

जब पं० शिवदत्त जी को रियासत मिल गई तब वे घर लौट आये। घर चलते हुये पिता शिवदत्त शान्ता को आशीर्वाद देने लगे बेटी! तू सौभाग्यवती हो, तेरी ही कृपा से आज ये सुदिन देखने में आया। अब मैं अधिकतर अपना समय दान, धर्म तथा ईश्वर की भक्ति में बिताऊंगा। माता कल्याणी भी अब विशेष अर्जरित हो गई थीं वे भी अब अपने जीवन को ईश्वर भक्ति ही में लगाना चाहती थीं।

अब पंडित शिवदत्त जीके फिर दिन फिरे इनके जो शत्रु थे वे मित्र होने लगे। जो इनको देख मुंह फेर लिया करते थे सो आज सरकार, सरकार हुजूर हुजूर, करने लगे। अब इनके द्वार पर फिर घोड़े और हाथी बंधने लगे। जिस दिन इनको सारी ज़मींदारी मिली उसी दिन पं० चन्द्र चूड़ जी को १००१०) दश हजार रुपये कन्या पाठशाले के लिये दिये जिससे वाजपेयी जी ने एक बड़ा कन्या-पाठशाला खोल दिया। आज पंडित शिवदत्त जी तथा उनकी धर्मपत्नी फूली नहीं समातीं। सत्य है, आज पंडित चन्द्रचूड़ जी की भविष्य वाणी पूरी हुई आज पं० शिवदत्त जी का भी संकल्प पूर्ण हो गया।

माता और पिता दोनों आशीर्वाद देकर घर को चल दिये गांव में जहां देखो वहां शान्ता तथा प० दयाशङ्कर जी की ही चर्चा रहती थी। सब लोग यही कहते थे कि पुत्री हो तो शान्ता जैसी हो॥

सत्य है सन्तानों को सुशिक्षा देने से जो लाभ होता है वह अकथनीय है। पं० शिवदत्त जी अब प्रायः एकान्त सेवन करते हुये अपने समय को ईश्वराराधन में अधिक बिताते थे। यही हाल माता कल्याणी का था वे अपने पति की सेवा करती हुई विशेष समय भगवत भजन में लगाती थीं। एक दिन दोनों को वैराग्य उत्पन्न हो गया। अपनी सारी रियासत, सत्यव्रत (नाती) के नाम लिख कर गिरनार की ओर चल दिये जहां से फिर उनका कोई पता न चला यद्यपि शान्ता ने बहुत कुछ परिश्रम करके पता लगाया परन्तु कुछ पता न चला॥

पाठको! अब पंडित दयाशङ्कर जी के पिता पंडित गौरीशंकर की अवस्था अधिक हो गई है वे निरन्तर परमात्मा के ध्यान में अपना समय व्यतीत कर रहे हैं उनकी धर्म-पत्नी भी अब अधिक जर्जरित हो गई है वे भी सदा माला ही जपा करती हैं। संध्या समय आकर पंडित दयाशंकर जी उनको ब्रह्मज्ञान का कुछ उपदेश कर देते हैं। उनका आत्मा सब प्रकार से तृप्त है क्योंकि दयाशंकर कृपाशंकर शान्ता आदि सब ही घर के लोग उनकी श्रद्धा से सेवा और आज्ञा पालन करते

हैं अब संसार में और कुछ शेष नहीं रह गया जो उन्हें भोगना बाकी हो॥

एक दिन माता जी को ज्वर हो गया। वैद्य आदि बुलाये गये, औषधि होने लगी शान्ता हर समय उनकी सेवा में उपस्थित रहती थी। रात्रि में आठ बजे होंगे माता शान्ता को बुलाकर धीमें धीमें निर्बल स्वर में घर के प्रबन्ध के बारे में समझाती हुई बोली बहू! आज मेरा अन्तिम दिन है अब मुझे अधिक चलने के लक्षण नहीं दिखाई देते। यद्यपि मैंने तुम्हें पहले ही से अपने सामने गृह स्वामिनी बना रक्खा है और तुम्हारे चलन तथा व्यवहार से मैं बड़ी प्रसन्न रही तुम्हारी प्रशंसा मैं क्या करूं जिस दिन से लक्ष्मी समान तू मेरे घर आई उस दिनसे सारा दरिद्र दूर होगया। तूने मेरी और अपने ससुरजी की जितनी सेवा की है वह वर्णन करने योग्य नहीं है वह तो हमारी आत्मायें जानती हैं। हम दोनों तुम्हारे कल्याण के लिये सदा ईश्वर की प्रार्थना करते रहे जिसको परमात्मा सदा सुनता रहा। अब मैं सारे परिवार को तुम्हारे सुपुर्द करती हूं अपने स्थान पर मैं तुमको नियत करती हूं। सदा कृपाशंकर और बहू,सुलोचनी आदि को अपने पुत्र पुत्रियों के समान जानना। यों कह कर बोली एक अन्तिम आज्ञा मेरी है जिसका पालन करना तुम्हारा परम धर्म होना चाहिये। वह यह है कि मैं तो अब चलती हूं मैं अपने सामने तुम्हारे श्वसुर की सब प्रकार से फ़िकिर रखती थी अब तुम उनकी अत्यन्त सेवा करना

क्योंकि वे भी थोड़े ही दिनों के मेहमान हैं। मेरी आत्मा तुम-को आशीर्वाद देती है तुम जब तक जीवो सौभाग्यवती रहो सदा तुम्हारी गोद भरी पूरी रहे यह तुम्हारा बालक आयुष्मान हो यही हमारा तुम्हारे लिये अन्तिम आशीर्वाद है। यह सुन-कर शान्ता आंखों में आँसू भर लाई और कहने लगी माता जी मैं सदा आपकी आज्ञा पालती रही और जन्म भर पालती रहूंगी। आप अब अपनी आत्मा को परमात्मा में लगावें अब सांसारिक झगड़ों में अपने मन को लगाना उचित नहीं क्योंकि यह समय बड़ा अमूल्य है और कुछ ही क्षणों का है।

सास ने कहा अब अपने श्वसुर तथा दयाशंकर कृपाशंकर और बहू आदि सब बालकों को मेरे पास बुला दो। यह सुन कर शान्ता ने दासी के द्वारा कृपाशंकर को बुलवाया इतने ही में पं० दयाशंकर भी आगये उनके पिता आदि सब सब घर के लोग सन्मुख आये। सब की आंखों में जल भरा हुआ है मारे दुःख के गला भरा आता है।

पं० गौरीशंकरजी से हाथ जोड़ कर उनकी पत्नी ने विनय की "हे प्राणनाथ! जब मैं दासी आप के घर आई आप की सेवा में सदा तत्पर रही मैंने सब प्रकार के सुख इस घर में भोग लिये अब किसो वस्तु की लालसा नहीं रही (दयाशंकर की ओर से संकेत करके) पुत्र हो तो ऐसा हो और बहू हो तो (शान्ता की ओर ईशारा करके) ऐसी हो। रामचन्द्र तथा

सीता के ये प्रत्यक्ष उदाहरण हैं महाराज दशरथ तथा कौशिल्या ने भी ऐसा सुख नहीं भोगा जैसा हमने भोगा है। अब जो कुछ इस दासी से अपराध हुये हों सो क्षमा कीजिये अब मेरी तय्यारी हो चुकी है। यह सुन कर पंडित गौरीशंकर जी के नेत्रों में आँसू आगये और बोले प्रिये! तुम जब से घर में आई' इस घर का संकट दूर हो गया था मैंने जो गृहस्थी का सुख तुम्हारे संग भोगा वह आत्मा जानता है जीभ उसे बताने में असमर्थ है यह तुम्हारा ही प्रसाद है जो दयाशंकर से पुत्रों का मुख देखनें में आया। नहीं, नहीं तुमने कुछ अपराध नहीं किये हाँ मुझ से अनजाने अपराध हुये हों तो क्षमा करना यों कहते हुये नेत्रों से अश्रुजल गिरने लगा सारे घर के लोग अब अपने को न सम्भाल सके कोई दालान में जाकर आँसू गिराने लगा कोई कहीं आंखें सुजाने लगा। तब उस समय दयाशंकर जी आँसू पोंछ चित्त को संभाल कर बोले पिता जी! अब आप क्यों रोते हैं आप तो सब प्रकार ज्ञानवान हैं आप अधीर न हूजिये यह शरीर तो क्षण-भंगुर है इसका क्या ठिकाना आज तक संसार में राम-चन्द्र जैसे सैकड़ों महापुरुष आये और चले गये कोई भी यहां स्थिर न रहा आयु तो जल के बुलबुले के समान है क्षण मात्र का भी भरोसा नहीं। किसी कवि ने सच कहा है :—

नवद्वारे का पींजरा तामें पंछी पौन।
रहने को आश्चर्य्य है गये अचंभा कौन॥

इस शरीर रूपी नव द्वारे के पिंजरे में पवन (प्राण) रूपी पक्षी रहता है जिसका इस पिंजरे में रहना तो आश्चर्य्य जनक है परन्तु चले जाने में कोई अचंभा नहीं। फिर माता जीकी ओर मुख करके बोले माताजी! अब आप ईश्वर की चिन्तन में लगें, यह संसारी मोह छोड़ देवें। क्योंकि यह समय आपका बड़ा अमोल है आप अब गायत्री का पाठ करें और उसके अर्थ विचारें यही अब आपका अन्तिम कर्तव्य है। पंडित गौरीशंकर जी को पंडित दयाशंकर जी अब बाहरवाले दालान में ले गये और वहां स्प्रिंगदार आराम कुरसी पर बैठाल दिया और आप भी उनके पास बैठ गये। कृपाशंकर आदि सब माता जी के चरणों पर गिरे। माता जी ने सब के ऊपर हाथ फेर कर आशीर्वाद दिया। पंडित दयाशंकर के पुत्र सत्यव्रत को पुचकार और हाथ फेर कर बोली तुम खूब पढ़ना जिसको सुनकर अचम्भित बालक सिर हिलाकर बोला "अच्छा" बालक मन ही मन में सोच रहा था कि न जाने आज ये सब क्यों उदास हैं और रो रहे हैं॥

थोड़ी देर में गायत्री का जाप करते करते सांस अधिक बढ़ने लगी। शान्ता ने पलंग के नीचे एक अच्छी गद्दी बिछवा

रक्खी थी उसी पर मय निचली चद्दर के माता जी को पृथ्वी पर उतार दिया तीन बार ओ३म् कह कर प्राण पखेरू शरीर रूपी पिंजड़े से उड़ गये! सब लोग रोने लगे परन्तु दया शंकर जी के डर से कोई ज़ोर से नहीं रो पाता था॥

बड़े उत्साह से उनका मृतक संस्कार किया गया। दिन रात घर के लोगों में माता की ही चर्चा रहती थी। उनके सीधे स्वभाव की तारीफ़ सब लोग करते थे। क्रोध तो उनमें छूकर भी नहीं निकला था। नौकर चाकरों से बड़े प्रेम से बोलती थीं, उनके दुःख की सुनती थीं। यथा-साध्य उनकी सहायता भी करती थीं। जब कभी किसी ग़रीब की कन्या का विवाह होता तो वह इन्हीं को आकर घेरता था परन्तु ये कभी किसी को विमुख नहीं फेरती थीं। पं० दयाशंकर जी अपनी माता की आज्ञा का उलङ्घन कभी नहीं करते थे। प्रायः लोग आकर माता जी के द्वारा दयाशंकर जी से अपने मनोर्थ की सिद्धि करते थे॥

माता जी के मरने पर शान्ता ने दास दासियों को बुलाकर समझा दिया था कि जब कभी तुम पर दुःख पड़े अथवा विपत्ति आवे तो तुम घबड़ाना मत जिस प्रकार माता जी तुम्हारी सहायता करती थीं उसी प्रकार मैं भी करूंगी॥

इस प्रकार शान्ता ने अपनी सास के स्थान को ग्रहण कर लिया श्वसुर की बड़ी फ़िकिर रखती थीं। सदा उनकी सेवा में तत्पर

रहती थीं। जिस चीज़ पर उनका चित्त चलता था उसे तुरंत मंगा देती थीं। परन्तु वृद्धावस्था की तकलीफें तो प्राणी को स्वयं भोगनी पड़ती हैं इसमें कोई किसी का सहायक नहीं होता। श्वसुर को सुनाई कम पड़ने लगा था। दृष्टि भी मंद पड़ गई थी। ग्रीवा तो हर समय शरीर के क्षणभंगुर होने का परिचय दे रही थी। लार बहुत रोकने पर भी दाँत और मसूड़ों का बांध टूट जाने के कारण बाहर बह निकलती थी। इन सब इन्द्रियों को विद्रोही देखकर कान भी नमक हरामी करने लगे थे। हा! विपत्ति में शरीर तक सहायता नहीं करता। क्या ये वे ही पं० गौरीशंकर हैं जो पन्द्रह पन्द्रह कोस चल कर कथा बांचने जाते थे जो बिना छड़ी के सहारे अब चार पग भी नहीं चल सक्ते। धन्य है ईश्वर तेरी लीला को, इन शरीर धारियों को किस भांति कठपुतलियों के समान नचाया है। जो आज पैरका अंगूठा पीता हुआ पालने में पड़ा रोता या हंसता है वही थोड़े दिनों में पैरों के बल कूदता हुआ शैशवावस्था में दिखाई देता है। पाठशाला से छिप छिप कर घर में बैठता है अब कई बालक आकर घर में घुस माता के संकेत से कोठरी में आकर उसे पकड़ लेते हैं और ज़बरदस्ती हाथ पैर पकड़ कर गुरुजी के पास ले जाते हैं फिर वही युवावस्था को प्राप्त होकर प्रेम पथ पर पग धरना प्रारम्भ करता है परन्तु यह नहीं जानता इस फूल बिछे हुये मार्ग पर आगे चल कर कांटे भी मिलेंगे। कल दिन जो स्वच्छन्द होकर विचर रहे थे वे

आज प्रेम बाण से बिद्ध होकर पलंग पर करवटें बदलते दिखाई देते हैं सारी २ रात बीत जाती है नींद नही आती। खाना पीना नहीं सुहाता केवल अपनी प्रेम पात्री की मृदुल और स्नेह भरी चितवन की ओर ध्यान है। उसका हाव भाव मूर्तिमान बन कर चित्त को विचलित किये देता है लज्जा पापिनी को सौ सौ वार धिक्कार देता है कि यह अभागिनी न होती तो एक बार चलते हुए फिर तो उसके चन्द्रमुख को देख लेते। दूसरी ओर अपने पिता का भय चित्त में दाह उत्पन्न कर रहा है कि कदाचित वे इस विवाह को स्वीकार न करें क्योंकि उस कन्या के पिता धनी नहीं हैं उनके पास इनकी इच्छानुसार दायजा देने को न होगा। कभी चित्त में यह विचार हो आता था कि चलो कल सबेरे होते ही पण्डित दीनदयाल जी के पास चलेंगे और उनसे पण्डित शान्तिस्वरूप जी की कन्या के संग अपने बिवाह की इच्छा प्रगट कर देंगे वे समझदार आदमी हैं पिताजी को सब प्रकार से समझा लेंगे कि यदि धन नहीं है तो कन्या तो सुशीला तथा विदुषी (पढ़ीलिखी) है तुमको कन्यारत्न से काम है धन इधर आया और उधर चला गया उसका क्या ठिकाना फिर अपने वित्त के अनुसार वे देने में कसर भी नहीं रक्खेंगे। मेरा नाम न लेकर यदि इस प्रकार समझा देंगे तो आशा है कि अवश्य पिता जी मान जायंगे क्योंकि उनका कहना बहुत मानते हैं फिर संकोच करने लगता है कि मुझसे कैसे कहा जायगा पण्डित दीनदयाल जी अपने

मन में कहेंगे 'कि देखो यह लड़का कैसा निर्लज्ज है इस प्रकार फिर निराशा के बादलों में आशा का चन्द्रमा छिप जाता है। थोड़ी देर सोचने के बाद आशा का प्रकाश दृष्टि पड़ा और एक दम प्रसन्न होकर बोले कल अपने मित्र बाबू कृष्ण चन्द्र जी के द्वारा पण्डित दीनदयाल जी से अपनी मन की इच्छा को प्रगट कर देवेंगे। आशा है काम अवश्य पूरा हो जावे। फिर हाथ जोड़ ईश्वर से प्रार्थना करता है हे घट २ में व्यापक परमात्मा यदि मेरा प्रेम सच्चा है और मैंने स्वप्न में भी कभी अपने चित्तको इधर उधर नहीं जाने दिया है तो आप अवश्य इस दीनपर कृपा करें और मेरी मनोकामना पूरी करें। आप प्रेम के स्वरूप हैं आप को बहुत लोग प्रेम कह कर पुकारते हैं महाराज ! मेरे प्रेम को पूर्ण करो। यों कह कर मन में विश्वास की लहर उठी कि तेरा प्रेम अवश्य सिद्ध होगा। "जेहिकर जेहिपर सत्य सनेहू। सो तेहि मिले न कछु सन्देहू"। इसी प्रकार मनोर्थ की सिद्धि जब तक नहीं होती तब तक मनुष्य आशा के समुद्र में गोता लगाता रहता है। फिर थोड़े दिनों में पुत्र के चन्द्रमुख को निरख निरख कर फूला नहीं समाता। उसके तोतले शब्दों पर मुग्ध हो जाता है। इस प्रकार स्त्री पुत्र आदि के भोजन छादन के लिये दिन रात परिश्रम करता है परन्तु सारा श्रम और थकावट अपनी चन्द्रानन्नी पत्नी तथा पुत्र के भोले मुख को देख सब भूल जाता है। अब देखो उसके सफ़ेद बाल बुढ़ापे की अवाई का संदेसा ला रहे

हैं। उसके हौंसले पस्त होने लगे, उत्साह ढीला पड़ा, शक्ति मंद पड़ी इस प्रकार देखते देखते गात्र सिकुड़ गये, आंखों की ज्योति जाती रही, कान बधिर हो गये त्वचा ढीली पड़ गई, दांत भी तशरीफ़ ले गये। हा! वह देखो आज मृत्यु शय्यापर पड़ा अंतिम समय की प्रत्याशा कर रहा है नहीं, नहीं, उसके प्राण पखेरू इस शरीर रूपी पिंजरे से उड़ भी गये। सारे जीवन का नाटक देखते ही देखते पूरा होगया।

हमारे पंडित गौरीशंकर जी की भी जीवन संध्या आगई, धुंधला हो चला है। काल रात्रि बाघिनी सी मुंह बाये दौड़ी चली आती है। पलंग पर से अब उठा नहीं जाता। खांसी इतनी बढ़ गई है कि खांसते २ कभी २ आंखें पलट देते हैं। थूक २ कर कफ़ के मड़ने के मड़ने भरते चले जाते हैं। शान्ता, सुशीला आदि बहुओं ने अपनी २ पारी बांध ली है। हर समय कोई न कोई पंडित जी के पास अवश्य मौजूद रहता है। अब पंडित जी धीरे २ गिरते जाते हैं। एक दिन सबेरे उनका जी घबड़ाने लगा पं० दयाशंकर आदि सब मौजूद हैं। वैद्य जी ने दवाई दे दी है परन्तु घबड़ाहट अधिक बढ़ती जाती है। परंतु एक रस पिलाने पर शान्ति हुई। तबियत अब हलकी हो चली खांसी भी कुछ कमती जान पड़ती है परन्तु नाड़ी की दशा विचारणीय हो गई है अर्थात् मंद पड़ती जाती है। पं० दयाशंकर तथा कृपाशंकर को पास बुला कर पंडित जी बोले बेटा! अब अपना घर संभालो अब हमारा समय

हो चुका। अब यही परमात्मा से अन्तिम विनय है कि तुम सब लोग प्रसन्न रहो यह कह कर गायत्री जाप करते करते उनका आत्मा इस अनित्य शरीर को त्याग कर सदा के लिये आकाश में तिरोहित हो गया।

एक ही सप्ताह के भीतर दोनों आदमी चल बसे। पंडित गौरीशंकर ने बड़े उत्साह से उनकी दग्ध क्रिया की लकड़ियों के स्थान में केवल चंदन ही जलाया गया था। माता और पिता के मानव लीला समाप्त करने के बाद पं० दयाशंकर और शान्ता घर में पुरखा बन गये।



नवां अध्याय

कृपा शङ्कर भी अब बंगाल में जाकर वकालत करने लगे ईश्वर की कृपा से उनकी वकालत भली चलने लगी। बंगाल ही में उन्होंने ज़मीदारी भी ख़रीद ली थी। शान्ता की रक्षा में रहने के कारण कृपाशंकर की धर्म्मपत्नी सुशीला भी गृह के सब कार्य्यों में दक्ष हो गई थी। जिसने शान्ता के स्वभाव को देखा था वह सुशीला की प्रकृति देख कर तुरंत कह देता था कि ये सब शान्ता के गुण हैं। दिवरानी और जेठानी में बहुत बनती थी। एक दूसरी में छोटी बहिन का सा बर्ताव था। सुशीला भी अपने पति के पास बंगाल ही में चली गई क्योंकि पं० कृपा-शंकर जी अब बंगाल ही में रहने लगे हैं।

पं० दयाशंकर जी का पुत्र कुछ बड़ा हो चला है। पढ़ने में बड़ा चतुर है घरही पर पढ़ता है क्योंकि एक मास्टर आकर उसे घर ही पर पढ़ा जाते हैं। शान्ता ने अपने यहां एक छोटी सी कन्या पाठशाला खोल दी हैं जिसमें कन्यायें पढ़ने आती हैं। दो अध्यापिकायें भी पढ़ाने के लिये नियत कर दी हैं। शान्ता स्वयं आकर सब दर्ज़ों में एक २ घंटे कन्याओं को व्यवहार के बारे में शिक्षा देती है कि कन्या का किस प्रकार

माता पिता के साथ में व्यवहार होना चाहिये किस प्रकार वह अपनी छोटी और बड़ी भोजाइयों के संग में वर्ते और किस तरह वह अपनी संग की सहेलियों में मिलजुल कर रहे। प्राचीन काल की महादेवियों के चरित्रों को कथा कह २ कर उनको उपदेश दिया करती थी। कन्याओं को अपनी पुत्रियों के समान चाहती। ग़रीब कन्याओं को भोजन वस्त्र आदि भी अपने पास से देती थी। विवाह योग्य कन्याओं के विवाह करवा देती। उत्तम २ पुस्तकें इनाम में देती थी। यद्यपि स्त्री शिक्षा का विशेष कर प्रचार नहीं था किन्तु शान्ता के उद्योग से कन्याओं में विद्या का अच्छा प्रचार हो गया था।

दैव संयोग से शान्ता की मनोकामना पूरी हुई उसकी अभिलाषा थी कि उसके एक कन्या होती क्योंकि उसकी बड़ी इच्छा थी कि यदि उसके कन्या हो तो उसको स्त्रियों के सिखाने योग्य सारे गुण सिखाकर सब प्रकार से उसे आदर्श कन्या बनावे, सो ईश्वर ने उसकी बात सुन ली और उसके कन्या रत्न उत्पन्न हुआ। गर्भ ही की अवस्था से वह उसके अच्छे संस्कार डालने लगी थी इस प्रकार धीरे २ कन्या पांच वर्ष की होगई इस अवस्था में उसे शुद्ध २ बोलना और अक्षरों का अभ्यास करना भली प्रकार बता दिया था। पढ़नेमें वह अच्छा अभ्यास करने लगी थी। उसको सैकड़ों नीति के श्लोक कंठ करा दिये थे। जिसे मधुर और सुरीले स्वर से

वह शिखिरिणी छंद पढ़ती थी उस समय सुनने वाला मुग्ध हो जाता था। उस कन्या का नाम शान्ता ने चन्द्रमुखी रक्खा था क्योंकि उसका मुख ऐसा उज्वल और सुन्दर जान पड़ता था मानों साक्षात भगवान कलाधर ही आ उपस्थित हुये हो। चन्द्रमुखी को सब प्रकार से गुणवती बनाने में कोई कसर बाकी नहीं रखी गई। उसे तुलसी दास जी की रामायण बड़ी पसंद थी। वह रोज रामायण का पाठ करती थी। अब उसकी अवस्था भी लगभग आठ वर्ष की होने आई शान्ता स्वयं उसे भूगोल नक्सा आदि दिखाकर और इतिहास की, कथायें सुनाकर पढ़ाती थी इससे कोई विषय रूखा नही जान पड़ता था। गणित भी वह नाना प्रकार की मिसालें देकर पढ़ाया करती थी इस प्रकार जिस विषय को वह समझ जाती थी उसका रूप बनाकर सामने खड़ा कर देती थी।

निदान सब विषयों में चन्द्रमुखी को शान्ता ने प्रवीण कर दिया था अवस्था भी अब उसकी १२ वर्ष की हो गई थी।

शान्ता के पुत्र सत्यव्रत अब पंजाब की बी० ए० की परीक्षा में शामिल हुए और ईश्वर की कृपा से वे पास भी होगये।

उनके पिता ने अब उनके व्याह करने की इच्छा की क्योंकि अब उनका २५-वां वर्ष समाप्त होरहा था। व्याह उनके कई लगे थे उनमें से भली प्रकार जांच कर एक अच्छे कुल की

कन्या के साथ जो रूप लावण्य तथा गुणों में अद्वितीय थी व्याह करना निश्चय लिया। वर बधू दोनों की सम्मति पूछ ली क्योंकि पहले ही दोनों का साक्षात् तथा पत्र व्यवहार हो चुका था। दयाशंकर जी को यह चाल पसंद न थी कि कन्या और पुत्र का व्याह नाऊ ब्राह्मण तथा माता पिता पर छोड़ा जाय। क्योंकि इन लोगों की राय से विवाह करना तो एक प्रकार से जुए पर दांव लगाना सा है इस प्रकार का व्याह बिल्कुल भाग्य के भरोसे छोड़ देना होता है इस से बहुधा अयोग्य वर के पल्ले एक गुणवती बधू बड़ जाती है अथवा फूहर कन्या के साथ गुणवान और बुद्धिमान पुरुष का पल्ला बंध जाया करता है जिस का फल यह होता है घर में देवासुर सग्राम हुआ करता है। हा! भारत वर्ष में कुछ ही घर ऐसे होंगे जिस में कलह नहीं मचता नहीं तो उत्तर में हिमालय से लेकर दक्षिण में कन्याकुमारी तक और पूरब में आसाम से लेकर पश्चिम में करांचा तक चारों ओर घरों में अशान्ति ही अशान्ति दिखाई देती है कदाचित विरले ही घर ऐसे होंगे जिन में लोग सुमति से व्यवहार करते हों अथवा जिन के मुख नित्य प्रातः काल कमलवत खिले दिखाई देते हों। यदि बाल विवाह बंद कर दिया जाय और कुमार कुमारियों के क्रमशः २५ और १६ वर्ष की अवस्था में विवाह किये जांय जब कि वे सब प्रकार अपनी हानि लाभ समझने लगें तो अवश्य भारत की उन्नति हो सकती है।

सत्यव्रत का विवाह बड़ी धूम धाम से हुआ परन्तु उसमें नाच आदि की कुप्रथायें नहीं हुई थीं यद्यपि इनकी विरादरी के लोगों ने तथा मित्रों ने बड़ी कोशिश की कि नांच वगैरः हो परन्तु दयाशंकर इस का कठिन विरोध करते रहे और रंडी तथा भाड़ों का नाच नहीं होने दिया।

सत्यव्रत की बहू का नाम सुनीति था जैसा इस का नाम था वैसा ही इस में गुण भी था। इस की माता पढ़ी लिखी थी इस लिये उसने इसे सुलक्षणी बनाया था। इसका व्यवहार अपनी सास शान्ता के संग बड़ा ही अच्छा था वह उनकी बड़ी सेवा करती थी। शान्ता ने बड़े भाग्य से ऐसी चतुर सच्चरित्रा बहू पाई थी।

सत्यव्रत ने एक गांव में बंगला बनवाया था उसी में रहा करते थे उस बंगले में एक पुस्तकालय खोल दिया था जिसमें कई समाचार पत्र आया करते थे। उस बङ्गले के चारों ओर एक बड़ा अच्छा बाग तय्यार करवाया था जिसमें एक सुन्दर सरोवर बड़ा सुहावना जान पड़ता था। नाना भांति के जल पक्षी उसमें हर समय कलरव किया करते थे। उस बाटिका में चारों ओर कुर्सी दार बेंचें पड़ी रहा करती थीं जिन पर ग्रामीण मनुष्य आआ कर प्रायः विश्राम करते थे।

जिन को पढ़ने का शौक था वे पुस्तकालय में आकर पुस्तकें और अख़बार आदि पढ़ते थे क्योंकि पं० सत्यव्रत जी की आज्ञा थी कि जो लोग पुस्तकें या अख़बार पढ़ना चाहें वे

निर्भय होकर आवें और पढ़ें। सत्यव्रत जी ने गांव में एक कृषक समाज भी स्थापित की थी। वह प्रत्येक इतवार को लगा करती थी जिस में पं० जी कृषी विद्या सम्बन्धी उपदेश दिया करते थे क्योंकि इनको कृषिविद्या में बड़ा शौक था। कृषि-विद्या की पुस्तकें इन्होंने देख डाली थीं प्रायः पुस्तकों में लिखी औषधियों और खाद आदि बनाने की कोशिश किया करते थे जिस से पौधों में कीड़ा न लगे और मज़बूत पौधे पैदा हों जिस से फल बड़े और अच्छे हों। अनाज भी थोड़ी ज़मीन में अधिक और अच्छा उत्पन्न होवे, बहुधा खेतों में पांस डालकर यह देखा करते थे कि इसका प्रभाव पौधों पर कैसा पड़ता है। इस प्रकार उन्हें बड़ा तजरुबा हो गया था। गांव वालों को सदा नयी बातें बताया करते थे उसी सभा में वे धर्म्म का भी उपदेश देते थे जिससे लोगों में सच्चाई और ईमानदारी फैले, चाल चलन लोगों का उत्तम बने। गांव के मनुष्यों में बड़ा उत्साह पैदा करते थे। कृषक लोग भी अपने २ तजरुबे खेतों के बारे में एक दूसरे को बतलाते थे। जिन लोगों को रुपये पैसे की आवश्यकता पड़ती थी उनको सहायता भी देते थे। कन्याओं तथा बालकों की शादियां बिना इनकी सलाह के नहीं होती थीं। गांव के बालकों के लिये एक पाठशाला खोल दी थी जिसमें गरीब विद्यार्थियों को पुस्तकें भी दी जाती थीं। लड़के जो पढ़ कर निकलते थे उनको अपने ही यहां अच्छी नौकरी देते थे। जो लड़के विशेष पढ़ना चाहते थे

उनको वजीफ़ा (छात्रवृत्ति) देकर शहर के स्कूलों में भेज देतेथे।

कन्याओं के लिये एक बड़ी उत्तम कन्या-पाठशाला खोल दी थी जिस में प्रायः गांव के सब मनुष्यों की कन्यायें पढ़ती थीं। शान्ता यहां गांव पर आती थी तो दोनों पाठशालाओं का निरीक्षण करती थी। तब कन्याओं को पारितोषिक (इनाम) बांटा जाता था। प्रायः खेल कूद होता था उसमें भी सत्यव्रत इनाम बांटते थे। वे कबड्डी के खेल को बहुत पसंद करते थे। उन्होंने कबड्डी के लिये एक लम्बी चौड़ी ज़मीन छोड़ रक्खी थी जिसमें वे स्वयं भी गांव वालों के संग खेल में शामिल होते थे।

इस प्रकार वे अपने छोटे राज्य का अच्छा प्रबन्ध करते थे। प्रति सप्ताह इतवार ही के दिन उस गांव में एक बड़ा बाज़ार लगता था जिसमें आस पास के आठ दस गांव की उपज तथा सौदा बिकने आती थी। इसके लिये उन्होंने एक बड़ी लम्बी चौड़ी ज़मीन छोड़ दी थी। जहां बज़ार लगता था वहां सौदा बिकने के लिये दुकाने बनवा दी थीं तरकारी वाले, फल वाले, अनाज वाले, कपड़ा वाले, बिसाती, जूता बेचने वाले, गाय, बैल भैंस और ऊंट वाले, हलवाई, बनियें आदि सब अपनी २ पट्टी में बैठते थे उतने स्थान में दो कुयें बनवा दिये थे जिनमें जानवरों के लिये भी पानी पीने का अच्छा सुप्रबन्ध था। दोनों कुओं पर मनुष्यों को पानी पिलाने के लिये आदमी नियत कर दिये थे। बाज़ार से जो आमदनी होती थी उसी से गांव में पक्की चौड़ी

सड़कें और रोशनी आदि का प्रबन्ध कर दिया था। एक उत्तम औषधालय भी खोल दिया था जिसमें दूर २ से लोग दवा करवाने आते थे। प्रजा बड़ी ही सुखी थी, सदा लोग पंडित जी की बढ़ती मनाया करते थे। पं० सत्यव्रत जी वृद्धों का बड़ा सन्मान करते थे।

दूर २ के लोग आकर प्रायः इनको सरपंच बनाते थे। गांव के मुक़द्दमों का फैसला ये स्वयं करते थे। सारे गांव में सदा चहल पहल बनी रहती थी।

पं० सत्यव्रत जी के गांव के लोग सभी हृष्ट पुष्ट दिखाई देते थे। क्योंकि वे प्रायः पंडित जी की बतलाई हुई दिनचर्य्या रात्रिचर्य्या और ऋतुचर्य्या के अनुसार चलते थे। वहां के लोग बड़े उद्यमी और पुरुषार्थी थे। कन्यायें तथा स्त्रियां भी साफ़ और सुथरी पोषाक पहिने बहुत सुन्दर लगतीं थी। पण्डित जी के डर के मारे कोई मैला कपड़ा नहीं पहिनता था। कपड़ा साफ़ रहना चाहिये चाहे वह मामूली और पुराना ही क्यों न हो। पंडित जी नीच ऊंच का प्रायः ख्याल नहीं करते थे बहुधा नीच से नीच और ऊंच से ऊंच घर में जाकर निरीक्षण करते थे। सब लोग अपने २ घर की सफ़ाई रखते थे। न जाने किस दिन उनके घर में पण्डित जी आ जांय। प्रायः लोग इनके गांव में आकर अधिक बसते चले जाते थे क्योंकि वे ग़रीब अमीर सब के दुःख में काम आते थे।

समयानुसार इनके एक पुत्र हुआ जिसके उत्पन्न हो

हुआ बालक बड़े आश्चर्य से सब के मुंह की ओर देखता है, कहीं तो वह हाथों से माता का अंचल पकड़ कर खींचता और खिल खिलाता है, कहीं इधर देखता है कहीं उधर परन्तु कोई न उसके भावों को समझता है और न खिलाता है। चारों ओर शान्ति छा रही है। आज पं० दयाशंकर जी संसार में मोह के जाल को काट कर योग के द्वारा ब्रह्मानन्द को आस्वदन करने के लिये हिमालय की ओर जाना चाहते हैं।

वे आज कई दिन से एक२ को अलग२ समझाते थे संसार की अनित्यता और मोह जाल के विषय में सैकड़ों महात्माओं की मिसालें देकर बतलाते थे कि मोह संसार में दुःख का कारण होता है। बुद्धिमान को कभी मोह में फंसकर अपना लक्ष्य और उद्देश्य नहीं भूलना चाहिये परन्तु इस समय उनका समझाना वैसाही अनर्थक होता था जैसे कमल पत्र पर कितना ही प्रयत्न किया जाय परन्तु जल बिन्दु नहीं ठहरता। सब लोग मोह और ममताके आवेग में हो रहे थे। कोई किसी की नहीं सुनता था। सब लोग यही कहते थे कि आप घरही रहिये यहां आपको बाग में कुटी बनवादी जायगी किसी प्रकार का आपको कष्ट नहीं होगा, आपके योग में कोई बाधक न होगा। तब वे यही उत्तर देते थे कि यदि ऐसा ही होता तो परिव्राजक बन राजा लोग क्यों राज्य को छोड़ बन को चल दिया करते थे। क्या उनके राज्य में कुटी बनवाने का स्थान नहीं था? आपलोग कार्यान्ध हो रहे हो। आप लोगों

को आज अत्यंत आनन्द मनाना था क्योंकि आज हम उस पथ पर आने की तय्यारी कर रहे हैं जिस पर हमारे पूर्वज आया करते थे जिसका उपदेश परमात्मा ने वेदों में किया है।

अब तुम लोग आनन्द में ऐश्वर्य्य भोगो और परमात्मा का गुणानुवाद गाओ। समय आवे तो तुम लोग भी इसी पथ पर चलना। यह कहकर काषाम्बर पहिने हुये एक हाथ में कमण्डल उठा लिया और दूसरे में दंड लेकर शान्ता को अपने पुत्र सत्यव्रत को हवाले करके यह कहने लगे पुत्र! जब तक यह कन्या रही तब तक इसके माता पिता ने इसकी रक्षा की तत्पश्चात् बिवाह होने पर मैंने इसकी सुश्रूषा की अब वृद्धावस्था में तुम्हारा कर्तव्य है कि तुम सब प्रकार से इसकी सेवा करना यह सब विभूति इसी लक्ष्मी के प्रसाद से प्राप्त हुई है। यह कह कर शान्ता से कहने लगे तुम अब सांसारिक बन्धनों को त्याग कर केवल उस जगत्पिता परमात्मा का ध्यान करो अब जीवन संध्या ब्रह्मानन्द में समाप्त करो यही हमारा अंतिम उपदेश है यह सुन कर शान्ता हाथ जोड़ कर कहने लगी प्राणनाथ! एक बार मेरे अन्तिम समय पर आकर पुनः दर्शन दीजियेगा। यही मेरी अन्तिम विनय है।

यह सुनकर पं० दयाशंकर जो अब ब्रह्मानन्द संन्यासी हैं बोले अच्छा एक बार हम फिर तुम्हारे अन्त समय आकर दर्शन करेंगे।

फिर कृपाशंकर और सत्यव्रत आदि को समझाने लगे कि देखो सारा बोझ तुम्हारे ऊपर है खूब समझ बूझ कर काम किया करना अपने जीवनों को उत्तम और आनन्द मय बनाना। फिर सुशीला विद्यावती और चन्द्रमुखी आदि को समझाने लगे कि देखो अपने व्यवहार को ऐसा उत्तम बनाना जिससे कोई मनुष्य तुमको बुरा न कहे।

निदान बाहर बैठे हुये सम्बन्धियों से भली प्रकार मिलकर पूर्व्व दिशा की ओर चल दिये एक बार प्रेम भरी आंखों से घूम कर अपने घर की ओर दृष्टि डाली फिर परमात्मा के गुणों का विचार करते हुये सीधे चले गये। उस दिन से उनका फिर पता न लगा कि किधर को चले गये। कोई तो कहता था कि गिरनार पर्व्वत की ओर गये हैं, कोई हरद्वार की ओर जाता हुआ बतलाते थे। कई दिन तक घर में पं० दयाशंकर जी के उपकारों की चर्चा रही कि किस प्रकार वे एक चपरासी की दशा से इतने बड़े वकील होकर फिर धर्म की ओर इतने झुके कि यह जन्म और पर जन्म दोनों ही बना लिये। शान्ता भी अब प्रातःकाल से लेकर अपने यज्ञ करने वाले कमरे में हर समय उपनिषदों का पाठ किया करती थी। उसने गृहस्थी के सारे काम छोड़ दिये थे। केवल ईश्वराराधन में तत्पर रहती थी। यह योग का अभ्यास करती थी एक सन्यासी एक बार आगये थे उन्होंने इसे योग की सारी क्रियायें बता दी थीं। वे इनके यहां लगभग साल भर रहे और इनको पूरी तरह योग सिखा दिया।

शान्ता ने योग में अच्छा अभ्यास कर लिया था। ये बहुत ही हलका भोजन करती थीं। अब अपने कमरे में किसी को नहीं आने देती थीं क्योंकि दूसरों के आने से इन के योग में बड़ा विघ्न पड़ता था। इस प्रकार परमात्मा के चिन्तन में रात दिन बिताने लगी। कभी २ वे घर के सब स्त्री पुरुषों को बुला कर उपदेश भी कर देती थीं॥

एक दिन उनका कुछ शरीर पीड़ित हुआ। उन्होंने सबघर के लोगों को बुलाया और कहने लगीं आज हम इस जर्जर शरीर को छोड़ना चाहती हैं तुम लोग अपने २ नित्य के कार्य्य से सुचित हो जाओ क्योंकि जिससे तुम्हारे कार्य्य में विघ्न न पड़े। यह सुन सब लोग आखों में आंसू भर के रोने लगे। तब शान्ता समझाने लगी तुम लोग रोते क्यों हो मैंने संसार के सारे भोग भोग लिये अब शरीर भी पुराना हो गया यह अब मुझे पीड़ा देने लगा है इसलिये आज इसका परिवर्तन करना चाहती हूं क्या तुम लोग नहीं चाहते कि मैं पुराने कपड़े छोड़ कर नये कपड़े पहिनूं। यह कह कर चन्द्रमुखी की ओर इशारा करके कहा कि आज तुम लोग मेरे सामने भोजन करना। मैं तुम सब को संग भोजन करते हुये देखना चाहती हूं॥

फिर सत्यव्रत से कहने लगी कन्या-पाठशाला तथा स्कूल के सारे बालकों और बालिकाओं को आज मिठाई और उत्तम उत्तम पुस्तकें बांट दो। जो बालक अथवा बालिकायें गरीब

हों उनको कपड़े बनवा दो। जिन बालकों या कन्याओं के घर में खाने का सुभीता न हो उनको अपने पिता और मेरे नामसे वज़ीफे (छात्रवृत्ति) दे दो। यही मेरी अन्तिम अभिलाषा है। यह सुन कर पं० सत्यव्रत जी ने कारिन्दा को बुला कर सब प्रबन्ध करवा दिया॥

थोड़ी देर में ड्योढ़ीदार ने ख़बर दी कि महाराज एक सन्यासी आये हैं और वे आप को बुला रहे हैं पं० सत्यव्रत जी बाहर गये परन्तु उन्होंने उनको न पहिचान पाया। तब सन्यासी जी बोले ! बच्चा ! जाओ अपनी माता से कह दो कि तुम को एक सन्यासी देखना चाहते हैं यह सुनते ही सत्यव्रत जी ने तुरन्त अपने पिता को पहिचान लिया। पहले न पहिचानने का कारण यह था कि उनको गये लगभग १२ वर्ष हो चुके थे। इतने समय में नाना स्थानों में विचरने से उनके रूप में बहुत कुछ परिवर्तन हो गया था। पहिचानते ही पं० सत्यव्रत जी उनके चरणों पर गिर पड़े और गद्‌गद बचन से बोले महाराज आप भीतर चलिये॥

सन्यासी जी ज्यों ही भीतर गये शान्ता उठ कर बैठ गई और हाथ जोड़ कर बोली स्वामी जी ! आप ने भले समय दर्शन दिये आज मैं इस जर्जरित शरीर को छोड़ना चाहती हूं। मैं आसरा ही देख रही थी कि आप अभी तक नहीं आये क्योंकि आपने वचन दिया था कि, "मैं तुम्हारे अन्त समय

पर आकर तुमको दर्शन दे जाऊंगा"। सो आज मैं कृत-कृत्य हो गई।

यह सुनतेही सब लोग उनको पहिचान कर उनके चरणों पर गिर पड़े। उन्होंने सब को उठा कर आशीर्वाद दिया। सत्यव्रत ने एक सुन्दर आसन बिछा दिया जिस पर सन्यासी जी बैठ गए। चन्द्रमुखी दौड़ कर हाथ पैर धोने के लिये जल ले आई और उनके पैर धोने के लिये हाथ बढ़ाया परन्तु उससे उन्होंने जल ले लिया और अपने आप हाथ पैर धो डाले। शान्ता ने इशारे के द्वारा भोजन मगाया औ सन्यासी जी ने आनन्द पूर्वक पाया तत्पश्चात् शान्ता की आज्ञानुसार घर के सब लोगों ने भोजन किया।

भोजन के उपरान्त सन्यासी जी ने सब लोगों को बैठने का इशारा किया जब वे लोग बैठ गये। तब एक उत्तम भक्ति-मय उपदेश दिया जिसको सुनकर सब लोगों के नेत्रों से प्रेमाश्रु बह चले। उपदेश के अनन्तर सन्यासी जी शान्ता से अन्तिम बिदा मांगने लगे। उसने हाथ जोड़कर कहा स्वामी जी! जो कुछ मुझ दासी से अपराध हुआ हो सो क्षमा करना। तब वे बोले शान्ते! अब तुम इनबातों का विचार न करो तुम्हारा समय अमूल्य है इस समय तुम केवल उस अविनाशी परमात्मा के चरणों में चित्त लगाओ जो एक मात्र सब का आश्रय है। यों कहकर जानाही चाहते थे कि सत्यव्रत और चन्द्रमुखी आदि सब बालक बालिकाएं उनके

चरणों पर गिर पड़े। उन सब को आशीर्वाद देते हुये बाहर आये और सत्यव्रत को, जो थोड़ी दूर तक उनके संग गया था, उसके कर्तव्य बताते गये। तत्पश्चात् उसको लौटाल कर उत्तर की ओर चल दिये।

यहां शान्ता ने सत्यव्रत और कृपाशंकर को बुलाकर बहुत कुछ शिक्षा दी तत्पश्चात सब बहुओं तथा कन्याओं को उपदेश देकर उनसे कहा कि चारों ओर के द्वार खोल दो और सब लोग पीछे हो जाओ और सामने एक चौकी पर आसन बिछा दो।

जब चौकी और आसन बिछ गया तब वह धीरे २ सहारे से उठ वहां बैठ गई और वेद मंत्र पाठ करने लगीं। सब लोग बड़े आश्चर्य्य से इस कौतुक को देख ही रहे थे कि मंत्र पढ़ना बन्द होगया। थोड़ी देर में ओ३म् ओ३म् ओ३म् कह कर शान्ता ने प्राण विसर्जन कर दिये।

3183

॥ इति ॥

National Library,
Calcutta-27

HIN00002252HIN